(2)

विजय मुक्तावली

छत्रकविकृत

बिजैमुक्तावली ; चूड़ामणि
लिपिक ; बुद्धवार, १३ कार्तिक,
शुक्ल पक्ष, १८८२ वि० लि०
१८७ पत्रक ॥ ल० प० १५ पं० प्र० पृ०

ह० ल०



॥श्रीरांमजी॥

स्वस्तीश्रीगणगाधिपतेनमः = प्रस्तोक्तादरपनीपैं
तीजिनस्वागोगेवीसरहूं = पाककोपकावाकीमतरसरीरम
= भगसतंकुंमत्नकरणंचेसनंचेविऽवानीलम = पाहर
पीपाकार

विजयमुक्तावली
छत्र कवि कृत

॥श्रीगणेशायनमः॥ ॥अथग्वालिनीगु
कावलीलिख्यते॥ दोहा॥ ब्रजरछणभ
छणअनलरछणगोधनग्वाल॥ मुरब
रकैरवरकरजपरगोबरधनगुपाल॥१॥
हरिदीपगमनसदनधरिकियरछपाटउ
घारि॥२॥ दंडकछंद॥ भूमिभूमिआये।
कोपिबांसवपठाएघनधायेदिसिदिसि।
निसिबासरतरजपर॥ मेघकीमरोरमहा
पौंनकीझकोरजोरनिरदनिपटघोरघो
षसोगरजपर॥ राषेसुरपालकेकसल।
क्रोधतैंगुपालछत्रकेदयालगोपीग्वाल
कीलरजपर॥ हरबरधाईगिरिमूलतैंउठा
ठायबरछाइब्रजराष्योराषिकरकीकरज
पर॥३॥ सवैया॥ आननराकहैमन

ब्रिजे० कौं ॥ चतुराननच्यारिहौंबेदबतावै ॥ जे
॥२॥ रिषिअबप्रसिद्धहैसिद्धसदामनबांछित
सिद्धिसुपावै ॥ नारदसारदजोवत्तहैसन
कादिसुकादिसबैगुनगावैं ॥ बंदतएसब
सेससुरेसदनेसधनेसगनेसहिध्यावै ॥ ४ ॥
॥ दोहा ॥ जगजननीजगबंदनीजगपा।
वनिसुषकारि ॥ गिराथिरामतिदीजिये
बरनौंग्रंथविवीचारि ॥ ५ ॥ मथुरामंडल
मेबसैं ॥ देसभदावरग्राम ॥ उपलतहां
प्रसिद्धिमहि ॥ छेत्रबटेस्वरनांम ॥ ६ ॥ ता
मगननकौंपगपरन ॥ अघकौलेसरहेन
विकटजटेसंकटकटनउरतसदाशिव।
मैंन ॥ ७ ॥ सूछमथूलसमूलअतिजेरेजा
तदुषसूल ॥ फूलहोतउरमैंतहीनिरषि ॥१

कालिंद्रीकूल ॥ ८ ॥ सवैया ॥ चंगरपंगम
दंगकहूसुके ॥ हूंध्वनिसंघनकीसुनियें क
हूंरिषश्रेष्ठप्रसिद्धकहूंकधूंसोवतसाधुम।
हासुनियें ॥ बेदनबेदितबेदनसोंकहूंनृत
तगावतहैंगुनियें ॥ सूलबटेस्वरकेछिनुबं।
दतदेतहैमुक्तिसदाउुनियें ॥ ९ ॥ दोहा ॥ सु
जससुबासससुनिकटहीपुरअटेरिइहनाम
जग्यजजनहोमादिव्रत ॥ रचितधामप्रतिधां
म ॥ १० ॥ नगरआहिअमरावती ॥ बासीबि
बुधिसमांन ॥ आषंडलसौलसतुतहांभूपा
तिस्पंघकल्यान ॥ ११ ॥ कीरतिदांनकृपान
कीकौरवमैंविस्तारि ॥ जयजुतसुरजसप्र
तापसौंछाईरहीदिसिच्यारि ॥ १२ ॥ दंडक ॥
बेदरबदकसांनबंगासतिलंगछाडि ॥ छाईर

ही॰ दरमैं बारिधिके घाटलौं ॥ मांडूकुरकां
बरू फिरंगरो हरो हिंतासछाइहै कुमाउ बि
धिबंधवकुहाटलौं ॥ गोडवानैं मारवाड मा।
हवठठीसा छाई छाई हैं सु देसदेस ह्व बिरा
टलौं ॥ छाई धराके हरिकल्पान स्पंघनकी
रतिसैं कावि लकलिंगकी समीरकरनाट
लौं ॥ १३ ॥ दोहा ॥ श्रीवास्तकाईस्थ हैं छ
त्रसपंघ बूहि नांम ॥ बसत भदावर देसमैं ।
ग्रह अटेरि सुषधांम ॥ १४ ॥ कौरव पांडवा।
की कथा तिन सब सुन्यो पुरान ॥ तातै भा
षा ग्रंथकौ कीनौं छत्र बषान ॥ १५ ॥ संब
त सतरहसै रबरष सबाढि पंचास ॥ सु
क्लपच्छ एकादशी र-ओग्रे थन ममांस
१६ ॥ नाम विजयमुक्तावली हितु करि सु

नौंजुकोई ॥ अष्टादसौंपुराणकौताहिम
हाफलहोय ॥ १७ ॥ लसतुहस्तनापुरअव
नि अमरावतीसमान ॥ सुरपतिसोसंतन
तहांवहुचक्रमेंआंन ॥ १८ ॥ साईररिषके
श्रापतेंसांतनभयौंनरेस ॥ भुजबरषारव
ग रबबैंबरजीत्तिलयोवहुदेस ॥ १९ ॥ ताघरि
तरुनीसुरसुरीपतिव्रतासुषकारि ॥ प्रजा
सकलआनंदमयनिसिबासरनरनारि ॥ २० ॥
बचनसुरसहोलयोसांतनपैंसुषपाय ॥ सु
पुत्रहोतमोप्रमेंदीजेभूपबहाय ॥ २१ ॥ जब
इहविधिकरिहोनहीं ॥ तबैतनौंनुवगेह ॥ जों
लोंबचननहृढरहो ॥ तौंलौंतजोंननेह ॥ २२ ॥
सोतुपुत्रनृपकेभए दीनेगंगबहाय ॥ अष्टे
सुतगंगेवतवभूतलजनमेंआय ॥ २३ ॥ दो

बिक्रे०मु०
॥३॥

[illegible]॥ भूपतियैंमनमांहिबीचारी॥ कौं
नकहैनृपता अधिकारी॥ पुत्रभयेसबगं
गबहाए॥ मंत्रिसबैनृपसोधिबुलाये॥ बा
तसबैभूवभूपबषानी॥ मंत्रकहाकरियेसु
बदांनी॥ औबरऔयहगंगनैरै हैं॥ पुत्रहि
राषतपुरसमैहैं॥२४॥ मंत्रीउवाच॥ राषि
येपुत्ररहैनृपताई॥ गंगरहैयकौंनृपजाई
मंत्रसुन्योइहभूपतिभायो॥ सोचलिकैंत्रि
यपैतबआयो॥२५॥ राजोवाच॥ देसुनगं
ग अबईकमाही॥ मांगतहौहितसैंइहतो
ही॥ लैत्रियपुत्रतबैकरदीनौं॥ चंदसौआ
ननरूपनबीनौं॥२६॥ दोहा॥ पतिसौंकही
पुरबकथारहीसमाइअबाह॥ महादुषउ
रमैंभयौं॥ चक्रतचित्तनरनाह॥२७॥ [illegible]

गयोविपनसरितानिकट ॥ लैप्रियलोगसमाज ३१

स्वरूपनी छंद ॥ भयोनरेसकोंमहा सु
दुष्षकौंक हौंकहा ॥ महीपदेषियेइसो
निसाबिनाससीजिसौ ॥ २८ ॥ मंत्री वाच
नभूपसोककीजीये ॥ सुपुत्रदेषिजीजि
ये ॥ अनेकभांतिपारिये ॥ सुईसुतासुधा
रिये ॥ २९ ॥ दोहा ॥ बीतेबासरजबघने
तबगंगेवकुमार ॥ अस्त्रसस्त्रविद्याप
ढी ॥ सीषमंत्रअपार ॥ ३० ॥ षेवटतनया
इकमुष ॥ जोजनगंधानांम ॥ निरषिभूप
मोहितभयो विज्जुलतासीबाम ॥ ३२ ॥
अतिआसक्तभयोनृपति ॥ षेवटलियोबु
लाय ॥ देहुमोहिआपनीसुता ॥ मनबच
कर्मसुषपाय ॥ ३३ ॥ केवट उवाच ॥ तुमप्र
थ्वीपतिभूपहो ॥ मैंनीचजातिमछा हा ॥

८ नृपतिसांतनुएकदिन चढ़ो षेलैकेकाज
गयोविपनसरितानिकट लै प्रियलोगसमाज ३१

विज्ञे०
॥४॥

आपुही कहौ बिचारिकैं ॥ कहि बिधिय
बिवाह ॥ ३४ ॥ तो बिवाह तुमकौं करौं जोई
हम मागै देह ॥ नृपतायां कौ सुतलहै
करो आपकरि नेह ॥ ३५ ॥ इह सुनि राजा
मन बल पानौं ॥ यह तन कौं तव कीयौ प
यानौं ॥ अब सोई हु कहौं बिचारी ॥ जो
जन गंधा कौ बिस्तार ॥ पारासर मुनि बि
पन पग धरयौ ॥ तरुनी बचन प्रगटयौ
कह्यौ ॥ कितिं बरष बनजे है बीति ॥ क
हि संमान होइ कहरी ति ॥ ३६ ॥ पारास
र उवाच ॥ रति वंती के अब ही नाही ॥ स
बुदी के मो पास पठाई ॥ ग्यान उमंग की
रूप ढरकाई ॥ सुक करै लै तो पास पठाई
३७ ॥ तुजल मैं करि लीज्यौं पान ॥ इहि संजो

ग होई आधान ॥ इहि कहि के मुनि बिपन-
में धाये ॥ तिहि हित महा विपन में आये ॥ ४० ॥
रितुवंती मंजन कीये सु कियो निजत मु पास
यो हो चो पूरा सर निकट ॥ तब ही ठार अवा
स ॥ ४१ ॥ देषत ध्यान रिषीस्वर ध्यायो ॥ मन
मथित वे मदु नु उलधार्यो ॥ धर्यो पुत्र सुक
र कर षयो ॥ रिषिनी हित सो लीनो गयो ॥ आ
यो सरिता नीकट सु कीर ॥ गिर्यो मदन जल
अचयो नीर ॥ एक मीन सो कीनों पांन ता
को प्रगट भयों आधांन ॥ ४३ ॥ से षर ह्यो सो
तब ही लयो ॥ रीषनी पास कीर ले गयो ॥ बी
ते पुरन मास ९ तब ॥ गर्भ मुच्यो तिहि काल
भयो पुत्र क बिष्ठत्र कहि ॥ उर आनंद ति
बाल ॥ ४४ ॥ चोपई ॥ तिहि मीन ही पूर्न गर्भ

विजै० भयो ॥ चलिकैं बूटि ता सुसीकार गयो ॥ ल
॥पू॥ हि मीन संग रेह गई जब ई ॥ नीकसी तनया
तिहि गर्भ जही ॥ चपला जनु सोहत देह ध
रे ॥ रति मान कौं अद्भुत रूप करे ॥ दिन ताक
कुके तवितीत भये ॥ तनया बकु रूप अतंक
भये ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ नाम सुता मछोदरी क
रत आप कुल धरम ॥ पथिक उतारत आपने
रचित मछाह केक मे ॥ ४६ ॥ कीनौं वादश।
आ वर्ष तव ॥ पारासर मुनिराय ॥ निरषि रूप म
छोदरी ॥ गीस्यो भूमि अकुलाय ॥ ४७ ॥ निर
षि निरषि आसक्त के ॥ कही बात मुनिराय ॥
मोहि तो हि मृगलोचनी ॥ सरीत होय सुषपा
य ॥ ४८ ॥ मछोदरी उवाच ॥ मुंदरी ॥ बात ।
अनूमित कौं कहि आवहि ॥ कौं कहि या

पुकलंकलगावहि ॥ रिषोवाच ॥ दे
रूनिकोतिआपुअबैतिय ॥ नाहिरह्यो
कछूथीरजमोहिय ॥ त्रासभयोसुनित
उरमैंअब ॥ जानिनजायकछूबिधिकी
गति ॥ आतुरकैरीषराजदईरति ॥ ताहि
प्रसन्नभयोजमहामति ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ त
बमनकीदुर्गंधतानिमिजैहैसुनिबाल
होहिसुगंधसरीरमे ॥ जोजनलैंसबकाल
५३ ॥ लषैनकोउगर्भजुव ॥ जाहुअनादि
तधाम ॥ कैधहैपुत्रप्रसिद्धिमहि ॥ तीनभु
वनजानांम ॥ ५४ ॥ चौपई ॥ इहकहिकैं
रिषिग्रहकौंगयो ॥ प्रगटगर्भतरुनीकोभ
यो ॥ लषैंनकोऊताहिअवास ॥ तीनौंज

वि०मु०
॥६॥

ममभयोरिषिआस॥५५॥बमउछिच
ल्यो।तहांरिषिराय॥अतिहितबचन।
कह्योसुनिमाय॥जबसुधिकरैतहांच
लिआउ॥तेरोकठिनकलेसनसाऊं॥ल
छ्यानकाऊमोआहार॥जिहिबिधिली।
नो।रीषिअवतार॥जोजनमग्रंथाइहि
बिधिभई॥परमरूपबिधिनानर्मई॥५७॥
॥दोहा॥ताकैंसंतनुदेषिकै॥आयेयह
नरनाथ॥कुमिलानैंमनमनमहाधीर
जधसैनहाथ॥५८॥राजोवाच॥दोहा॥
जबतैंसुतगंगागई॥बीतेबरषैंसात॥छी
नछीनबीततबर्षसम॥जुगभरिजाम।
बिहात॥५९॥चौपई॥त्रियबिनुधर्मक
र्मनहीहोई॥जोतनुलहैबडाईकोई॥ध

नसंपतिलागेनहिनीकी॥ ताबिनसक
लवस्तुहैफीकी॥ ६९॥ दोहा॥ गोजनगं
धाकीनृपतिसबबिधिकहीबषानि॥ दे
हिनाहीअपनीसुता॥ करैंनषेवटकांनि
६१॥ चलिगंगेवगयेतहां॥ तापेवटके।
पास॥ देईसुतानृपालकौं॥ कीनेबचन
प्रकास॥ ६२॥ षेवटवाच॥ होईराजयाकी
पुत्रकों॥ तोऊकरोबीवाह॥ मनसाबा
चाकरमना॥ बचनदेहनरनाह॥ ६३॥
चौपई॥ तबगंगेवबचनयोकहे॥ तुव
तनयासुतनृपतालहे॥ कैंविबाहनहि
त्रियसंग्रहौं॥ सत्यबचनमेतोसोंक
हूं॥ मेटैबचनसोनर्कहिजाय॥ करों
सेवकुंजानोंमाइ॥ साधुजानितापितइ

वि० मु०
॥ ७ ॥

हमांनी ॥ आयेमाहननृपसुषदांनी
करिबिदाहलेत्रियहिसिधाये ॥ तबहि
भीषमनिकटबुलाये ॥ तेअतिगतिसु
षदीनोमोहि ॥ मैप्रसन्नबरदीनौतोहि
॥ २४ ॥ सवैया ॥ मीचबुलायेंविनानहिआ
यहे ॥ चाहैविनामरिहैनहीमारयो ॥ तेरे
ननफलजागुगबांन टरेगोनहीरनका
नामोनुहोसव ओरे नेले उर मनके सव [illegible] चलिगासै
ऊकोटारयो ॥ धन्यघरीजहिजनमली
योभव ॥ धन्यतुपुत्रपितापनपारयो ॥ २५ ॥
॥ इतिश्रीमहाभारथेपुराणेविजयमु
क्तावलीकविछत्रविरचीतायांनाम
प्रथमोध्याय: ॥ १ ॥ छंदतोटक ॥ नृप ॥
सांतनकेसुतदोयभये ॥ सुभनावसुचि
त्रविचित्रठये ॥ गनगपानकेपानसवै

सिधिरे॥ दिनसीवत्तकर्मसुकर्मनए
ए॥ वज्रभूपतिकेउरसुष्यभयो॥ छिति
तजसुभूपनिभ्रपलयो॥ इहिभांतिकि
तेकदिनबीतगए॥ सबबासरआनंद
मैबीतए॥ २॥ दोहा॥ आवमृगतिन
एनाहतब॥ बासलयोहरिलोक पु
त्रकलत्रकुटंबकौं॥ उरबाढ्यौवज्रसो
क॥ ३॥ सुरसरिसुतसमुझाईसब॥ कीया
कर्मतहकीन॥ जेठसुततबचीत्रकौ
राजभारसौंदीन॥ ४॥ बकुरिषिराजन
बोलीकैं॥ कस्योराजअभीषेक॥ सब
परिवारप्रजानकौं॥ आनंदभयोअ
नेक॥ ५॥ सोरठा॥ काशिराइकैग्रेह
कन्यासुतादेइंदुमष॥ इकअंबाअंबेह

वि० मु० ॥ ८ ॥

मृगनैनी चंपकवरन ॥ ६ ॥ अंबादी
नी बिचित्रकौं ॥ करि बिवाह सुषचा
रु ॥ अंबेबुका म विचित्र ग्रह ॥ भई स
कल सुषसारु ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ बाढ्यो
गर्ब अपार ॥ अपनी नृपसंपति नीर
षि ॥ सकल सहन भंडार ॥ बरन कहा
लोक बिकहैं ॥ ८ ॥ चौपई ॥ दिन दि
न राजनीति बिसराई ॥ रचे कुकर्म नि
के सब भाई ॥ कुलके धर्म सकल निसि
गयो ॥ बहु संदेह मातु उर भयो ॥ ९ ॥ जा
न्यो जबै राजकौ नास ॥ जोजनगंधा सु
मर्यो व्यास ॥ आय गयो तबही रीषारा
ई ॥ धाई जननी के परसे पाई ॥ १० ॥ जो
जनगंधा उवाच ॥ जद्यपि मो सुत पायो

राज॥ करैंनराजनीतिकौकाज॥ ऐसो
कछूकीजेउपदेस॥ राज।नीतिमतिच
सेनरेस ११॥ व्यासोवाच॥ दोहा॥ सुनि
मातातोसोकहौराजनीतिसमझाइ॥ सो
सीषदीजेसुतनिकौंसुजसरहैघरछाइ
१२॥ दिनप्रतिव्यासकहैकथाराजनीति
सवधर्म॥ चित्रनृपतिइहबातसुनिमन
मैवस्योकुकर्म॥ १३॥ कोइकद्विजमाता
निकट॥ वैठतनिसिदिनआय॥ ताकौ
हतनविचारिकैं॥ गुप्तभयोतहांजाय॥ १४॥
॥गीतिका॥ आयकेरिषिव्याससमातानि
कटबैठिकथाकहै॥ सुनतपारासरसु
तासुतवचनदुषदीरघकहै॥ माईकहि
कहिराजनीतिहि॥ सकलविधिसोउच्च

च्चरे ॥ पुत्रकरिहूफ़ैजननी ॥ इहिभांति
श्रवणकथाकरै ॥ २५ ॥ अर्धनिसीबीती
तहांरिषिमासपगग्रहकोधरै ॥ नीरषि
इहिविधिचित्रनृपतववचनतिनसौंउ
च्चरै ॥ होमहारिषराजतुमसबभांतिबु
द्धिप्रबीनहौं ॥ लोककीपरलोककीस
बबेदबिधसौंलीनहौं ॥ २६ ॥ भयोमन
सापापयाकहूसोकहौकौंउच्चरैं ॥ द
ऊवुद्धिनिधानसिछ्यूकाजकेसेकेसरैं
मासमाधश्रगाधमतितववचनतिन
सोभाषियौं ॥ कहौंतोसौंविधिसबमन
माहिहितुकरिराषियो ॥ २७ ॥ दोहा ॥
चलदलद्रुमकोछांडिकें तामैग्रस्थिय
नारि ॥ श्रमछूटिपानतितजैसबश्रंग

डारेजारि ॥ १८ ॥ सीषलईजोमासषेंसो
इकीयोउपाव ॥ धूमधूंढतितहिभांति
ही ॥ गयौदेवपुरराऊ ॥ १९ ॥ तोमर ॥
इहिभांतिनरेसविलोकितबे ॥ बहुदी
नभयेनरनारिसबे ॥ तबमातुमहाउर
दुषभयो ॥ उडिमांनकूभीषमभ्रांनगयो ॥
२० ॥ तबभूपतिभूमविचित्रकस्यो ॥ बि
धिसोसिरउपरछत्रधस्यो ॥ बरनोनृपके
सबकर्मकहा ॥ सुभ्रषेटकसोंहितभ्रा
हिमाहा ॥ २१ ॥ इकचोसगयोअतिहीब
नमे ॥ भयनाहिकछूनृपकेमनमे ॥ उठि
स्पंघतहांनरनाहहयो ॥ प्रियलोगनके
उरदुषभयो ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सबसाषिनपु
रमेकही ॥ बनमेबीतीबात ॥ सोकजुक्त
मातामई ॥ अतिभीषमपछीतात ॥ २३ ॥

तबहीमाताचित्रकी॥सुतहितबहुउप
पाय॥हितुकेअरुअतिमोहकेंभीषम
लीयोबुलाय॥२४॥राजोवाच॥चौपई॥
नृपबीनपुरबासीनकेंसंक॥जैसीदससी
रहीनलंक॥अबसोभईकरीजगदीस॥रा
जभारसुततेरेसीस॥२५॥प्रजापालियेसुत
ज्योंमात॥राषिराजजोवूडोजात॥नावन
पतिसांतनकोरहै॥भीषमसोंयोंमाताक
हैं॥२६॥भीषमउवाच॥मातासत्यहिये
होराषों॥सत्यहियेहोंअसतनभाषों॥नृप
ताकरोंनतरुनीकरों॥तवसेवानिसिदिन
उरधरों॥२७॥जोजनगंधाउवाच॥भयो
राजसंदेहउर॥कीजेकहाउपाय॥प्रगटी
भीषमसोंकथा॥लज्याजुतअकुलाय॥२८॥
पारासरसंजोगको॥औरव्यासअवतार॥ब

२ निसुनायोभीषमही ॥ अधिसोसबमो
हार ॥ २९ ॥ जन्मतकाननकोगयोव्यास
महारिषिराई ॥ तिहिछिनमोसौंप्रगटा
हि ॥ बचनसुषदसुषपाय ॥ ३० ॥ जहांकछु
संकटपरै ॥ कष्टहोयकछुआय ॥ सुमरत
हिजहांप्रगटहो ॥ टारोंसकलनसाई ॥ ३१ ॥
दोधक ॥ भीषमयोसुनिसुष्मभयोमन ॥ बेन
कह्योहितवंततछिन ॥ मोतुवुलावहि
तारिषिराजहि ॥ दुषदहेसबकारजकाज
हि ॥ ३१ ॥ भीषमकोअनुरागिरह्योचितव्या
सतहांसुमिरेकरिकेहित ॥ सोमितआयकी
योरिषीसाथल ॥ जटकसेकरदंडकमंडल
३२ ॥ बंदतुहेपगमातुमहामति ॥ भीषमके
उरसुषवढ्योअति ॥ बानबीचारिकहीस

विक्रम०
॥२१॥

गारीगुनि ॥ राजनवलै किहिभांतिनकेमु
नि ॥ ३४ ॥ वामीवाचा ॥ राक उपाव करो
जो माई ॥ तो संतान प्रगटि है आई ॥ चित्र
विचित्र नृपति की रानी ॥ ता हिन सम सब
बसतर डारि ॥ ३५ ॥ मो आगे आवै न जिला
ज ॥ देखु असी सहो ई सबकाज ॥ हैं तपसी
नहि चीन्ह बीकार ॥ ताते जिनि कछु करो
बिचार ॥ ३६ ॥ रानी गई महल मे धाई पुत्र
बधू न सो विनयो जाई ॥ उन सुनि बात अ
चंभो भयो ॥ के सो हे मा ताती हियो ॥ ३७ ॥
दोहा ॥ इहि बिधि आगे जेठ के ॥ कहै कौन
कहि बाल ॥ असी कौन निलज्ज त्रिय क
रै सु कर्म कराल ॥ ३८ ॥ चौपई ॥ रानी कही ॥
सम झाई बाल ॥ भई नगन वे ताही काल ॥ ब

कुधाकेशदेहपेडारि ॥ नैनमुदिकैअंबा
नारि ॥ ३९ ॥ आईसोमामुहीरीषीस ॥ कै
उदारितीनकहीअसीस ॥ इहिविधिकै
रिषिबोल्योबैन ॥ होयअंधसुतलहैनने
न ॥ ४० ॥ फीरिरानीअंबापैजाइ ॥ लेआई
ताकौंसमुझाय ॥ तिनहुबसनादीयेस
बडारि ॥ अंगमृतिकाल्याईनारि ॥ ४१ ॥ वै
सांपायनोवाच ॥ दोहा ॥ पांडुपुत्रयागर्भतैकैहै
बहुबिधकारि ॥ मृतिकाल्याईअंगमुनिभे
दकह्योनिरधारि ॥ ४२ ॥ बांछितबरमात
हिदीयो ॥ ग्रेहगयेरिषिराय ॥ चित्रविचि
त्रत्रियानकौगर्भभयेसुषकारि ॥ ४३ ॥ चौ
पई ॥ पूरनमासभयेतिनकौंसब ॥ मातन
केउरसुषभयोतब ॥ अंधभयोसुतचित्र

विले०
॥१२॥

कीनारिहि ॥ पांडु बिचित्रबधुसुषकार
हि ॥ ४४ ॥ बासरकुंमिमिदुंदुभीबाजत ॥ त्यों
ध्वनिसोमधवाघनगाजत ॥ मंगलचारस
षीसबगावहि ॥ भांतिनभांतिनआनंद
बढावहि ॥ ४५ ॥ भीषमकरमबीचारिकी
येसब ॥ दीनदुनीबहुदानदीयतब ॥ बि
तिगयेइहभांतिकितेदिन ॥ बाढतआ
नदहेछीनहीछीन ॥ ४६ ॥ भाटतहांबी
रदावलीगावत ॥ बारनअश्वसमूहनिपा
वत ॥ पंडितआयतहांगुनसागर ॥ नृत्य
तहेबहुधानटनागर ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ कोर
वनेआनंदको ॥ सुषसमूहसबिलास ॥ ज
बहीकीरसुमिरजननि ॥ आईगयेरिषिव्या
स ॥ ४८ ॥ जनमेजयउवाच ॥ तोप्रसादतें

पुत्रवैप्रगटभयेइहिग्रेह ॥ औरपुत्र
करिकैकृपा ॥ मोमांगेसुतदेह ॥ ४९ ॥
॥ श्रीव्यासउवाच ॥ बिनाबसनउहिभां
तिही ॥ आवैमोतटबाल ॥ आसिषदेऊ
उदारकैं ॥ ताकौंतैहिकाल ॥ ५० ॥ आति
दासीनगनकरिजोजनगंधामाई ॥ कर
तकटाछनलाजउर ॥ मंदमंदमुसका
ई ॥ ५१ ॥ पुनःव्यासोवाच ॥ कासिराजकी
सुतानहोइ ॥ इहमांतादासीहैकोइ ॥ या
कगर्भहोयसुतऐक ॥ विष्णुभक्तउरग्या
नविसेष ॥ ५२ ॥ देआसीषतबहीरीषगा
यो ॥ गर्भप्रगटदासीकौंभयो ॥ पुत्रसरूप
तबहीअवतरो ॥ नामविदुररिषियाउ
च्चरो ॥ ५३ ॥ तीनौसुतषेलैयेकसंग ॥ ल

५९

॥वि०॥
॥१२॥

अ[illegible]उपजत मातन अंग॥ लैरै भी रैये लै इहिरीति॥ केती वर्ष गये दिन बित॥ ५४॥ सोरठा॥ भीषम सकल समाज॥ बोले बुधि जनु जोतसी॥ दयो अंधक हराज॥ तिलक सीस सीर छत्र धरि॥ ५५॥ दोहा॥ राजनीति मार गछ के भीषम बुधि नीधान॥ सुजस सुबस चारो बरण॥ आयुधर्म जुत ज्ञान॥ ५६॥ बिजै करन कौं तब सज्यो भीषम दल चतुरंग॥ जीते अरिपुर जाय के लषि सुष उपजत अंग॥ ५७॥ चौपई॥ एक नृपति पै लीनो दंड॥ पाटन नगर जीति वकु खंड॥ एक तें कस्कि रि अपने थपे॥ वकु तन रेस अंधड रकपे॥ ५८॥ भीषम करि के दिग

बिजै॥ आये अपने ग्रेह पांडु ग्रंध ध्र
तराष्ट्र सो॥ दिन दिन बढत सनेह॥ ५९
चौपई॥ ध्रतराष्ट्र की चलै न काई सब
विधि करैं पंडु नृपताई॥ इहि विधि सों
बीत्यो बहु काल॥ रहत जथा क्रम तहां
भूपाल॥ ६०॥ इति श्री महाभारथे पुरा
णे विजै मुक्तावली कवि छत्र राष्ट्र पांडव
जन्म बरणनं नाम द्वितीयोध्याय॥ २॥
दोहा॥ सुबस भूमि कनवज पुरी॥ आर
बरण की भीर॥ गंधर्ब राय महीपतहां
परम सील गंभीर॥ १॥ सोरठा॥ सुरपति
गंधर्ब राज॥ अमर पुरी कनवज नगर
पुरजन विबुध समाज॥ ह्लो सरि दीजै क
हा॥ २॥ ताकें दुहिता इंदु मुषगंधारी इ

विजै० ॥ ॥१८॥

हनांम॥ सची की धो है इंदुराकै मनसि
जकी बांम ३॥ ध्रतराष्ट्रकौं पितु दई दी
नीलषपठाय॥ करि विवाह सो चारु
सब मंगल चारु कराय ४॥ तब भीषम
आनंद मति आये सबै बरात॥ अंध
राय दुलहा बन्यो॥ सुष समुह सरसात
॥ ५॥ बिनु लोचन कौ पति सुन्यो गांधा
री दुषपाय॥ सषी आपनी सौं कही इ
ह सब बिधि समुझाय॥ ६॥ को मेटै बि
धि कौ लीष्यो॥ पायौ पति बिनु नैन सा
ई प्रभु है प्रानपति॥ सत्य कहौं मुनि बैन
७॥ चौपई॥ तब ही यो गांधारी कहै॥ प
रम पति ब्रतमो उर रहै॥ कै सीतरुणी
है जगमाही॥ पति कै दुष्य आप दुष्य ना

ही ॥ ८ ॥ गुरुदेवताआपपतिआंमें ता
कीआपानीसी दिनमांने ॥ पगनुदेहकें
मासुनभंग ॥ रचैपतिव्रतकेजोरंग ॥ ९ ॥ सु
भगनितीनकीकरताकरें ॥ तबगांधारी
यौअनुसरै ॥ अंधराधपतिकेईगहैन लें
पटीनिनवांधेनेन ॥ १० ॥ दोहा ॥ औविधि
दोउकुलनकी ॥ व्याहभयोतिहिरीतिक
न्यादैदासीदईभूषनरतनसमीति ॥ ११ ॥
भुजंगप्रयात ॥ मतंगजेतुरंगसूरसाजसों
तेसाजियो ॥ अनेकभांतिदायजोअसेष
बस्त्रकोदयो ॥ स्यामसेतनीलपीतआ
सनेबिछावनें ॥ दीयेसुबरनमालमुक्तर
क्तेतघनेघनें ॥ १२ ॥ विवाहकेंनरेसआ
पुग्रेहकेंसिधाइयो ॥ दरीद्रदीहदीनही

॥ वि० ॥
॥ १५ ॥

नकेसबैनसाईयौं ॥ गीतनादद्दोनठो
रठौरसुघसुघनैंघनैं ॥ उपंगाचंदद्दुदभीनि
भेरिहंदनिकोगनें ॥ १३ ॥ दोहा ॥ कहीन्र
पतिधृतराष्ट्रयहभीषमसौंसमुझाय ॥ क
रोपंडकोव्याहग्रब ॥ उत्तिमठौरसुधाई ॥
१४ ॥ चौपई ॥ नगरनकीरतनावली
मध्यनाईककुतवार ॥ कुंतलराजवषा
नियेंतहांभूमिभरतार ॥ १५ ॥ सूरसैननृप
कीसुताहितुकैंआनीग्रेह ॥ जन्मकाल
केकर्मसबकीनेसहितसनेह ॥ १६ ॥ नाम
धर्योकौंतातहांसकलवुधिसवुलाई
दिनदिनदुहिताइदुमुष ॥ ग्रतिदुतिसोस
रसाय ॥ १७ ॥ दशाद्वादशबीतेबरष ॥ करि
कौंताचितग्यान ॥ सेयोरिषिदुरबासतब

मनबचनकर्मसुजांन ॥ १७ ॥ रिषिउवाच ॥
रिषिराजप्रसन्नभयेतबही ॥ अतिनि
श्चलध्यानधर्‌योजबही ॥ सिषियेसु ।
आकर्षनमंत्रतबे ॥ हितुकैंतिहिसीषि
लयेसुसबे ॥ १८ ॥ दोहा ॥ सुरजकौइक
धर्मकोतीजौपवनबषांन ॥ चौथौसी
सीषीयेइंद्रकौसबगुनगपाननिधान ॥ १९ ॥
चौपई ॥ पंचमतहअश्वनीकुमार ॥ दी
नीरीषतहपरमउदार ॥ जाकौमंत्रजपे
सुषदाई ॥ सोईदेवप्रगटीहैआई ॥ २० ॥
तोटक ॥ उनसुरजमंत्रजप्योजबही
प्रगटेसविताघरआईतहीं ॥ सकुची
उरपीइहभांतिबगैं ॥ नरमोजगमांहि ।
कलंकलगे ॥ २१ ॥ श्रीसूर्यउवाच ॥

बिनयोजनवतैंबहुजापकरयो [illegible]
अतिभक्तिकियेपगभूमि [illegible]
धस्यो॥ तबदृष्टिसंजोगआधानरह्यो
त्रियसौंतबहीइहबैनकह्यौ॥२२॥सु
तहोयवलीजुवगर्भमहा॥बहुधाव
रनैंगुनतासुकहा॥प्रगटेमनबमे
अभेदधरै॥घरबारिधिलैंअतिकी
र्तिकरैं॥२३॥चौपई॥लषैनकोउंतु
वआधान॥योकहिभांनसिधायोधा
म॥आईकौंताअपनेगेह॥धाईबु
लाईपरमसनेह॥२४॥रविकौरमिवो
सबबिधिकह्यो॥तबउनमरमसक
लबिधिलह्यो॥जबदसमासगयेत
हांबीतकहीधाईसोंतबयहरीति॥२५

आजुमुचैगोमोआधान।कहैपुत्र
कहगयौभान।त्यावमजनमातुरतग
दाई।तामेधरिसुतदेजुवहाई।२६
॥दोहा॥आन्योधायमजुसतहां।क
रिमनमांहबिचारि।अर्धनिसाबी
तीजहांलयोपुत्रअवतार।२७।पहि
रैकवचअभेदतन।कुंडलफलकत
कांन।सुकुमारनिभनिचंदसोषोड
सकलानिधांन।२८।धरिमजुसमेधा
यवहदीनोंसरितबहाय।हस्तिपस्यो
सुतधारकीहितुकरिलयोउठाय।२९।
॥तोमर॥लसैंमहापुत्रस्वरूपसूरसो
नुदेकीया।गयोसुसदनआपनैंजुला
ससौंमहाहीयो।दयोत्रयाहिजात

॥वि०॥
॥१७॥

कर्म आदिकर्मनिकरै ॥ अनंदभो
महाधनैं ॥ अशेषपुष्पबीसरै ॥३०॥ ध
स्यो विचारि नामकर्न पुन्नयो सिषा
वई ॥ नित्यनित्य अंगमें सुजो तिआ
वई ॥ भयो प्रवीन अंत्र सस्त्र सिषि
बो हियेधर्यो ॥ सहस्त्र बारन्नीति पे ग
यो विचार यो कर्यो ॥३१॥ दोहा ॥ आ
राधे तव कमलपद परसराम के जाइ
द्विजसुत वपु विद्यापढै मन बच कर्म
चित लाई ॥३२॥ इहिं विधि वकु विद्याप
ढी सिषि ईसो रिषिराज ॥ अस्त्र सस्त्र
सीषे तहां कर्ण सजे सुषसाज ॥३३॥ पर
सरां मरिषिराज तब ॥ आलससो अल
साई ॥ कर्न जंघ परि सीसधरि ॥ सोइ रहे

सुषपाई॥३४॥चौपई॥ कीटरूपनाराय
ण आए॥ भृगुनंदनतहांसोवतपाए क
र्णजंघतनपहुच्यौजाई॥ षंडिरह्योरुधि
रधरघाई॥३५॥तुचाकाटिबहुआमिष
फास्यौ॥कर्णसुभटअंगानैकनमोर्‍यौं
सोवततैंभृगुपतितहांजागे देषिरुधिर
तबषष्ठनलागे॥अथ परसरामउवाच॥
सुतइहरुधिरकहांतेआयो तबरबिनं
दनभेदबतायो॥जान्यौंकर्नविप्रनही
होई॥इहछत्रीबालकहैकोई॥३७॥दो
हा॥ जद्यपिचत्रिवंससोंहै विरोधअति
मोहि॥कपटरूपविद्यापढी॥अंतकु
रोमतितोहि॥३८॥श्रोटिस्रापआयोस
दनरबिनंदनअकुलाय॥उतकौंतारा

हकोगइ॥ ननकेस्रिकू मिटाइ॥३९॥भीष्म
इतीकथाकही॥सबनिसुनीसुषपाय
तबहीकौंतलराइपैंनेगीदयेपठाय॥४०॥
॥सोरठा॥कुंतलन्रपपैजाइ॥कहीबातस
मझायसब॥तबभूपतिसुषपायपठयेने
गीलग्नदै॥४१॥सुनतसुषदइहबातसुभ
घटिकालीनीलगन॥भीषमसजीबरात
हयगयंदपरिघहुघनौं॥४२॥भुजंगप्रय
त॥चलेमत्तमातंगऐसेविराजे॥मनौंस्या
मभारेमहामेघगाजे॥चलेतेजसौंतेजती
तेतुरंगा॥मनौंलेतलागेफलांगेकुरंगा॥४३॥
चलेसाजसाजेरथीसूरसेनां॥चलेबीरबा
बांकिकद्धंसंकहेंनां॥चलेदुंदुभीआदिदे
सर्वबाजे॥चलेन्रत्यकारीमृदंगीबीराजे

दोहा॥ नियरानें कुलवारयु॥ अद्भुत गई बरात॥ निरखि सकल विधि नगर की आनंद उर न समात॥ ४५॥ इंदुकुलन की रीति जो तिहि विधि कियो विवाह॥ दे कन्या बहु धन दीयो समद्यो नवनरनाह॥ ४६॥ करि व विवाह नृपपंडु कौ भीषम पहो आजाय॥ भये सगुन पैठत नगर ह्वो हि सकल मन काम॥ ४७॥ सवैया॥ सगुन को सार देष्यो दाहिनौं कुरंग दार भरद मयूर चारु दरस दिषायो है॥ दाहिनौं ही जंबुक उलूक भयो दाहिनो ही दाहिनो ही लील सुभ सगुन जनायो है॥ दाहिनौं हि स्वान बरषा सर भो दाहिनो ही॥ उज्जल बसन लै रजक कर धायो है॥ अन्न पकवान द्रव मृतिका सुगं

धपानफूलनकीमालकौं विलोकिसुषपा
योहै ॥४८॥ चौपई ॥ कौंतायहभीनरियग
धारी ॥ देषिसपनसुषआईगंधारी ॥ सबगु
नसुभलछिनलषिनैंन ॥ मनमेहविलषी
कहनबैन ॥४९॥ इमीसगुननकीबिधि
सबै ॥ सकलसगुनीयाबरनैंतबै ॥ पठत
नगरसगुनसुभभये ॥ नितनितआनंददे
षैनये ॥५०॥ दोहा ॥ धर्मधुरंधरहोयसुत
कौंतागर्भप्रविविन ॥ एकछत्रमहिभो
गवै ॥ करिसमूहअरिहीन ॥५१॥ छंदवि
जोहा ॥ सज्जनमनरंजैदुर्जनगंजैभंजैदु
षदारिद्रनै ॥ सत्यकहैसुषसत्यलहैसुष
दुष्षदहैकविछत्रमनैं ॥ धर्मनिधारैअ
सतुनिवारैजारैरारिकितजगके ॥ भारी ॥

भयमानैंनिर्भयठामें॥जामैंगुनजसके
मनके॥५२॥दोहा॥जुकिगंधारीसगु
नीयादीनौंतुरतनिकारि॥लोभग्रसत
लोभीकहै॥बातनराकविचारि॥५३॥व
ह्योपंडुनृपतरुनिसों॥दिनदिनप्रेमा
अपार॥क्रीडानिसिबासररची॥सुज
समकलसंसार॥५४॥दूजोकरयोवि
बाहतव॥आनीनरुनीधांम॥नाममा
द्रीलसतसो॥विज्जलतासीबाम॥५५॥ग
योविपनकोंपंडुनृप॥आषेटककैका
ज॥तहांजुनेतपजुत्के॥द्विजरिषिनीग्र
रुरिषीराज॥५६॥तवहीमनमथमन
मथ्योकामातुररिषिराइ॥रतिमांगी
त्रियपैंतहां॥अंगअंगअकुलाय॥५७

विनै० ॥२०॥

रिषिनीउवाच॥ पतिरतिनिसिमैंजुल्क
है॥ बासरजुल्कनश्राहि॥ कितीबिनैंत
सनीकरीधीरजहोयनताहि॥५८॥ रि
षिउवाच॥ पसुपंछीदिनमैंरतिकरैं
हमतुमरूपमृगनिकोधरैं॥ रिषिनी
मृगीश्रापुमृगभयो॥ इहबिधित्रिय
सोंरतिरसठयो॥५९॥ तोलगिपंडुश्रा
ईतहांगयो॥ विषमबांनसोंरिषिम
गह्यो॥६०॥ लागतबांनभयोसंता
प॥ प्रानततततकांदीनोश्राप॥ दो
हा॥ जिहिबिधिछंडयोदेहमें लागत
हीविषबांन॥ इहविधत्रियसोंरतिक
रतजैहैतेराप्रांन॥६१॥ श्रोटिश्रापरि
षिराजको॥ ग्रहश्रायोदुषपाय॥ महा

मलीननिसिकैंसमैं॥ चौ॰ द्रौसेनमाजा

३॥ ६२॥ तबकैंतानृपपैगई करिछो

डशसिंगार॥ मिसुकरिनृपसोवतल

ष्यो॥ अर्द्धनिसासुषसार॥ ६३॥ सेवक

रतपतिकीत्रिया॥ औरपलोटतिपाइ

अंगअंगदुष्षसौंदहो॥ उत्तरदेतनराइ

६४॥ वडीवाराजागयोनृपतितबैकौंता

सुषपाई॥ रतिमांगीतजिलाजत्रियकु

मातुरअकुलाय॥ ६५॥ विषमइषसोउ

रलग्योसुनतत्रियाकीबात॥ बचनन

हीनासीनिसाजोलौभयोप्रभात॥ ६५

दोहक॥ उठिबाहरपंडुमहीपगयो न

सुहायकछुवऊअम्मए॥ गजबाजि

सबैसंगसाजितहां॥ चलिकैंपडुचैव

वि०मु० नघोरननहीं॥६७॥ सवैया॥ देषितहां
॥२१॥ सालमालके जालतमाल विसालनकौं
नगनैं॥ चंदनचंपकअंबकदंबसदा
फलश्रीफलबेलिघनैं॥ केवराकेतकी
औरकरनाकलिकुंदकुम्हनिकाबरनैं
बेलिचमेलीजुहीबकुकुंजनिपुंजनियुं
जनिमोहैमनैं॥६८॥ दोहा॥ सुबसबसा
योइंद्रपथकाननमैंतिहिठौर॥ रह्योवि
रमिनृपपांडतहेंभूपनिकोसिरमौर॥७०॥
॥इतिश्रीमहाभारतेपुराणेविजैमुक्ता
वलीकविछत्रविरचितायांराजापांडव
नवासवनरणनंनामतृतीयोध्याय॥३॥
दोहा॥ तबकौंतामनदुषकरिचलीपंडु
नृपतिकेपास॥ ग्रहरद्धाकोछत्रकहि।
॥२

राषोदासीदास ॥ २ ॥ पहोची भूपतिकें
निकटनगरइंद्रपथमांह ॥ रहतसुचे
नेंलोगसबपंडनृपतिकीछांह ॥ २ ॥ चौ
पई ॥ जानीतरुनीआवतजबही सोक
भयोभूपतिउरतबही ॥ निसिसुतौनृ
पसेजसवारि ॥ इंदुबदनत्रियतबपग
धारी ॥ ३ ॥ पतिकोमनत्रियलहेनसोइ
बहुसंदेसतासुउरहोई ॥ तजिलज्यायौं
बोलीबेंन ॥ सुनउंप्रानपतिबहुसुषदे
न ॥ ४ ॥ कौंनीवार्त्ता ॥ काहेरचतनमो
सौंमोह ॥ रहतछिमोउरवाटतछोह
तुमसौंकहौंबच्चनतजिलाज ॥ कौंन
रचौरतिसंततिकाज ॥ ५ ॥ दोहा ॥ वक्र

तुल्पउरमेलगी॥ तरुनीकीइहबातबर
नीकाननकीकथ्या विकलदेतश्रकुलात
द॥ चतुवाच॥ दोहा॥ मगमगनीकेरू
परिषिनिरषिरतिरत्तमें॥ हयोकहोयोभू
पद्विजकेउरसरसुखमे॥ ७॥ दोहा॥ श्रा
पदयोरिषियोकह्योज्योंछाडेमेंप्रांन॥ त्यों
तरुनीसंजोगहीमरनश्रापनोंजांन॥ ८
योंसुनित्रियलरषिरि गिरी तनकीन।
हीसम्हार॥ सुधिश्रायबोलीतबेइहि
विधिवारंबार॥ ए॥ सवैया॥ केधोहे
महस्योश्रपमानकस्योविप्रनकोके।
धोमनधस्योजाकोनाहिमेंनदीनोहे के
धोमेंविछोह्यौकाउतरुनीकोप्रानप

ति॥कैंधौंनींदेनिगमकिगुरदोषलीमें
है॥होममैंवुझायोजलचरनविडारिधे
नु॥झूठीसाषिदोलिकैंवचनमहाहीमें
हैं॥कौंताकेंविलापगहिदीनौंरिषिश्रा
पजाकौंअंगअंगतापु॥ऐसोकौंनपाप
कीनोहैं॥२०॥राजोवाच॥होनहारकै
इरहेनहिसुमेटीजाय॥समाधानकैहि
वचनकहिरानीत्रियसमझाई॥११॥इह
विधिवितदिनघनेचिंताकरिमुवार॥कि
हिविधिउपजैवंस॥यहहोईसकलसुष
सार॥१२॥दोहा॥देवअकर्षनमंत्रमो
दीनेरिषीदुर्बास॥तुमआइसुलहिजोभा
जोसोआवैमोपास॥१३॥धर्मजपवनपति
तवकह्योतरुनीसोसुषपाय॥अग्पा।

०भि
५५

लहिं सुमरनि कियौं सोपङ्क्यो ढिग आ
ई ॥ १४ ॥ भयौ हृषि संजोग तब ॥ सुनै मह
लमंगार ॥ धर्म असी सदई घनी इहि वि
धि वारंबार ॥ १५ ॥ धर्म उवाच ॥ तेरे ग
र्भ है मम सुत ऐसे ॥ षोडस कला ससी
है जैसो ॥ धर्मधुरंधर धर्म हि जानौ द
तसत्त के सब मग ठानौं ॥ १६ ॥ भूमि भो
ग वैइक छत राज सब विधि सारै जग को
काज ॥ इह कही धर्म गयो सुरलोक ग
र्भ धस्यो त्रिय ता समेक ॥ १७ ॥ दस ए
मास पुत्र अवतस्यो ॥ मनौं अनंत न तन
भू मै धस्यो ॥ जैसे सव्र अकाशे भयो ध
र्म जन्म महि मंडल धस्यो ॥ १८ ॥ दो
हा ॥ नौमि दिन नारी नर सबै गावत

मंगलचार॥ होतबधाइछत्रकहि न
पतिपंडुदरबार॥२०॥ तबबह्मोनपजो।
तिसीकहिशुभलगनविचारि॥कौन
मकुरतसुतभयोसोबरनौंविस्तारि॥२१॥
॥जोतसीउवाच॥ सुभदिनसुभघटिका
भयोभाग्यवंतवकुहोइ॥ एकछत्रमहि
भोगवे॥ अरिकछुवेचेनकोइ॥२२॥ छं
द॥ सज्जनहुलासकरिदुर्जनकोत्रासक
मंत्रवसवासकरप्रथिबीकोश्रृंगारहै॥क
मलानिवासकरपाटनविलासकर॥मि
त्रुकअवासकरभूमिभरतारहै॥जगजा
कोआसकर॥सत्रुकोविनासकरि॥दी
ननिकोजासकररत्नकोभंडारहै॥पुण्य
कोप्रकासकरि॥पापीनकोनासकर॥न
पताकोभास्कर॥धर्मअवतारहै॥२२॥दोहा॥

अउपज्यौ पूरण भाग तें ॥ तुव ग्रह सुत
बलि बंड ॥ उन्नत सकल अधीन के दे
हि अदंड निदंड ॥ २३ ॥ इहि सुप दिन बी
ते कितन पनि यंउइ क काल ॥ कही बो
लि रवनि तबै देव अकर्षी वाल ॥ २४ ॥ जा
प्रसाद सुत दूसरो प्रगट होइ मम ग्रेह ॥ मो
आइसु अब उर धरो भूपति कह्यो सनेह ॥
२५ ॥ जाप्य मंत्र बोल्यौ पवन अंत हहु रइ
क धाम ॥ तहां भयौ संजोग तब ॥ गर्भ धर्यो
हठि बाम ॥ २६ ॥ तोटक ॥ पूरन मास भ
ये प्रगटे ना सुत ॥ काम स्वरूप सुसोभित सं
जत ॥ अंध त्रिया इह बात सबै सुनि ॥ आ
सम जे तिहि बास महामुनि ॥ २७ ॥ आइ
गयौ रिषिराय तहां तब [illegible] बैं नक

च्योतिनसौंसब। मोबरदेरिषिराजमहाम
ति सोईकरौप्रगटैसुतआगति॥२७॥व्या
सोवाच॥दोहा॥सीसनधुनिसुनिबातइ।
हदेषिपरावोनैंन॥आपुकियोसोपाईए।
कहैव्यासयोबैन॥२८॥टानीहरषिअसी
सतवव्यासमहारिषिराय॥गंधारीकौंगर्भ
तबभयोप्रगटतहाआय॥२९॥जहांसे
लकेसिषरियरकुटीरिषिनकोधाम॥कौं
तालेभीमहिगईकीनौअमितप्रनाम॥३०
सनमुषगाज्यौस्यंघके॥भीमसेनतिहिका
ल॥३१॥अरहुंकौउप्योंजलदधुनिसुनिह
रिगयोपराइ॥लषिगंधारीमूरछीगिरीध
रनिअकुलाइ॥३२॥ध्यारेदिनकोगर्भहा
मुचिगयोतेहिकाल॥परयौपिंडसोधरनि

छहुतलसीजि दते तवजिमेोपा हन परतउतील ४

विजै०
॥२५॥

पर॥ अंगअंगमाकुलिवल॥३३॥ भयोकु
लाहलसदनमैभयेव्यासमनिराइ॥ सुभ।
कारीतावंसके॥ तवहीपहुचेआय॥३४
॥चौपई॥ बरनीसबैविधिदासीकही सो
सबविधिमुनिहृदैलही॥ केसतअसपिं
डकेधरे॥ आंनसबनमैतबसंचरे॥३५॥ सो
घटघृतभरिलियेमगाय॥ प्रतिघटपिंडअ
संसुथपाय॥ राष्योएकराकतुनग्रांम॥ धरे
सुअंतहपुरएकधाम॥३६॥ व्याससिधा
यतबरिषिराउ॥ करिगंधारीकेचितचाउ
पूरनमासगयेजबबीति॥ षोलेघटआ
नंदसमीति॥३७॥ प्रथमजनमदुरजोधन
लयौ॥ दूजौघटदुसासनभयो॥ तीजेदुध्ध
रवकुसुकुमार॥ रूपवंतजोसोवतभारी।

३८ ॥ चौथैघटठ॰ ॰उ ॥ जौ दहकैंन ॥ मान
हुतनधरिआयोमैंन ॥ इहिविधिकैसत
भयेकुमारा ॥ सीलवंतराचेकरतारा ॥ ३९
॥ दोहा ॥ आनंदभयोधृतराष्टुकैजहत
हांमंगलचार ॥ कंचनभूषनहेमगनपा
वतमंगनहार ॥ ४० ॥ सुबपुरमैंआनंदभ
योमनभायोसबलेत ॥ हरषिहरषिकैस
कलविधिसबैआसीसनिदेत ॥ ४१ ॥ राजा
धृतराष्टुरुवाच ॥ कहोबिदुरआनंदम
तिजनमलयकोभाऊ ॥ तुमतेऔरप्रवी
नकोहितुकेवोल्योराउ ॥ ४२ ॥ विदुरउ॰
मेंविचारिदेषीलयकहीनमोपेंजाइ ॥ मे
रोविलुगनमांनियसबबिधिदेहुवताइ
४३ ॥ जेठोसुतअैसोभयो ॥ भलोनकरि

है काज ॥ कुलहिकलंककलगाइहे ओरु
षोवैसबराज ॥ ४४ ॥ नराज ॥ भलौबुरोगनैं
नहीसमूहगोतसंघरे ॥ लहैनसीषसोक
छुसबैकुकर्मसोकरै ॥ नराषिपुत्रभूपनी
रमाहसोवहाइये ॥ जेजियेसुबात आपु
कोकलंकलाइये ॥ ४५ ॥ भयेकितेकपु
त्रऔर ॥ राजकाजतेकरै ॥ विचारऔररहैं
नबैनभूपमोहनैंधरे ॥ ४६ ॥ गंधारीबा
च ॥ नबोलिमूढमोभलोनतोहिभा
वई ॥ बुलायतोहिलीजियेतहांसुकौंन
आवई ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ भीषमविदुरउठेत
हीयोकहीकेअकुलाइ ॥ जेठोसुबकुलसं
घरैं ॥ कुलहिकलंकलगाय ॥ ४८ ॥ चौपई
दिनदिनबाढतवैसोभाई ॥ कहसबपंडुन

पतिसुधिपाइ ॥ ४९ ॥ फुलेअंगअंगदी
नौदांन ॥ सबजाचककौराष्यौमान ४९ ॥
॥ इतिश्रीमहाभारतेपुराणेविजयमुक्ताव
लीकविछत्रविरचितायांदुर्योधनजन्मान
र्णनंनामचतुर्थोध्याय: ॥ ४ ॥ भुजंगप्रयात
दईपंडुअग्यातहांबोलिबामें ॥ जसैौहुंसको
मंत्रआवेसुकांमें ॥ कस्यौसक्रकोध्यान
सोसत्तआयोभयोदृष्टिसंजोगसुषपायो
१ ॥ भयेमासपूरेंपोछत्रनीको ॥ लषेसंकना
सेनसेंसोकनीको ॥ वधावाकियोदान ।
दीनौदुनीकौं ॥ दीयोदीनकौंओरषंदी ।
गुनीको २ ॥ चौपई ॥ कहौजोनसीपुत्र ।
कीलग्नकैसी ॥ सुनावोसबैमोघरीहोइजै
सी ॥ सुनौंभूपऐसीघरीकीनिकाई ॥ च

ऽदेवनकरि प्रानंक म्र मिगैरावतखानै

बि०सै०
॥२१॥

ॐ लंक फेरै घरा मे हूहाइ ॥३॥ दोहा ॥ बा
नि मछाई प्रकास ॥ बाट सूरपुर को
ठानें ॥ सरस महसै सेत ॥ सिंधु को मार
ग मंडइहि ॥ लंकापुर बर जीति लंकपति
बर करदंडहि ॥ छत्र बषत बरन षत
बर अंतक सो जीतहि समर ॥ तीन भव
न की रतन करहि सुभ मलछिन सुत पंड
वर ॥४॥ दोहा ॥ कोरह्मतन सुत भयो
अर्जुन पायो नांम ॥ मन भायकारि अक
रै जीतहि बडु संग्राम ॥५॥ चौपई ॥ अ
र्जुन जनम भयो तब सुन्यो ॥ तब गंधारी मा
थो धुन्यो ॥ कौतावली पुत्र सब जाये पं
डु राजग्रह भये बधाए ॥६॥ फिरि भूपा
ति मन मैं इह आई ॥ इंदु बदन त्रिया

निकटबुलाय ॥ आयुसमांगहमो
लिउ ॥ जपोमंत्रफिरिआवहिदेव ७
॥ कौंतावाच ॥ मंत्रनजैयोंपतिगुमग्रां
म ॥ पुत्रबलीप्रगटेतुवधाम ॥ पंचपुरष
सौंओरतिमानेंगनिकातासोकहत
सयानैं ॥ ८ ॥ तबआग्यातेइहबिधि
करि ॥ देवबुलाएउरमतिधरी ॥ जोइ
हपतिकोकछौनकीजै ॥ घोरनर्क।
जोआपुपरीजै ॥ ९ ॥ राजोवाचा ॥ दोहा ॥
देकुंमाईकोंइहमंत्रविचछुनबांम
तोप्रसादसुतपावहींहोहिसकलमन
कांम ॥ १० ॥ तबअस्वनीकुमारकोमंत्र
दयोतिनताहि ॥ सुमिरतआयोदेवत
है ॥ कोटिमदनछविताय ॥ ११ ॥ भयोस

विजै० ॥१८॥

ह्वैगई ॥ तनके सिद्ध मिटाइ ॥ ३९ ॥ भीषम
इती कथा कही ॥ सबनि सुनी सुषपाय
तबही कौंतलराइपें नेगी दये पठाय ॥ ४० ॥
॥ सोरठा ॥ कुंतलन्रपपे जाइ कही बात स
मझायसब ॥ तब भूपति सुषपाय पठये ने
गीलग्नदे ॥ ४१ ॥ सुनत सुषद इह बात सुभ
घटिकाली नीलगन ॥ भीषम सजी बरात
हयगयंद परिघहु घनें ॥ ४२ ॥ भुजंगप्रया
त ॥ चलेमत्त मातंग श्रेसे बिराजै ॥ मनों स्या
म भारे महामेघ गाजे ॥ चले तेजसें तेज ती
ते तुरंगा ॥ मनों लेत लांगें फलांगें कुरंगा ॥ ४३ ॥
चले साज साजें रथी सूर सेनां ॥ चले बीर बा
बांके कहूं संक हे नां ॥ चले दुंदुभी आदि दे
सर्व बाजे ॥ चले नृत्यकारी मदंगी बीराजे

दोहा ॥ नियरानैं कुलवारखु अद्भुत गई बरात ॥ निरखि सकल विधि नगर की आनद उर न समात ॥ ४५ ॥ इंदु कुलन की रीति जोति हि विधि कियो विवाह ॥ दे कन्या बहु धन दीयो समद्यो नव नर नाह ॥ ४६ ॥ करि विवाह नृप पंडु को भीषम पहो आजाय ॥ भये सगुन पैठत नगर हो हि सकल मन काम ॥ ४७ ॥ सवैया ॥ सगुन को सारद छ्यो दाहिनौं कुरंग दार भरद मयूर चारु दास दिखायो है ॥ दाहिनौं ही जंबूक उलूक भयो दाहिनौ ही दाहिनौ ही लील सुभ सगुन जनायो है ॥ दाहिनौं हि स्वान बर बृषभ सरभौ दाहिनौ ही ॥ उज्जल बसन लै रजक कर धायो है ॥ अन्न पकवान स्वमृतिका सुगं

वि॰
॥२६॥

पवंतमई माधीलख॥कीनोंनबअसनं
न॥म॥पतिकीसज्याकोंचली॥क
रिषोडशसिंगार॥नवलचीरआभर
नबहु॥कंकनतरिवनहार॥२३॥सवै
या॥षंजनकीगतिगंजनैनंनकरीदग
अंजनरेषनिकाई॥भूषितकैमुक्ता
निकेहारसिंगारिसजीसबसुंदरताई
पीमजराजसरोजमुषीसबदेहमनो॥
जकेओजसोंताई॥चतुरकामकीपातु
रसी॥अतिआतुरकैपतिपाससिधाई
॥२४॥दोहा॥इंदुबदनत्रियपतिनिरषि
कामातुरअकुलाय॥दंपतिरतिमा॥
नीहरषि॥रिषकेबचननिसाय॥२५॥त
बहीसुषसंजोगमैभूपतिछाडेप्रांन॥त्र

धकारकुब कौंजगतभूप आंध्ययेभोन
र२६॥सोककुंटबनिकेमध्यो॥नरनारिनउ
रदुष॥रहोनआसोबरणमै॥काहुके
उरसुष॥२७॥चौपई॥रिषिनआयकों
तासमुझाई॥करताकेनसोकहावसा
ई॥सहदेवनकुलमाद्रीलीये॥मोहछां
डिकौंताकोदिये॥२८॥माद्रीउवाच॥ज्यों
अपनेतीनोंसुतजानों॥त्योंमोपुत्रनिसों
हितुठानों॥इहकहितिहितनतछिनका
मनि॥भूपतिसंगभईसहगामनि॥२९॥जं
बइहसुधभीषमकोंगई॥सहितबिदुर
बहुचिंताभई॥कीनोपंडनृपतिकोसोग
षांनपानबहुभूल्योभोग॥३०॥दोहा॥च
लिआयेतेइंद्रपथ्यसमझायेनरनारि॥लेपां

वि०
३०॥

चौंपुत्र निकल्यौं॥ कौंतानुतसुषकारि
३१॥ नगरहस्तनापुरगए॥ सबहीलैसु
षपाय॥ गांधारीउरदुषभयौ देषतवकु
पछितात॥ ३२॥ गांधारीउवाच॥ दुरजो
धनकीसेवाकरो सेवातनमनलाइ॥ आ
धीन्रपतालीजीयधर्मपुत्रसुषपाइ॥ ३३॥
इतिश्रीमहाभारतेपुराणेविजयमुक्तावलीकविछत्रविरचितायांअर्जुनसहदेवनकुलअवतारवरणनंनामपंचमोध्याय:॥५॥ दोहा॥ दुरजोधनकौंआदिदे
सतबंधववरबीर॥ इतहिपंचन्रपपंड
सुत तेषलैइकतीर॥१॥ राषतउरमैदुष्ट
ताकौरवभांतिअपार॥ ताकावारनबां
कईजोसुहाइकरतार॥२॥ मत्तसहसस
मभीमबरदीनौंत्रभवननाथ॥ चाहत

बांधौ ताहि बरजुरि कौरव इक साथ

३ ॥ सुंदरी ॥ मंत्र कीयो इहि भांति सबै

जन ॥ भीम हि बांधो आजु ततछिन ॥ या

हि दियो बिषि आहि महाबर ॥ मारत

ताहि अनाथ जुधिष्टिर ॥ ४ ॥ वेन ही बं

धु कछु करैं जांनहि ॥ जो कहिबो सोइ

आय सुमांनहि ॥ तेसरि तात टषेलत है

सुत ॥ कौरव पंडव आनंद संजुत ॥ ५ ॥ को

न्हरावहि भीम हि कोबर ॥ साजकु बीर

कछू अपनों छर ॥ सोवत बांधव कै दृट

बंधन ॥ गंगा वहावउ वाहि ततछिन ॥ ६

॥ दोहा ॥ भीम सुवायो सदन में संत बंधव

सुष पाई ॥ दिढ बंधन सो बंधि के चाहत

लयो उठाय ॥ ७ ॥ रच्यो मष्ट कै पवन सुत

षकुलिदै भाइ॥ वैसैंतो हम्मूढमतिगि
...कैउठाय॥८॥ पचिहारेसतबंधवे।
सकैनताहिउठाय॥ दुरजोधनअद्भुतग
न्यौंअवलोक्यौसोआइ॥९॥ दुरजोधनउ
वाच॥ प्रथमकह्यौतुमप्रांनबिनु फिरिह
हबांध्यौआई॥ अबकंटकमेरोमिट्यौदी
जैगंगबहाइ॥१०॥ बरकरिलीयौप्रजंकजु
तदुसासनधरिसीस॥ चलेबहावनसुरसरी
संगबंधकदसबीस॥११॥ डार्यौगंगप्रवाह
मैंदेष्यौकोसकजात॥ दुरजोधनसौंआं।
निकैकहिसकलबिधिबात॥१२॥ चौप
ई॥ सबकौरवमनआनंदभयौ॥ अबनि
जसालहमारोगयौ॥ अबवैआसुबंधकअ
नांथ दीजैमारियामनरनाथ॥३॥ जोक
हिहोजेसेवाकरिहै॥ अबनहीगर्वकछु

चितधरिहै॥ बंधन मोरि भीमतन धायो। कौ
रव जहां तहां चलि आयो॥२४॥चौपई॥
प्रतही कुम्हिलाइ गयो सब॥ केतिक भांति च
लियह कौं तब॥ बोलत है सब कौ रवया गति
बलकियो हम बंधु महामति॥२५॥भीमसेन॥
बलकीयो तुम सो हम जानन॥ ईसन आप बि
सासन ठांनन॥ भूप जुधिष्ठिर आय समांन हु
नांतर आजु सबै तम जानहु॥२६॥दुरजोधन
उवाच॥ गंग बहाय दयो जब तहनि॥ मोहि भ
ई तुरमैरि सियो सुनि॥ मैपठयो दह बैनत हां
तव॥ तू चलि आय गयो कितके अब॥२७॥गी
तिका॥ करी झूठी सौंह इन कछू नही मोहि जि
नाईयो॥ बल बंधन फासि चलि के भले मो ढिग
आइयो॥भीमसेन उ०॥ कारो भूपति कां नि

३ ग्रंथ सुतमि नदुर्धरी रिसो पौं कै सौं मड़ी ३
मेरी ॥ धर्मसुत सिषमैं लई ॥ नात्मखचो कितमो
हिरेरत्नजाइकैसों रिस आगई ॥ १८ ॥ कहि बैन
ये चलि सदन आयौ ॥ आय मातासौं कही ॥ जां
निकैं मोछुधितबैसवबचन कर्कट उच्च सेस
ही ॥ जबकरौं हौ धर्मसुतकी आंनबैसबपरि
जरै ॥ १९ ॥ बांधिकै गंगा बहायो दया फिरि जिय
मैधरी ॥ छोरिबंधन सकल दानैं बाट मै यह की
लई ॥ २० ॥ कौंताउवाच ॥ मानिदुरजोधन मही
पतिकांनि तिनकी कीजीये ॥ जो कहै नरनाथ
है सोई मांनि आइसुली जीये ॥ २० ॥ छुधितजा मो
भीमतब आहार लै आगै धस्यो ॥ भारकै तें अंन्न
विंजन त्रिपति कै भोजन कस्यो ॥ उदरपूरन कै उ
ठौ वकुवरन बसान निसाजिकैं ॥ उठिगयौ कौ
रवकी सभा तब दुरदसो गलगाजिकैं ॥ २१ ॥ देषि

केंकुरराज आदरहे तसों बकुविधिकस्यो

छरसभोजन कस्योजुमहित बचनइहवि

धिअनुसस्यो॥ मोहतुमसोंमोहियेअरु

सकलअनुजनकेहियें॥ निसिद्योसदेषत

तोहिआनदछिनकबिछुरेंनांजिय॥ २२॥ वि

दुर०॥ दोहा॥ सबकोरवकीद्दष्टिछमविदुर

कहीइहआन॥ तुकितआयोभीमइहांवि

षस्योंनारहिषान॥ २३॥ विदुरउ०॥ आवत

ह्यांवकुभोदुचितोलषितोहिपसीजिचल्यो

अंगचे॥ जानततनाहिसबैमिलजागतदु।

ष्पदियोअतिनांकहिद्वै॥ भोजनकीनोंम

हाविषसंजुततुकहिमावरोके॥ धर्मकेनं

दनजेसेबचावतकालबचावकुतुदिनकें॥ २४॥

भीमसेनउ०॥ सिंहबबनकहिकोंकरेजो

कढ़ांवछीवाई ॥ मरिकष्ष को धांनउर
कालकहानियराय ॥२५॥ कहिनृपतिसों।
मोहितुम ॥ जोचाहोअघवाय ॥ सकुचछा
डिभोजनकरौं ॥ विदुरग्रेहजोजाइ ॥२६॥ दुसा
सनउठितुरतही ॥ विदुरपठायोधाम ॥ जेवन
वैठोभीमतब ॥ सजेसकलमनकाम ॥२७॥
दंडक ॥ रसहूमैरोसहूमे हासीअरुबलहु
मै ॥ ग्रेहअरुबाहिरननैंकमनलचयो दुष्ट
दुरजोधनहलाहलकेंआधोआधताकिदि
येदुष्टतानिभोजनहारचयो ॥ त्यायत्याय।
आमिषअनेकपकवांनतहांस्वारनिस।
वारिकेंसमूहआगेसचयो ॥ कीनीनगलानि
सोईकंबिकोबषानकहैजांनिकूमीपोनपू
तसोईविषपचयो ॥२८॥ दोहा ॥ जितनोल्या

वतस्वारकछू॥मारिजातति हिंवार॥व
चोरसोईमैनकछू निभयोकइयोव्रार२९
॥दोधक॥भीमचलेपौतबहीयहआयो
कंचनपालिकधांमबछायो॥सोइरच्यो
मनआनदकीनौं॥सोधतहांसतबंधवली
नो॥३०॥रैनिगईनिसिकौंरवधाये कुंतलकी
तनयाढिगआये॥सोवनभीमकहासुषपा
यो॥षेलनकौंअबकौंनजगायो॥३१॥जागि
उठ्योचलिसोहतहआयो॥संभ्रमदुष्टनि
कोमनछायो॥बेगिनरेसहिजायजुहारो नौ
कोरवकेउरसंभ्रमयारयो ३२॥दुरजोध
नउ०॥कहाकरैकेसीकरैकीजेकोनउ
पाय॥सोईसबबिधिकीजियेयाकहिले
उहराइ॥३३॥चौपई॥बरतरचलिकैंबेल

विजै०
॥३४॥

षिलादें ॥ सबमिलिछलकरितारिह
रावे ॥ जबजबभीमदंड लैआवे ॥ बरच
ढिरहोनषुरतसोपावें ॥ ३४ ॥ तबसबब
टकुमतनचलिगय ॥ बालिभीमहसास
नलय ॥ षेलैभैयाषेलअषंड ॥ जोहारै
सोलावेहिदंड ॥ ३५ ॥ भीमसेनउ० ॥
हृषतहेपगबीरहमारां ॥ देषाकोतिकबे ।
ठितिहारों ॥ हरयेषेलषेलयअैसे षेलेभैया
बंधकजैसे ॥ ३६ ॥ दंडक ॥ षेलोबीरअैसो
षेल आपसकोजेसेंआपेबलिहो ॥ अनै
सेंतोनषेलषेलोंपरिहै ॥ आनिहेंजुरासता
हि ॥ देहेंसमदोसफारिषेहै अफसोसनहा ।
मारोकछूकरिहें ॥ पगुहे पिराततानेंचल्यो
जुनजानमोपेसांचीकहोवातपैठ्याऊतेउ

सम्रिहैं॥ हारैहरखाइदाउलीजैऊचलाइतो
तोषैलैंहम आईपायपीउत्तैंनउरिहैं॥३७॥
हसासनउवाच॥दोहा॥ जोहारैहदा
वहद्योसपांचयेंदेइ॥जोजीतैंतो आजु।
हीपकरि आपनौंलेइ॥३८॥दंडचलायोभी
मतबपस्योगंगाकीपार॥हसासनतबपेरि
कैलै आयोतिहिंबार॥३९॥आवतजांन्यौं
निकटसोधायौभीमषुराइ॥ चढिनसकौ
बटग्रछपरलयौहसासनआइ॥३९॥चौपा
ई॥सोभाईवैफूलेगाततनि॥सबैउच्चरतिऐ
सीबाततनि॥दीजैअवहीदावहमारो अव
हिनिकासैंगर्वतिहारो॥४१॥भीमसेनउ०॥
सुनौंकह्योतुमजोसत्यभाउद्योसपांचयेली
जैदाउ॥पणमेरौहैंपिराल्ततातैमोपैचल्यौन

गात ॥४२॥ दुसासनउवाच ॥ अबकसैंनं
तककैसत्यभाउ ॥ तोहमछाडैंआपनौंदाऊ
ठाढोभीमसेनयौभाषै ॥ दाव़बिरानोक्वैसें
राषै ॥४३॥ दियौदुसासनदंडचलाय पस्यौ
सुतोकोसकपरिजाय ॥ ढुढततभीमल्पाइयोतत
हां ॥ कौरवबंधकुतैसबजहां ॥४४॥ दुसास
नफिरिउतस्योधाइ ॥ चाहतदंडदेऊचलाय
पकस्यौभीमबीचहीआय ॥ सकैपोनदंड
दूरिपकुंचाइ ॥४५॥ तबदुसासनबटकोधा
यो ॥ अधपरपौनसूतछिपायो ॥ भीम० ॥ उ
तरिदाउदुसासनदीजे ॥ अबकछूलोभन
आपनकोजे ॥४६॥ दौरा ॥ सबमिलीबट
परचढिरहे सुनैनकोउबात ॥ भीमगह्यो
द्रुममूलतब हर्षवतेकेगात ॥४७॥ गहियो

मरीहारसबरहियोसबैसम्हारि॥पवन
चल्योहैबीरइहसकलगिरायोझारि॥४८
दंडक॥एकअधोमुषएकगिरतउरधमुष
धुकिधुकिपरधराधरेधरकरकतहै॥एकलो
टपोटकेकैंचोटैबाइषाईउठेएकअधरफ
लरयतेएकदरबनउहिनो गनैसे उरडरे कंपि
रसाबागहै॥लरकरफरफरकतहै॥अधसुत
अंधसुतबंधडारेउरिनितैघाइलकेघूंमिप
रेभूमिबरकतहैं॥४९॥दोहा॥जेवैरायघर
कोभजगएभीमतेधाइ॥सबपोरषसाहस।
गयोउबरेहाहाषाई॥५०॥दइमहीपतिको
तबैबीतीकथासुनाय॥रोषवंतभूपतिभयो
सुनिकैबऊदुषपाई॥५१॥इतिश्रीमहाभार
तेपुराणेविजयमुक्तावलीकविछत्रविरचि
तायांभीमसेनकौरववसंवादवर्णनंनामप्र
३ दुरजोधनउवाच दोहा वरन लीजियै रहौ सकल अकला प
तोला जु कुनिउ जेपाउन्है तोरनदेहु छुडाय १

विजे०
॥ ३६ ॥

सुमोध्याय॥ ६॥ सोरठा॥ षेलतयेकहीसा
थ कौरवपांडव अनुजसब॥ मारतकंदुक
हाथजैसैंससावहिरिको॥ १॥ दोहा॥ उछ
रीकंदुकतिहिछिनकपरीकूपमेजाइ॥ काढ
नकोंसबबंधुमिलिसाजतकितेउपाइ॥ २
गीति॰॥ कूपतटरिषिद्रोणआयोनिरषि।
इहिबिधिसोकहै॥ नहीहैसमरथ्थको
ऊकाढिकंदुककोलहै॥ बंसछत्रीकोलजा
वतजतननहीकरिआवई॥ काटितुमकों
देउइत्त्रनसीकजोकोउलावई॥ ३॥ आनि
आफीसीकताकरधनुषताकोतिहिकस्यो
बानुताहीकोरच्यौतिहिकालधनुषऊपरि
धस्यौ॥ लग्योकंदुकमाहसोसरुसीकउजो
करलयो॥ करिकर्मअद्भुतबेगिदेइषमा॥ ॥

२स्लोकि

हती॥इषसोदयो॥ ३ ॥दोहा॥ इहबिधि
बेधीसींकसोंसबैकूपमझार॥ अंतसींक
गहि[illegible]ढियोगैंदछत्रतिहिंबार॥ ५ ॥चौपा
ई॥ देषतसकलअचंभैरहे॥समाचारभी
षमसोंकहे॥ लयेपितामहबिदुरबुलाईद्रो
णबिप्रढिगपहुचोआई॥ ६ ॥लेद्विजआयेअ
पनेग्रेहकरिसनमांनरच्योवहुनेह॥सबसि
सुतापहिविद्यापढै॥ नितनितचावचोगुनैं
बढै॥ ७ ॥अस्त्रसस्त्रविद्यासबजांनिबिदुर
पितामहकेमनमांनी॥तिनमैंअर्जुनभौअ
धिकारी॥गुरप्रसादपायोगुनभारी॥ ८ ॥दो०
॥ द्रुपदोचाहतसिसुनकौंतबगुरुद्रोणप्रभा
व॥करयोअषारोसदनमैंबोलेराजाराव ९
॥त्रोटक॥रविपुत्रतहांतबकनेगयोकुर

विज्ञे०
॥३९॥

नंदनसाथ अभिलाषभयो ॥ अतिअभिवि
शेषकरयो ॥ हितसौंनरनायकराथधरयो ॥
१०॥ गजदंतनकेबहुमांचबने ॥ बहुचित्रवि
चित्रअवासघनें ॥ तहांबैठिपितामहआ
दिसबै ॥ निरखैसिसुकौतिगआलोगसबै
११॥ गुनकीरचनाप्रगटीसबही ॥ लषिअद्भु
तवर्नतलोगतही ॥ भटओरनअर्जुनकीस
रिहै ॥ गहिकेधनुकोसमताकरिहै ॥ १२ इह
बातसुनीदुरजोधनही ॥ आगयोउरक्रोधमहा
तबही ॥ धनुलेतबअर्जुनपासगयो अबलो
किसरोषनिशायगयो ॥ १३ ॥ करणउवाच ॥
अबसमरमोसोंमंडि ॥ सबदेहुबातनिछंडी
सजिबांनिधनुउरडारि ॥ अबपंडुपुत्रसम्हा
रि ॥ १४ ॥ अर्जुनउ० ॥ सजिलेकुत्तोकहुबांन

दुहनां हिमारी स्यांन ॥ निज सोइ भूपति को
ई ॥ पुनि समर ता सौं होइ ॥ २५ ॥ दोहा तू सुत है निज
सुत को नहि अब भुव पति राई ॥ केसी कहो व
रावरी मो सौं तो सौं आई ॥ २६ ॥ सुनि दुरजोध
न क्रोध करि थप्पो कर्न भुव राइ ॥ टीको नृप
ता को कर्यो ॥ सुभ घटिका सु षपाई ॥ २७ ॥ दे
डक ॥ अर्जुन के सुनि बैन स रोष तहां कुरु रा
ज महा रिस भीनो ॥ देस दीयो सब को स दीयो
न कुं बाजि दे साजि कैं बारन दीनौं ॥ भूष
न दैं जग भूषन भूपति भूप कियो क बिष्ठ अ
बीनौं ॥ राज दीयो सुब साज दीयो ॥ सब काजु
कै कर्न मही पति कीनौं ॥ २८ ॥ दोहा ॥ जुरे कर्न
नृप नाह तब ॥ अर्जुन सौं जब क्रुद्ध ॥ दोउ धनु
ईर धीर अति ॥ करत अमित गति जुद्ध ॥ २९ ॥

विजे० ३८॥

दमेजननीपुत्रविवेक॥ तवहिसरजालक
हीमहाग्रकुलायसुत॥ दोउंशिशुपाल॥२०
पंचबारधरमूरछ्यो॥ कर्नेसुभटबलिवंड॥ बार
सातअर्जुनधुक्यो॥ विक्रमकियोग्रषंड॥२१॥
दोऊंबरजेद्रोणगुरु॥ दोऊसिसुइकसार॥ रा।
षिग्रपारोसमदिग्रो॥ लोगसकलतिहिंबार॥
२२॥ दुरजोधनलेकर्नकों॥ गयोग्रापनेधांम॥
ग्राजुपेजुराषामहासुनिरविसुतगुनग्राम॥
२३॥ द्रोणउवाच॥ चौपई॥ धन्यधनिसुर
पतिसुतसुषदाई॥ सबतैंतुवपोरिषग्रधि।
काई॥ इहकहिग्रपनेकंठलगायो॥ केहैतो
तैंमोमनभायो॥ २४ जाउरकनेकल्योनरमाहि
तोहिनीरषिद्रुज्जनउरदाहु॥ गुरदछिनासब
सिसुमिलदेहुद्रुपदहीनेमटोसंदेहु॥ २५॥

अर्जुन उवाच ॥ जो अपमानो देहो आप ॥ सो
ई करिहौं मैं तुम परताप ॥ प्रथम हि दुरजोधन सौं
कहौ ॥ इह गुरु दछिना उन पैं लहौं ॥ २६ ॥ जो बैट
हु करि सकैं न आन ॥ तब सारौ गौं हौं सब काज
इह सब कहि द्रोण तहां जाई ॥ कौरव सजी चमु
सुष पाई ॥ २७ ॥ कियो द्रुपद सौं सनमुष जुद्ध तब
पंचाल कियो व क्रुद्ध ॥ बानन जुरयो समर भव
आई ॥ अंबर तछिन लीनौं छाई ॥ २८ ॥ तोटक ॥
द्रुपद सौं जर रंग ॥ सो दर सकल संग की नोर नरं
ग महा सरन के गन मैं ॥ बानन अकास छाइ दा
ऊ सम हाइ जुद्ध क्रुद्ध व ढौ सुछक्रुंड बीर निके मन
मैं ॥ केते सर जाल को प्रियोग कीयो पंचाल कोरव
विहाल कहं धीरन हीत न मैं ॥ सेना आकुलानि ।
देषि राष्यो छत्र कुल पांनी पंडुपुत्र पाचौ तहा आ

विजै०

॥३९॥

[illegible] य॰गाजेरनमे ॥ २९ ॥ दोहा ॥
अर्जुनकरिसंग्रामबहु ॥ जीत्योसोनरनांथ ॥ आं
नौंबाधिसुगुरनिकटचक्रत्तभयौसबसाथ ३०
॥ चौपई ॥ डार्यौमारकेचरननिसोई देषतअ
द्भुतगतिसबकोई ॥ बालमित्रताकीसुधिक
री ॥ विप्रद्रोणकरुणाहियधरी ॥ ३१ ॥ अतिहित
भूपतिकंठलगायौ ॥ देभूषनकंपिलापठायो थ
८ निअर्जुनगुरुद्रोणपुकारै ॥ तोबिनुमोकारि
ज्ञकोसारै ॥ ३२ ॥ राजायुधिष्ठिरउवाच ॥ सुनि
अर्जुनसोदरगुनग्रांम ॥ आजुकरीजयतेसंग्रा
म ॥ भयौहमारोसबमनभायौ ॥ दुरजोधनको
गर्बनवायौ ॥ ३३ ॥ द्रुपदरायविलष्योयहगायौ
महासोचउरअंतरभयौ ॥ जो राहिहतिकोप
रिहसुसारै ॥ ऐसेकोरबिचारविचारै ॥ ३४ ॥ पुत्र

सिषंडी ताकैं धाम ॥ तातैं सरैन ही मन कांम
जज्ञारंभ बोलि द्विज कीनौं भूपति अति करुना
रस भीनो ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ जग्यकुंड तैं जब कढी
कन्या रूपनिधान ॥ कै रति सची पुलोमजा है
मैंनका समांन ॥ ३६ ॥ नाम द्रोपदी तब भयो निर
षत दुहिता मैंन ॥ धृष्टदिवन पुनि कुंड तैं कढ्यो
पुत्र अनुमैंन ॥ ३७ ॥ राजाद्रुपदउवाच ॥ याक
न्या या पुत्र तैं कैहैं सब मन कांम ॥ पूरन करि
कैं जग्य कों हरष्यो भूपति धांम ॥ ३८ ॥ तब द्विज
गप सिरायकैं सब समदे रिषिजाल ॥ बरन बर
न सुबरन सहित सुरभी दे निहि काल ॥ ३९
इति श्रीमहाभारते दरपणे विजयमुक्ताव
लीकविछत्रविरचितायां अर्जुनविजयब
र्णनं नाम सप्तमो ध्यायः ॥ ७ ॥ दुपीभन ३० ॥

श्री॰ विजै॰ ॥५०॥

त्रिभंगीछंदः॥ कहमतिकीजेकोजनमझी। जेक्षेसवछीजेउरधरियेः मंत्रविचारहियैमों हारहिंभीमहिमारोहिसोकरिये॥ कछुविंजन कीजेवहुविषदीजैबोलसुलीजुभोजनकु
मुनिधावनगएसुनतहिल्याये वहु भाये मन पतिमुनिको
२॥ अतिआदरकीनोवहुसुषभीनो॥ आस नदीनोंनाहितबे॥ मनसुषभयेभारेअंधकु लारेआइजुहारेबंधुसबे॥ निसदिनतुमभा वत॥ हितकरिआवतसरसावहोअनंदघनें सबहीसुषपायोनेहवढायोमनभायोवहु कोबरनैं॥२॥ भीमसेनउवाच॥ सेवगजा नतमोहितुमकृपाकरतसबकोइ॥ तातेदि नप्रतिकोंइहांआवनकोमनहोय॥३॥ चौ पई॥ सहसहाथपनवारोआयोपवनपूत जेवनबेठायो॥ दसबीसकमनपरसेंधाई॥

सोईलेत्तिनकमैंधाय ॥ ४ ॥ दंडक ॥ दू
स्याकोफूरअतितामसकोमूरमहा ॥ कूर
दुरजोधनरहततासौंतेषमैं ॥ कालकूटफा
रिफोरिजोरिजोरिकेतेविषघोरिघोरिडारि ।
बकुभोजनअसेषमैं ॥ बिंजनअपारघृतसा
रकीयौभारआनिकीनौंहलाहलआधैंआ
धसविसेषमैं ॥ ल्पावतहीहारिजातस्वारजे
तोडारिजातभीमसेनमारिजातपातरीनिबे
कमैं ॥ ५ ॥ दंडक ॥ जबपिआंनतुचितकछू द
नहितद्दपिभाउमहाछलको ॥ जाननिमानतु
भोजनखातुनहीडरताहिहलाहलको ॥ दि
खिइतैउतिकोनकरैकछुपांनसुनौजलको घाहत
भोजनविंजनबृंदघनैंसुकितेनिजयेनल ।
ग्योपमकौ ॥ ६ ॥ दोहा ॥ भोजनकौंबीरालयो
ल

चल्यौ आपनैं ग्रेह ॥ आयगयौ तिहिं काल
विष ॥ अंग अंग सब देह ॥ ७ ॥ चौपई ॥ पुव
न पुत्र जब बाहिर आयौ ॥ जान्यौ भीम महा
विष षायौ ॥ आई लहरि गिस्यौ विकरार त
बइह सोचत बारंबार ॥ ८ ॥ तीनों मोल घुसो
दर आई ॥ तिन की इन सौं कहा बसाय ॥ भूप
ति तन मैं नैंकन क्रोध ॥ कौरव सौं को करै ।
विरोध ॥ ९ ॥ यौ सुमिरत जब छाड़े प्रांन ॥ प्रफु
लित कौरव भये निदांन ॥ बोले बैद नाडिका
देषै ॥ मुयौ हलाहल के चितलेषै ॥ १० ॥ वैद्य
उवाच ॥ हे अर्जुन ह्या के उर स्वासा ॥ तातें है जी
वन की आसा ॥ आयसु दीजै करै उपाय ॥ यौं सु
नि क्रोध कस्यौ वकुराई ॥ ११ ॥ दोहा ॥ तबै बैद्य
न जान्यौ कपट ॥ ग्रेह गये अकुलाइ ॥ जाकुक

एलेभीमकैं॥ आयोगंगानहाय॥१२॥ आयु
सुलहिरविप्रत्रसोदीनौंगंगाबहार॥ देवबि
माननिआरुहेरहेमोममेछाय॥१३॥ सुरउ
वाच॥ जीवहिगोसुतवायकोश्रीहरिसदास
हाय॥ सुरसरीजलमेसोंभयोपस्योपतालम्हजा
ह॥१३॥ दोहा॥ नासकदुहितांइंद्रमुष॥ अहि
लमतीइहनांम॥ देषिभीमसूरतिमदनप्रफुलि
तमईसुबांम॥१५॥ सिसुतात्तेपूजीगवरीमनब
चकरमचितलाइ॥ इकदिनसोविधिनांकरीर
हीमहाअलसाई॥१६॥ वासीपातीसोगवरीप्र
जीतिहिछिनआय॥ तबदेवीमनक्रोधकरी
दीनोताकोश्राप॥१७॥ मृतकमिलेतोकौंपुरष
जाकुसुरसरीतीर॥ आयलहोसोप्रांनपति
देष्योमृतकसरीर॥१८॥ लेराष्योसुषसदनमें

विजै०
॥४२॥

सषिसौंकहीवुलाइ॥ अबसोइकीजेजतन
धाकहुलेकुजीवाय॥१९॥ चौपई॥ ततछि
नहीतिनवुधिउपाई॥ जीरनपटकीगेदवना
ई॥ सुधाकुंडमेतछिनडारि॥ धाएपन्नगतहांक
भारी॥२०॥ रहैसुधाकुंडनिपैछाई॥ नहिंरंचा
ककोइलैजाइ॥ अहिलमतीविनयोअकुला
य॥ गेंदमोहिकिनआफोआइ॥२१॥ आनराय
वासककीकरी॥ गेदनचोरितातिलैदईलेसो
पवनपत्रदीगाडि॥२२॥ रंचकतामहिंअंमृत
लायो पायोभीमसेनकेमुषमेंडस्यो॥ जोयउघो
जनसोवनजागेपो॥ निरषिविवियायेषुफन॥
लागो॥२३॥ भीमदोधक॥ कोनियनजिंरि
वितुहराया॥ सोवनतेकितआयजगायेो
ग्वाललियेसंगकोहेवाला॥ चंद्रसपीतिनस्प

रसाला ॥ २४ ॥ कौ कहितू अब मो ढिग आई
कौ इह देस कहो सत भाई ॥ त्रियाउवाच ॥ आ
हि पताल सुनो सुब साजा ॥ बासक मो पीतु या
थल राजा ॥ २५ ॥ दोहा ॥ ताकि दुहिता आहि हैं
अहिलमती मो नांम ॥ गवरी कृपा पाय पुरुष
मो ग्रह करि विश्राम ॥ २६ ॥ अब अपनी सब बि
धि कहो कैहो आपनि दान ॥ भूपति मनि भूपाल
से सब गुन ग्यान निधांन ॥ २७ ॥ दोहा ॥ सो मब
सहम सुषद त्रिय छत्री॰ जाति सुजांन ॥ भूप।
ति जंबूदीप के महि मंडल मैं आंन ॥ २८ ॥ तु वसं
गदा घत माल वकु कहों कोंन इह भाव ॥ जित
नित ते इदे षिये मो सब बरन बताय ॥ २९ ॥ अ
हलमतीवाच ॥ ये पी हूषकें कुंड नो जग को जीव
न मूरि ॥ रष वार वकु सर्पत हां रहे च हो दि सिपूरि
॥ ३० ॥ भीमवाकं ॥ चौपई ॥ मैं अब कुंड सकल

विनै० ॥४३॥

लखिपाय॥ सोयोसदेवकरौमनभाय॥ अहल
मतिनठकलेताहिइह कछुबातननीकीअ
ही॥३१॥ जाहैमालकितेलिपटाये रंचक
सुधासकेनहिपाय॥ करिविवाहजोमोसु
लेहु जानिहितुमानेसबनेहु॥३२ दंडक॥
भारेभारेव्यालमहाकारेकारेविकरारकाल
ऊकेकालजहांतहांधाईजायगे॥आननकी
ओरजेश्रवतविषव्यालजोरघोरघोरचऊंओ
रकिहांधोसमाइगे॥सहस्रमुषीएकअष्टमुषी
तेअनेकएकएकमुखीआसीविषआइलप
टाइंये॥जोरौंदोऊहाथकहौमानोप्रानानाथ
प्यारिदेषिऐसेसाथकेंसेंधीरजधरायगे॥३३
अस्लमती॥ फूरैंनमंत्रमूरिएकएकमाल
जोडसे॥करोकहाविचारआप आयआयुजा
यसे॥ कछूसूनैननारिबातमीमसेनयोकहैं

सरोषमांहिदेषि[illegible]कहो । कें । इहांरहे ॥ ३४
भुजंगप्रयात ॥ लषैंकुंडनैंनानिसांभीआवे
हौंसबैनागकेजूथकोंत्रासदेकुं ॥ चल्योधाय
कैंनारियोचित्तसोचै ॥ करैंदुष्पसोनीरनैंना
निमोचैं ॥ ३५ ॥ कहाकर्मकीनोमुवोमैंजीवायो
दुकुभांतिसोंकालकेषानआयो ॥ करैंजोक
हासो । पराजयपिताकी ॥ विनासेंकिधौंजुषमें
देहयाकी ॥ ३६ ॥ दुकुभांतिऔसेमहादुष्पकैहै
भैदांनमाकोक्रपासिंधुदैहै ॥ महाक्रोधकै
पौंनकौपूतधायो ॥ हतेनागसोकुंडमैंपैठिआ
यो ॥ ३७ ॥ महाक्रुद्धकीनोसबैव्यालधाये ॥ चहुं
ओरघेरैसबैकुंडछायो ॥ उन्होंकोपिकेभीम
धायोनहांतैं ॥ भगेनागसोनैनदेष्योतहांतै
ऊ ॥ दंडक ॥ राकमारेतोरिकेमरोरिमारेये

विजै०
॥४४॥

कनामै गएक मोरे मीडिकै कहांलौंकहौंकर
नी॥एकधाइधाइकैंधुकाइव्हयेधावत हीधर
धरधरकत एकपरेधरनी॥एकनकेफारेफ
नफरफरफरकत थरथरथरकंपिभगेएकलै।
लै धरनी॥भागिभागिएक गयेधासिकनरे
सधागेजाइकैंकहैकहबातबसैबरनी ३९
॥नागउंबाच॥चौपई॥ आयौअसुर एक
अतिभारी॥कौंकुंनमांनत आंनतिहारी
कुंडराककरिलीनेंपांन॥मारेसोसबनागनि
कौमांन॥४०॥सोषतसकलकुंडबैकहै॥पठ
वोकाऊसोसुधिलहै॥बासककहैअसुरन
हीहोइ॥नृपतिजुधिष्टिरबंधवसोई॥४१॥भी
मसेनहैताकोनांम॥इहथलजीत्यौतिमसं
ग्रांम॥बाविनइतीवलीकाओर॥सोमवंस

सुभटन सिरमोर ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ जुधिष्टिर
नरनाहकी देऊ दुहाई धाइ ॥ भीमसेनकुंउ
निनिकटसकैन नियरो आइ ॥ ४३ ॥ दोध
क ॥ पायरानाई सुधा बनषायो ॥ तुरतहि
पवनपुत्र ढिग आयौ ॥ आनजुधिष्टिरनृ
पकी रानी ॥ कोंनि भीमकुंउ निकोकानी
४४ ॥ भीमसेनउ० ॥ जौनदुहाई देतेआइकुं
उसकल हौंलेतो षाइ ॥ कौंनतु महे वतायो
भेद ॥ इहमनमे उपज्यौं वकुषेद ॥ ४५ ॥ सुधि
पाए बासिक उठिधाये ॥ आय भीमतबकं
ठलगाये ॥ वकुसुषसंजुत लैग्रहगयो ॥ अष
कुलीमन आंनदमयो ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ सुभघ
टिकासुभलगनगनि सुभबासरहि विचारि
अहलमती भीमहि दई ॥ करि विवाह सुषका
रि ॥ ४७ ॥ पाईदायजो पायकै विधुबरनावर

वि०
॥४४॥

नारि॥ हियहुलासकीनोमहा बदनमयं कनिहारि॥४८॥वकुप्रतापपूरनकलाभीमसेनउपोंभांन॥ फूलतिलषिअंबुजमषी सबगुनरूपनिधांन॥४९॥दोहा॥ धर्मपुत्रमुवराइसहदेवसौंयोंकही॥इहसंदेहमो आयभीमहिभयोवलंबवहु॥५०॥सहदेवउ०॥ गयोबीरपातलभूपरिनहीसुभमिपति॥कौरवकर्मकरालकरिभोजनमेविषदीयो॥५१॥दोहा॥ दीनोगंगबहाइ सोपस्योपाताॅलहूजाइ॥बासुकतनयातिहिबरीरहततहांसुषपाइ॥५२॥मध्योधांवनभूपतबपहोच्योंभवनपताल॥बोलेहोतिनसौंकही जुधिष्ठिरभूपाल॥५३॥पवनपुत्रमांगीबीदाबासुषकेपेसुषपाई

नायसीमतीनकौचलैं अहलमतीसमझा
य॥५४॥चौपई॥सबनागनिमारगदरसायो
निकसिभीमभुवऊपरआयोधर्मपुत्रकैआ
नंदभयो॥कुंतीकौसबदुखमिटगायो॥५५स
कलअनुजमिलिआनंदछयोमहादुष्टकुर
नंदनभयो॥दियोदुष्टसुरसरीबहाइ॥कहौं
कहांतेअगयौआय॥५६॥सकलजगतअ
पजसकैगयो॥अबइहसालहमारोभयो।
अबकछूऐसोकरौविचारि॥भीमसेनकौं
सकियेमारि॥५७॥राजायुधिष्टिरउवाच॥
अंधसुतनिकोमांनहतिकियोसुजससंसा
र॥गांधारीकोगर्वअबगयोबीरइहिवार
५८॥इतिश्रीमहाभारतेपुराणेविजयमुक्ता
वलीकविछत्रविरचितायांअष्टमोध्याय:८॥
दोहा॥अश्वनिकस्माअष्टमीनरनारिन

कीभीर॥ दुजन गजनारिन सजे भूषन बस
नसरीर॥१॥ महामलीनकौंताभई अर्जुन
निरषी नैंन॥ कही विसूरति माइ कत सोक
हि मोसौं बैन॥२॥ कौंता उवाच॥ मेरे पांचु पु
त्र तुम बसत बंधु बिचारि॥ सोर गौंदा लै आ
वही सकल मृत्तुका टारि॥३॥ करि गज पूजैं
आजु सो गांधारी सुषपाय॥ तिन सों हम सों
कौंन विधि करि बराबरि जाय॥४॥ अर्जुन उ॥
पंच पुत्र तेरे बली कौ मलीन विच चित्त औ
रावत आनौं इंद्र दंतै रै पूजन हित॥५॥ सवैया
काहे कौं माइ विसूरति या बिधि वांन औसे
षनि अंबर छाई ऊ॥ बाट करौ सर जाल प
ठेन भ भूमि अकास हि भेटक राऊँ॥ मानह
तौ दुरजोधन कौ बल॥ कौरव कौ सब गर्ब न
वाऊ॥ आनौं भुजा बरसौं औरावत अर्जुन

तौ तुव पुत्र कहाऊं ॥ दोहा ॥ करि प्रण
म गुरु द्रोण कौं लीनौ धनुष चढाय ॥ हित
ऐरावत सुरपुरी ॥ दीनौं बांन पठाय ॥ ७ ॥ अ
र्जुन इष्ट देव नि लष्यौ ॥ कह्यौ इंद्र सुनि लेहु
तुव सुत मांगत नुव गुरु द ॥ करो कृपा सो देहु
८ ॥ जो न देहु ऐरावतैं तौ वह बल करि लेहि
अमरपुरी भट भंजि कैं ॥ दुष देवनि कौं देहि
ए ॥ दैं न कह्यौ वारन सुनी देवन की मनुहा
रि ॥ क्यौ धरजैहै स्वर्ग तें ॥ सो सब कह्यौ बि
चारि ॥ १० ॥ चामर ॥ सब देवनि मिलि बां
न पठायौ ॥ भूतल अर्जुन कौ ढिग आइयौ
ऐरावत कौं मार्ग कीजै ॥ इहि बिधि बारन
आपन लीजै ॥ ११ ॥ बांन अनेक अंबर घेरं
ऊं ॥ वारन कौं नभ बाट वनाऊं ॥ इंद्र सभा मा
हि बांन पठायौ ॥ देवनि इंद्रहि जाय जनायौ ॥ १२ ॥

विजै० ॥४१॥

॥दोहा॥ आपासुर पतितबदई साधिदि
येसुरपाल॥ प्रजाकरिपठवैइहांवारनतेंही
काल॥१३॥ आयोपत्रीभूमिसो अर्जुनल।
षिएभाय॥ निकसिनगरतेंसुभटतबली
नैंधनुषचढाय॥१४॥ करिप्रनांमगुरुद्रो
एकौं॥ कृस्नहिसीसनवाय॥ सरपंजर
दृस्योतबैलयो ब्योम सबछाई॥१५॥ दंडक
ब्योमकौंपठायेबांन प्रथमसहसएकदूस
रे सहसदससवर्गकौंपठायेहैं॥ तीसरेअ
युतपांच॥ चौथेलछिएकसर॥ एककोरि
पांचयेंआकासमारग पाएहैं॥ षष्टमकि
रोरदस अर्वराकसातवेंजूकहालौवषानें
सरजालजेतेधाएहे॥ दृस्यौसरलोकतेंधरा
लौंसरपंजरविलोकि अंधपुत्रसबैबंधुसस
वायेहै॥१५॥ चौपई॥ देषतकोतिकस

बनगजाल॥ कैरवकुललखि भयो बिहाल।
कौतिक बिदुरपितामहभूले॥ न्रपतिजुधिष्ठि
रतनमनफूले॥१६॥ अर्ज्जुनमहापराक्रमकी
नों मित्रनिसुषदुष्टनिदुषदीनों॥ सकलव्यो।
मसरपिंजरछायो॥ उनैमहामेघजनुआयो॥१७
॥दोहा॥ जोजनद्वादसलछिलौं सरपंजरनभ
छाइ॥ देषतहीसवसुरनमिलि कहीसक्र।
सौंजाइ॥१८॥ आगपालहिसुरराजकी चल्यो
मत्तमातंग॥ गर्बधर्‌यौसरजालकौ करौंका
पिकैंभंग॥२०॥भुजंगप्रयात॥ धस्योव्योम
तेंगर्वकेसक्रहाथी॥ किधौंमेघकेआघके
सैलसाथी॥ कहेवांनकैंपिंजरेच्चूरिडारों धरा
मेंधस्योंजायकेंरोपिपारौं॥२०॥ जहांजोरिकैं
केकरीवानमोरे॥ तहांइद्रकौभूतलेबीसत्रोरे
चल्योमत्तमातंगजोभूमिआयो॥ लख्योमात

कुंतीमहासुष्यपायो॥२१॥भीमसेनउ०॥
नऐसोसुन्योंमैननैंनानदेष्यो सुतोमैं
ऐचंभोमहाचित्तलेष्यो॥महावीरआ
कासकोपच्छ्यकीनो॥भयोपच्छ्यताना
मश्रीरामदीनो॥२२॥अर्जुनउवाच॥का
रोनुऐबेमाईपूजाकवरकी॥नकीजेक
छू वेदएकोघरीकी॥तबैमांतआनंदजी
माहमांन्यों॥कहोकोसुतोधमकेद्यौंस
मांन्यौ॥२३॥गयेसवेसंसेसुसंदेहजीकेभु
जादंडपूजैंतबैपच्छ्यहीके॥महाधन्य
होंपच्छ्यसोपुत्रजायो॥दीयेवारनेओर
कीनेबधायो॥२४॥दोहा॥ आनंदजु
तपूजाकरीसबबिधिविख्यातवनाइ॥गांधा
रिलखिलखितबैमनहीमनपछीताइ॥
२५॥करिपूजामातंगकीफिरियछयोसुर

लोक॥ दुरजोधनकों आदिदै भयो सबनि
के सोक॥ २६॥ जुधिष्टिरउवाच॥ धनि अ
र्जुन तैं राषियो लोकलोक मैं नाम अबन
करै रे गर्ब बै रहै समो के धांम॥ २७॥ दुर्योधन
को आदिदै भये गर्ब के हीन॥ नेक सुहाय
न धांम धन छीन छिन कै गये छीन॥ २८॥ गं
धारीउवाच॥ कहा भयो सुत सो जनें सरैं न ति
नतें कांम॥ जाये अर्जुन भीम उनि धनि धनि
कुंती बांम॥ २९॥ देषि पराक्रम इकु निकै।
लष्यो नही कुसरात लेहै तुम तें राज राइ हह
सूफ़त है वात॥ ३०॥ लाज भई दुरजोधनें दु
सासन के चित्त॥ थाके अमित उपाव करि
कौं तापुत्र निहित्त॥ ३१॥ दंडक॥ राजसुहा॥
यन साज सुहाइ न काज सुहाय नही मन मां
ही॥ धांम सुहाई न धांम सुहाय न बाम सुहा

विजै०
॥४९॥

यहीयसुधिनोही॥ देससुहाइनकोस
सुहायसुकौरवकेउररोसव्रथाही॥ पांन
सुहाइनपांनसुहायसुहायनहीपंडुके
पुत्रकीछांही॥३२॥दुर्योधनउवाच॥ अ
र्जुनभीमभयेबलीकीजैकोंनउपाइ॥ स
बमिलिसोमननमेंधरो॥ सालहमारोजाय
३३॥ इतिश्रीमहाभारतेपुराणेविजयमुक्ता
वलीकविछत्रविरचितायांश्रीरावतआग
मोनामनवमोध्याय॥९॥दोहा॥ गांधारी
भ्रातासकुनिबोलिलियोअकुलाय॥ भी
षमअरुबोलेबिदुरमंत्रकाजसुषपाइ॥१॥
दुरयोधनउवाच॥ जैसेघोजेपंडसुतसोम
तकहोबिचारि॥ बीचिहीबोलेसकुनित
बदेऊयेहमैंजारि॥२॥ वरुननगारलैकोट
करितामेदीजेबास॥ चहूंदिसअगनिप्रजा

रिकैं होयसबनिकोनांस ॥ ४ ॥ चोपई
भीषममंत्रकहनमहीपायो ॥ सकुनि
कह्योसोनृपमनभायो ॥ समद्योसोई
कोटकरावहु ॥ बेगिही चलोबारमति
लावहु ॥ ५ ॥ दंडक ॥ तेलभरेघटआ
निधरेघृतकेभरिकैंघटकेतेसवार ॥ त
लदेमूलमेंरारअपारसलाषमिलौंकि
येगंधकगारे ॥ अंतरसूतनिरंतरकाठ
वनाइकैंपावकधामसुधारे ॥ चित्रित
चित्रसवारिदिवालनिदेषियेसत्रसबे
उजियारे ॥ ५ ॥ दोहा ॥ बरषदिवसबीत
सकुनिकह्योनृपतिसोंआइ ॥ सपत्रों
मंदिरपंडसुतदीजेतहांपठाय ॥ ६ ॥ गी
तिका ॥ बोलिलीनोविदुरभीषमलेसभा
बेठारियो ॥ नृपजुधिष्टिरआदिदैसबपं

विज्ञै०
॥पू०॥

दूपुत्र ऽकारियो॥ बांतभीषमपैकहाई।
मंनिश्राइसुलीजियै॥तुमहेतमंदिरबर
नराओबासतामहिकीजियै॥७॥धर्मसु
तकेहर्षउपज्योतुरतसबरथपरचढे॥रा
जआग्यामानिकैंगुतमांतुपरबाहिरक
ढे॥विदुरसाथचलेपठावनसकलसंश्रा
तिकहैं॥वेठिकेपरसन्नमेनिश्चिंतभूप
तिनारहैं॥८॥चौपई॥अतिसचेतर।
हियोग्रहमांही॥आपुउठायोतुमवह
नांही॥जायबासनाग्रहकीलीजो॥आ
पसुगातौतबकछूकीजो॥९॥पैठनपैर
नुकोउआवेसोनहीभेदकघूलबिपा
वे॥बुधिदेविदुरगयेफिरयांम॥पकुचेन्र
पपुरआयेधांम॥१०॥ग्रहप्रवेसकीयो
अवपाल॥सन्मुषधीकमईनिहिंकाल

॥५०

सहदेवकहैसुनौमाहाराज॥रहमइहां।
नहीनीकौकाज॥११॥नकुलउवाच॥कौं
नहस्तनापुरपगधारो॥जाभैकहाविचा
रबिचारो॥कहैभूपतउहिपुरनहिजैहै॥दु
षसुषबीरइहांहमरैहै॥१२॥जौदुषविदु
रपितामहपायो॥सतभ्रातानउरआनं।
दछायो॥विदुरकह्योसबतैसोदेष्यो॥पा
वकपुंजधांमसोलेष्यो॥१३॥सावधांननि
सिवाससरहे॥मरमनकाहुसोनकैहे॥दु
रजोधनप्रतिहारबुलायो॥भेदसकलदे
तहांपठायो॥१४॥राजोवाच॥हमसोंअ
नरसकरितुमजाहु॥जहांजुधिष्टिरहैनर
नाहु॥भूलैअगनिसवारोधांम करिहों
हौंतुवसबमनकांम॥१५॥सुंदरी॥आयु
सुपाइगयोवहतावल जायअनामकेर

प[हा]र्लीपल॥ जायकेहेतुरजोधनकेदुषपे
टविसासकहैइतिकीमुष॥१६॥ दोहा॥ ब
चनसमारेविदुरके॥ कपटीउरप्रह्विचांन
सबबिधिसकलसचेतकै कस्यौपबरिथ
लआनि॥१७॥ मालतीक॥ भीमसेनधा
यो॥ सुरंगषिनायो॥ बनकहकीनौं पंथ
नबीनौ॥१८॥ जबइहआरैकौंननिकारे
तबमगकीनौंसुरंगनबीनौ॥१९॥ चौप
ई॥ हमहिमुयेजोकौरवजानैं॥ औसोस
बमिलिकेमतठानैं॥ भित्तुकपंचदिवस
इकआये तननिवहसंगतिल्याये॥२०॥ दे
षिभीमइहकहविचारि॥ बनमैंजाहिइम
हेइहांजारि॥ वक्रविधिभोजनतिनहिक
राय॥ उतिमठंमतहांपोढाये॥२१॥ दोहा॥
जबहीबीतीअर्द्धनिसिसोवतसबहीजां

नि॥ कहीभीमनरनाहसौंचल्योविपिनमु
षदांनि॥२२॥ सुरंगबाटसबमिलिकैलैज
ननीतिहिकाल॥ लेपावकतबपोरिपरभी
मगयोउत्ताल॥२३॥ ऊकदईप्रतिद्वारसिर
दीनोपोरिजराइ॥ महलमहलपरिजारिकैं
गयोभूपपैधाइ॥२४॥ चौपई॥ बाटलइव
नकीउठिधाए॥ मंदिरदुर्गमकोटजराए॥ मूं
दिलयोमगकोउनजांनो॥ जातचलेथकिकै
थहरानैं॥२५॥ भीममहीपतिकंधचढायो॥ प
ष्यतबेउरसौंलपटायो॥ बंधवदोयलये।
अकवारी॥ सीसधरीजननीसुषकारी॥२६
लेदसकोसगयेबनमांही॥ भोजनमैंमनक
छूनाही॥ धांमजरयोसुनिकेकुरराय॥ बैठि।
सभावकृतेपछिताइ॥२७॥ सुष्यवढ्योअति
हीमनमांही॥ देषतलोगनकोयछितांही

मालमिट्यौउरकोदस्हजांम्यौं ॥ सुघभएतब देषेकरगपानैंयां ॥ २८ ॥ दोहा ॥ नयौजन्मतनमें तबेसतबंधवउरफूल ॥ बडीकृपाकरताक रीनसेहमोरसूल ॥ २९ ॥ उतपांडवबनमह गयेउतरेबटकीछांह ॥ सबसोयेपहरेउगे भीमसेनबनमाह ॥ ३० ॥ नरदेहीकीबास ॥ लहि ॥ आईत्रियगलगाजि ॥ नांमहिडंबीरा कसीघोरमहाबपुसाजि ॥ ३१ ॥ तनदीरघदी रघउदरदीरघदंतकराल ॥ दीरघमुषदीरघ श्रवनदीरघवाकुसुवाल ॥ ३२ ॥ आईगर्जि तनारिवहभीमसेनमनीसंक ॥ तरवरलेसो केगयोकरीनभयकछुअंक ॥ ३३ ॥ देषतमा हसभीमकोभईपरमबपुबाल ॥ राकाससि षोडसकलारूपलष्योत्तिहिकाल ३४ ॥ त्रिय उवाच ॥ मोमनरोचनआपनठांनों ॥ आपु

त्रियाकरिकेउरजांनों॥ मेतुमदेषिवलीवर
कीनें॥ नित्यचलोंतुमआइसुलीनें॥३५॥ आय
हिरंवतहांतबगाज्यौभीमइतैतुमलैंकरिसा
ज्यौ॥ कोकहिनारिकहांइहआयौभेटकछून
हीमेंअबपायौ॥३६॥ हिरंबी॥ दोहा॥ मेरो
बीरहीरंबइहकोजेअूह्वनीसंक॥ कछुविस
मोजियजिनकरौलज्याधरौनअंक॥३७॥ मोगा
जतधीरजरह्यौतेरौवृष्टिनिधांन॥ इहनकछू
तेरौकरैंहत्तिबरयाहिनिधांन॥३८॥ भीमसेन
उवाच॥ तेरोकहाभरोसोमोही॥ बीरहततरि
सलागैतोहि॥ तबयाकीत्तहहियसहाय तब
कहिमेरीकहाबसाय॥३९॥ हिरंबी॥ दोहा॥
जोंननतोकौंप्राणपतिनहिराषतचितओर तो
समयामैंबलनहीहतहिरंबइहठोर॥४०॥ भा
यौअग्रअरुभीमसौंअतिगदमिषिप्रहार
महायुद्धकरिधरपरैंकैदोउविकरार॥४१॥

निकटनिपायेभीमतबजागेबंधबचारि ॥ नि
श्चरसौमंडतसमरअवलोकैासुषकारि ॥ ४२ ॥
॥ दोधक ॥ अवलोकतभीमहीलाजभई ॥ तब
दानवकैंभुजकंष्टदई ॥ वरकैंवहदानवबीर
हयौसबबंधुनकौंवकुसुष्पदयौ ॥ ४३ ॥ गीति
का ॥ धर्मसुतकोमांनिआइसुसीषकोंतापेल
ई ॥ तवहिरंबीभीममाही विधिकरीजेसीच
ही ॥ रहतविते दिनकितेता विपनमेसुषसाज
ही कंदमूलहिषाततषीनषिनिजीवकायोसा
जही ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ रहतकितेदिनजबभये
ताकाननकैंधांम ॥ पुत्रहिरंबीकैभयौघसौ
करूकानांम ॥ ४५ ॥ वितिकिते दिनतवगये ॥
तज्योविपनइहठांव ॥ छाडिघरूकाताथली
पहुचेइकचकगाव ॥ ४६ ॥ रूपकपिरियाके
सडेरहैएकद्विजधांम ॥ उद्दिमकरिभोजन ।
करैसबबंधवगुनग्याम ॥ ४७ ॥ इतिश्रीमहा ॥

भारतेपुराणेविजयमुक्तावलीकविछत्रविरचितायांग्रंथरूकाजन्मवर्णनंनामदसमोध्यायः॥१०॥

त्रिभंगी॥ इकचकनगरीसबविधिआगरीकीरतवगारीसकलदिसा॥पुरनरसबराजतदुषनिभाजतसाजतसोकनिस्वासनिसा॥ कंपतथरथ्थरगादानवघरघर॥सोचसकोचमहादिनप्रतिनरमारैकितेसंघारैबरनौनिसचरकमकहा॥१॥दोहा॥नासजानिपुरनरसबैतबइहकियोबिचार॥दिनप्रतिदीजैयेकनरचैंनलहैसंसार॥२॥निसचरसौंकीनोबिनयसबहीमिलितरजाइ॥प्रतिदिनकैंतुवभक्षहितनरएकपठैचेंआइ॥३॥मानिविनेप्रतिद्यौससोभक्षकएकनरलेहि॥जाकोजबहीऔसरो॥सोभक्षककोदेहि॥४॥विजतरुनीकैंधामजहबसतजुधिष्टिरराई॥ताकेसुतकोओसरो॥पऱ्योइकदिनआई॥ता

अकुलाई

॥५ सोरठा॥ द्विजतरुनीपछितातइ॥ बारवार धरमूर्छै॥ फिरफिरइहपछितातई कौंनका लिइहपुरतज्यो॥६॥ दोहा॥ मोहमहादिषत भयौकुंतीकोउरमांहि॥ ततछिनताकोदु षकह्योभीमद्विपासबुलाहि॥७॥ भीमसेन उवाच॥ याकेसुतकेपलटेजैहो॥ फिरिमिलि होंजोजावतरैहों॥ भोजनदानवहितजोभयो भरिकैमहिषभीमसंगलयो॥८॥ दांनउठाउ तहांचलिआयो बैठिभीमतहांभोजनषायो धायोअसुरक्रोधकरिभारी॥ वज्रपातसमदो हथमारी॥९॥ दोहा॥ मष्टिप्रहारकीयोअसु रआपसक्तिअनुसार॥ भीमनआन्यौंचित मेंभोजनभषेअपार॥१०॥ चौपई॥ मारतही सबभोजनषायोसंकनहीअपनेउरल्यायो। बीरउकुमिलीकैरनकीनों॥ कोऊनहीतीन मेंअतिहीनो॥११॥ जुद्धभयोअतिहीगतिऐ

सो ॥ राघव रावन को रन जैसो ॥ ग्रीव दियो प
गढ़ुषु संघारयो ॥ अेचत ही पुर बाहिर डारयो ॥
१२ ॥ दोहा ॥ द्वा ढोकी नैं पवरि पर म्रतक
असुर सो लाइ ॥ प्रात होत पुर नर सकल नि
रषि भगे अकुलाइ ॥ १३ ॥ सब ही कौ संका भ
इ सकैं न नियरे जाइ ॥ है दानव निरजीव इ
ह ॥ कही भीम इह आइ ॥ १४ ॥ भीरमसेन ढि
ग आइकैं संभ्रम दियो भगाइ ॥ इह गति जा
नि व्यास मुनि तब ही पहुंचे आइ ॥ १५ ॥ व्या
सोवाच ॥ पवनपुत्र मारयो असुर सबल
गभयो चवाउ ॥ अब सिघ मांन कुंवे बेगि ही
नगर कंपीला जाउ ॥ १६ ॥ मां निसि ग्रषि रिषि व्या
स की तीह पुरपो हो व्यो जाइ ॥ होत सगुन स
हदेव सौं कही न्रपति सुष पाइ ॥ १७ ॥ चौप
ई ॥ कैसे सगुन भये अब भाई ॥ सो सब मो
सु कहि सम झाई ॥ सुनो गुसाइ सुगन प्रभाऊ

विजै०
॥५८॥

सबहीकेमुषह्वैगयेकारे॥धृष्टिदिवनतबसं
कुचिहिदेषि॥करतधृष्टकनाकवरविसेषि॥२८
॥धृष्टद्युम्नउवाच॥सूरनहीसूरनमेक्रूरमहा
क्रूरनिमैंदुष्टकिधौसूरनिमैंसूरबुरवाइकौ
मूढमहामूढनमेगुनीनयंत्रगूढनमैसुगर्व
हीअरूढकहासंग्रहवराईकौ॥ऐसोअ
बवेकीहैकुटेवटेवटेकीजिंहिंतासौंएकमे
कीजोनषोजहैभलाईकौ॥नाहिबलीबली
नमैंछलीमहाछलीनमैंदेषियेनमुषऐसे
कुटिलकसाईकौ॥२९॥बारिलाक्षाग्रहमैं
पंडुपुत्रदहिजाई॥होतोजीवतपछ्यानोले
तोधनुषचढाय॥३०॥जंत्रबारदसबेधतो
महाबीरबलिवंड॥मुनिसुनिवाढौकर्न
तबबाढोकोपअषंड॥३१॥दोहा॥जोमा
रोंअबद्रुपदसुतकौंनछुडावहितोहि॥मे
रोमरमननलहैकांनिमषकीमोहि॥३२॥

सोरठा॥ चल्यो करणि धनुपास बर जिनि कह्म तब यौं कही॥ धारि देकु दृह आस बेध्यौं जाइन जंत्र दृह॥३३॥ जो बेधे इक वांन सो तो जगमै जस होतो॥ हारैं होत कलंक व कुरेला झिहे गोत॥३॥ रूपक पिया के कियें अर्जुन बचन प्रकास॥ नही सभा समरथ्थ कोई बधे जंत्र आकास॥३४॥ राजा द्रुपद॥ कैं भूपति कैं तपसी होई॥ राहाबेध करै जो कोई ता उर कन्या तेही काल॥ डारै अमल कमल की माल॥३५॥ तब चलि अर्जुन आगे गयो। धनुष उठाय हाथ सौं लयो॥ अति कठोर धनु तान्यौं जहां भीमसेन मुष चाह्यो तहां॥३६॥ दोहा॥ भीमसेन बलिवंड गति अर्जुन की पहिचांन॥ कोमल करि धनु पथ्थ कर॥ दियो बारदस तांनि॥३७॥ ले धनु गयो कराह तट इक टक ताहि निहारि॥ माई पाई मीन की रछो

षांनउरधारि॥३९॥ दीठिमूंठीमनएककरि
वेध्योसोसरएक॥ फोरिगयोइषएकड्गकोति
ककरतअनेक॥४०॥ दोधक॥ छ्वकिगयो
नरएकबषांनैं॥ वेधगयोसरएकतेजांनै॥ वा
ललियेकरमालहिआई॥ अर्जुनकेतवाही
उरनाई॥४१॥ देषतकरनमहारीसभीनैं दा
रुनकर्मम्हाइनकीनौं॥ लैतपसीअबयाकु
जैहै॥ लाजसबैभूवपालनऐहै॥४२॥ दोहा॥
कर्णचढयोकोपिधनु देषतसवभूपाल॥ नि
रषिसोचउरमैभयौं विकलभईउरबाल॥४३
अर्जुन०॥ सवैया॥ चंद्रमुखीकितसोचकरै
जायगर्वहरौकुरुनंदनकौं॥ आजुकरौछिन
मैरनमैंजयजुद्धजुरैंजम आयकैंजो॥ हौंसम
रथ्थअकेलोइवेकिनिसोदरजूसेहिथाइ
केसों॥ जौंनवधौंतोलजाउपिताकहअर्जुन
नामकहायकैंतो॥४४॥ दोहा॥ कोपेदोउवी

ररनरह्यौबांननअछाय॥ लोपेसूरजतमभयौ
उपमाकहीइनजाइ॥४५॥ देष्यौकर्नप्रचंडरन
पथ्थकोपर्यौकाल॥ रुद्रबांनवेध्योकवच
विकलभयौबेहाल॥४६॥ तबहीकर्णछाडयौ
समरजैजैकरित्रिहिकाल॥ दुरजोधनइतभी
मसौंकीनौजुद्धकराल॥४७॥ कर्णउवाच॥
अरेकपिरियाकौंनतूमोसौंकहौसत्यभाइ ते
रेइषअैसेलगेज्यौंअर्जुनकेघाइ॥४८॥ यौंक
हिकर्णपरायगयौ॥ भीरेभीमभुवराइ॥ मह्त्रजु
द्धकरिबीरद्वैथाकिरहेअकुलाइ॥४९॥ चौ
पई॥ पवनपुत्रअरुपथ्थकेअैसेउतेप्रहार
वैसोइमैंहूलछ्यौबलदीनौकरतार॥ पवरक
रिभूपतिभीमउछारयौ मह्त्रजुद्धकरिभूपरिडारयौ
जैजैकारपथ्थतनवकरयौ सम्हरयौभीमकोपव
ऊभरयौ॥५०॥ मारयौगुरजगरयौभुवराउ॥ ठाडोभी
मकरैनहीघाउ॥ चेतिफेरियौकरैनरेस॥ तूको

सुभटतनपीकैमेस॥५१॥दोहा॥पवनपुत्रअ
रुपथ्थकेऐसेऊत्तेप्रहार॥वैसोईमैकलछ्योब
लदीनोकरतार॥५२॥सोरठा॥सहदेवतहांआ
इगहिकरलैभीमहिगयौ॥द्रुपदसुतासगलाइ
पक्रंचेकुंतीनीकठसव॥५३॥युधिष्ठिरवाकं
॥सुनिसुनिमातमहासुषदाईआजुकछूहम
भिछ्यापाई॥तुवआग्यासबबंधवमांनै॥सोत
जिओरहिचित्तनआनैं॥५४॥कौंताउ०॥पां
चौबंधनसुतुम्हैपत्रआईबऊनेह॥जौकछू
पाईभीषतुमबांटिसकलमिलिलेऊ॥५५॥दो
हा॥भषजोयोतवपथ्थकौपांचालीअकुलाई
॥अर्जुन॥मातासौसुनिसुषदत्रियबचननन।
मेंआजाय॥५६॥निरषीकौंताद्रोपदीमनहीम
नपछिताइ॥बचनझनसोमैंकह्यौपुत्रनसकैं
नसाय॥५७॥आयेहलधरकृस्नतहांजानतस
गरोभाव॥करिकौंताकौंवंदनामिलेजुधिष्ठिररा

व॥५७॥ तबबिचारिकैंद्रुपदनृपधृष्टद्दिवन
सुतबोलि॥ आइकपरियाकौंनयेभेदलेयसु
तषोलि॥५८॥सुंदरी॥नीचकिधौंकोईउत्ति
महैंनर॥कैंवनमैंकिवसैंवनसुंदर॥श्रीजदु
नंदनभूपतहेजहां॥आइदुस्योसुतभूपतिको
तहां॥६०॥बातवितीतकहीभूवभूपतिकुस्म
सुनीवकुधाहरषीमति॥शछहिपंथहियोंज
दुनायक॥तेसुषआजुद्योसुषदाइक॥६१॥
दोहा॥राइवेधककसौंभलौसुनियेपथ्थसु
जांन॥गर्वनवायोकर्णकौमास्योकौरवमा
न॥६२॥अर्जुनउ०॥सवैया॥कष्टपस्योज
वहीजहांजायकेराषीतहीसबपेजहमारी
मांझस्वयंवरद्रोपदीकेअतिकर्नहिगर्भविगो
तहांभारी।जीतिकैंबीरधनुर्धरथीरसआजु
लईवरकैंबरनारी॥काजकहौसरतो।किहि।

विजे० ॥५८॥

भांति जो रहो तिसहायन आपमुरारी ॥ ६३ भलो
दिठानों करण रण इह सराहों नाहि ॥ भीमक
हे कुरराज हरि वडो बली वह आहि ॥ ६४ मो ।
अघ बायो जु द्वमैध नि दुरयोधन राउ ॥ ६नतो
एक नमेषजो करतेसबैसहाय ॥ ६५ ॥ दोधक ॥
धृष्ट दिवनिसगारी गतिजांनी कहापीतासों
बिधिसुषदांनी ॥ उ छत्री कुल उतिम आहि
न ही कपरीया जानों नाहि ६६ हरिहलधर
तिनपैं चली आये ॥ देतवडाई वकु गनगारा
इहसुनिभूपति फूल्यो हियो ॥ विधना सबमन
भायो कियो ॥ ६७ ॥ द्रुपद उवाच ॥ चामर ॥ सा
जिसाजि बीजराजमत दंतगाजिकें ॥ चर्म
बर्मसस्त्रपुत्रचार द्व्मसाजिकें ॥ जाकेअ
वासद्वारबस्तुसो रषाइये ॥ देषिकें तर्पनी को
सुकर्ममर्मपाईयो ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ आयुसुदी

मेंभूपजो सोईकीनोजाइ॥ मंडपकरायो।
विधिसहितमोतीयनचोकपुराय॥६९
॥गीतिका॥ आइकैतहांपंचबंधवसक
लसोंजनिहारियो॥ नकुललषिबाजिस
राहैपथ्थधनुटंकारियो॥ भीमफूल्योदेषि
कुंजरषर्गसहदेवकरगह्यो॥ नृपतिसब
देषतसराह्योहाथतिनकछनाहह्यो॥७०
देषियाविधिद्वारभूपतिपरमसुष हिरदेभयो
हेदेवगंधर्वजछकोउभेषतपसीकोलयोबो
लितीनौपथ्थभीतरि॥ द्रुपदनृपसुषपाइकें
तवकह्योयौंहसिभीमजेठोप्रथममाहैआयु
कें॥७१॥ सुनिभयोंवड्डसंदेहभूपतिनाचको
उहैंमहा॥ पंचजननत्रियएककैमाहैमूढतावर
नौंकहा॥ बोलियठए व्यासआएकहितिनसौं
विधिसबै॥ एकपतहिधरमपतनीकहीरी

विजे०
॥ ६०॥

भिसोइहतवे ॥७२॥ दोहा ॥ जेठौब्याहैया
त्रिय ॥ लहुरेकहिहैमाई ॥ लहुरेकित्रियजे
ठकहु ॥ सुतावरावरिआहि ॥७३॥ व्यासोवा
च ॥ सोमवंसएपंडुसुत ॥ राकजोतिमतिए
क ॥ सरबजनमसुरेसरा ॥ सुनियसहितविवेक
७४ ॥ पंचइंद्रइनउहिजनम ॥ पायोसिवबरदां
न ॥ पंडनृपतियहअवतरे ॥ छत्रीवुद्धिनिदां
न ॥७५॥ रिषिकन्याहींद्रोपदी ॥ सेयेसीवचि
तल्याई ॥ पंचकलाके देऊंबरइहवांओसु
षपाई ॥७५॥ द्विजहृषिकेनृपतिकोदरसायो
ओहार ॥ देषराकेजोतितहां ॥ पंचइंद्रअवतार
७६ ॥ द्रुपदउवा० ॥ चौपई ॥ तुमविनकोसभ्रम
हिभगावो ॥ तवछितिनाइकरिविग्रनगावे
नृपविवाहकीसबबीधिठांनी बोलियुधिष्टि
रबऊसुषदांनी ॥७७॥ तिनिकीभावरकरीनर

नाह॥ फिरि च्यारो कोकर्यो बिवाह॥ कुरुकुल
नकी बिधिही जैसी॥ भांतिभांति सबकीनी तैंसी
पंचपुरुषकौं कन्यादीनी॥ बिदादायजो देकेकी
नी॥ हयहाथीपटभूषनगनें॥ दासीदासदीयेको
गनें॥ ८०॥ लेदलपरिघहुयहगये द्रुपदफिरेप
हुंचाय॥ गयेहस्तनापुरतबै आपसदनसुषपा
य॥ ८१॥ सुनिदुरजोधनकेभयो॥ अंगअंगअति
दाह॥ नैकसुहायनद्योसनिसि चक्रतचित्त
नरनाह॥ ८२॥ इति श्री महाभारते पुराणे वि
नयमुक्तावली कविछत्रविरचितायां बक
दांनवबधद्रोपदीविवाहवर्णनं नाम एका
दसोध्याय:॥ ११॥ दुर्योधनउवाच॥ श्रीमधां
मन्थपनीलयो॥ पांचवबंधवआय॥ कहोबं
धुकीजेकहा॥ इनसौंकछुनबसाय॥ १॥ बर
ननगरकौं आदिदे॥ किनेकितेउपाउ॥ तउमरे
नहीपंडुसुत॥ फेरिप्रगटभयेआइ॥ २॥ तपीमे।

वि०मु०

॥६१॥

सआयेहुते॥ भूपद्रुपदअस्थान॥ हमकाहू
जानेनही॥ मोरिसबकेमांन॥३॥ भीषमविदुरबु
लायकैं॥ बूझेमंत्रसुजांन॥ कौनउपाउकरैंक
हो॥ सोमतीदेकुनिदांन॥४॥ भीमसेनउ०॥ उ
पकारीतुवबंधुनृप॥ उनसंकछूनघोरि॥ महा
सयानौपवनसुत॥ औगुनसहेकरोरि॥५॥ बर
जोअपनेसोदरनि॥ औगुनकरेनकोई॥ अति
सनेहतुमसौंउने॥ ताहीदिननृपहोय॥६॥ दु
र्योधनउवाच॥ दोसलगावतहोहमैं॥ उनको
भलोमुहाई॥ सकुनिकह्योइहमंत्रतब॥ बी
चियेठिकेआई॥७॥ कतबूझेभीषमविदुर इ
हेमांनिकेंलेकु॥ जोकछूउनकोदोसहे॥ उन्हे
आपसोंदेकु॥८॥ गयेनृपतिधृतराष्ट्रपे सुनि
भूपतिइहवात॥ सकुनिकह्योसोइकह्योपि
तुकैआगेजात॥९॥ बोलियुधिष्ठिरजबकही
सुतविनियोसोमांनि॥ रह्योइंद्रपथजाइकें आ

पग्रामउरजांनि ॥ १० ॥ चौपई ॥ मांनिरजाईसु
चल्योनरेस ॥ सुबसइंद्रपथकीनोदेस मनि
मयबिचित्रबनेसबधांम ॥ मैनहुलसतसुरप
तिकोग्राम ॥ ११ ॥ फटिकथंभकीजागतिजो
ति ॥ होउसूरकीरनिसोहोति ॥ बापीकूपस
नीरतडागा ॥ दिसिदिसिदिसतसुंदरबागा
१२ कल्पलतासेद्रुममनमोहें ॥ फूलेफूले
छहोरतिसोहें ॥ चंचलहयअतिधांमविरा
जत ॥ तमकेसुतकैसेकुंजरगाजत ॥ १३ ॥ भाट
भलेविरदावलीगावत ॥ जोमनइछतसोई
पावत ॥ भूपजुधिष्टिरआग्याहोई ॥ चारोबं
धुकरतहैसोई ॥ १४ ॥ करतअनंदसबैमनभा
ये ॥ एकद्यौसरिषिनारदआये ॥ आदरकरि
केआसनदीनो ॥ तबरीषिवचनप्रगटयोकी
नो ॥ १५ ॥ तीनहुलोकजातहुतहो ॥ अतिआ

विजे०
॥ ६२ ॥

तिथ्थकरतसबजहां॥ मेरोवचननडारैको
ई॥ जोईकह्योवहपैहोइ॥१६॥ रिषउवाच॥
तुमहोसोदरपांचसनेह॥ तरुनिद्रोपदी॥
है तुवयेह॥ मिलसबबंधुइहे उरधरो मो॥
आगेसबबाचाकरो॥१७॥ जोलोंविति
जाइषटमांस एकरहैद्रोपदीअवास अ
वधिमांझजोद्जोकोइ॥ बारहबरषहोइ
बनताइ॥१८॥ सबहीमीलीकेआपामांनी स्व
र्ग सिधारेरिषिसुषदानी॥ प्रथमनृपतिकी
बारीभइ॥ पंचालीसस्पापरिगइ॥१९॥ द्विज
कीसुरभीचोरनलीनी॥ आइपुकार विप्र
तहांकीनी॥ सुनैनकोऊलगैगुहारि सो
तबपथकोपुकारिपुकारि॥२०॥ द्विजउवा
च॥ छप्पे॥ छत्रीकुलहिकहाय आप
कुलअपजसलावत॥ सुरभीविप्रगुहा

रि॥ क्यौनपापीतुमधावत॥ कायरकोकित
मूटरहैतुमधांमहिगहिगहि॥ औरनजानैं
नाम॥रटैइह अर्जुनकहिकहि॥ त्रियाकाज
सुरभिद्विजकाजजोनहि इनकौउपरकरिहि
उपहासलहहिसिरआपनैंसोघोरनर्कउहि
पुरपरहि॥२१॥ अर्जुनउवाच॥ दोहा॥ रहि
रहिविप्रसुजांन॥ तूजागनदै नरनाथ॥ बिन
तीकरितबमैंचलौं॥ लैकृपानतुवसाथ २२
॥सोरठा॥ धनुनहमारोहाथधर्यौसदनमेवि
प्रतहां॥ द्रुपदसुतानरनाथयोठैनाहाधांममें
२३॥ दोधक॥ द्विजएकहवातनमानतहै।
मुषवैनकुबेननिआनतहै॥ रचिकैसबबा
तबनावनिछोडहू॥ लहिपापमहासिरआ
पुन्नटहू॥२३॥ उरिआपहिसोअकुलाई
मनैं॥ चित्तमेद्विजकोअपमानगिनैं॥ नृपधां

विसे॰
॥६२॥

मगयो धनुबांन ... हां ॥ द्विगश्रोमिदलै ई
बाहतहां ॥२६॥ तबहीबरबीरचल्योधनु
लै ॥ मुकरायदईसुरभीवलकैं ॥ रिषिनारद
बैनधरेमनमैं ॥ हिततीर्थबेगिचल्योमनमैं
२५ अवलोकिसुदेवनदीजबही ॥ हितमंज
नपथधस्योतबही ॥ लखिनागसुतालगिदृष्ट
रही ॥ अवलोकतहीतिनवांगही ॥२८॥ ग।
हिताहिपतालहिलैसुगई ॥ बहुव्यालसुता
महिमोहमई ॥ तुमतौवरईश्वरमोहिदए
अतिनिठुरक्योंतुमनाहभये ॥२७॥ अर्जुनउ
वाच ॥ चौपई ॥ रिषिनारदकोहमबैंनलयो
अबयाहिततीरथपंथगह्यो ॥ व्रतभंगमहा
त्रियअंकमरै ॥ बहुतीरथकोहमजातकरै
रहआपनहींजामैहिनेमधरें ॥ फिरिसुंदर
तोकहआयवरौं ॥ इमव्यालसुतातववात

॥६

करै ॥ इहभांतिनहीतव[illegible]रहै ॥ २८ ॥ चलि
कैमगवैननसायजबै ॥ सुनिजायअगार
यधर्मसबै ॥ सुनितासहपथ्यविवाहकियो
तहांकेतिकद्यौसविरामलयो ॥ २९ ॥ त्रियनां
मउलूपीहि गर्भभयो ॥ सुतमनमथ्यौअ
वतारलयो ॥ उरतीरथ्थकीतवसुद्धिमई क
हिपथ्थतबैगहिवाटलई ॥ ३० ॥ उलूपीना
गकन्याउवाच ॥ सुनिप्रांनपतीइकबातक
हौं कहिसोजिहितैंकुसरातलहौं ॥ द्रुमदा
डिमकौदरसायदयो ॥ जबजानहुजूइहस
किगयो ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ तवसंदेहमोप्रांनकौ
कीज्योनागरिनारि ॥ आयोनिकसिपतालतैं
तीरथहेतविचारि ॥ ३२ ॥ नैमसारचलिजाइ
परसिमांनसरकौगयो ॥ बारानसीअन्हवा
इगयात्रयपतिकीनेपितर ॥ ३३ ॥ सुंदरी ॥ साग

रसंगमैंगंगागए उजू चोसकितं कनमैविरहए
उजू ॥न्हाईतबैमथुराहिचलेजू ॥देषपछिमकुं
डभलेजू ॥३५॥ चौपई ॥न्हाइनताजलमैंनरको
ई ॥जाललषेफिरिआवतसोई ॥विप्रनकों
लषिपथ्थकहीयोंपैठतकोडनमधमकहोकों
३६ ॥द्विजउवाच॥ यामहिजातरहेअतिभा
री ॥तेजगजीवनिकौदुषकारी ॥पथ्थनहीक
छूत्रासकस्यौलेपगताजलमांहधस्यौजू ३७
आइगह्योपगततछिनग्राही ॥अर्जुनकेपग
उरभैकछुनांही ॥लैजलतेंवहवाहिरआंनी
होगईसोत्रियरूपसयांनी ॥३८॥ अर्जुनसों
इहवैनकह्योजू ॥आयदियोरिषिजनमल
योजू ॥ताजलतैत्रियपंचकढीयों ॥मांनसरो
वरइंद्रत्रियाज्यौं ॥३९॥ दोहा ॥ पांचत्रियन।
कोमोषकरिचलिअर्जुनवरबीर ॥तजिगा

हय्वरमगलबगयोमानिकसुररनधीर॥४०
॥सोरठा॥ चित्रवाहुवरवाहुजीसौछितसं
तुलघनौं॥ राजततहांनरनाहसकलजगत
कोकामतरू॥४१॥दोहा॥ ताकैंदुहिताइं
दुमुषचित्रांगदासुनांम॥ रूपावहिक्रमउर्व
सीविज्जुलतासीबांम॥४२॥सोरठा॥ कन
कबरनतनज्योति॥ लसतनिलपटओटयौं
जगरमगरदुतिहोति॥ मांनकुघनमैंदामिनी
४३॥ ताहिनमुषइकरताकिविकलसकल
जियकलनही॥ रहीपथ्थगतिथाकिकरीब
सीथवंदिजन॥४४॥गीतिका॥ जायनृपकौं
तवजनायौंब्याहअर्जुनकोभयो॥ मत्तदंती
दीयेवाजीइमवकुकंचनदियौ॥ च्यारिवर
षरहेथ्येतेलिपुत्रइकअर्जुनलह्यौ॥ जाकुंती
रथजातकौंनरनाहसोतिनयोकह्यौ॥४५
नायमाथोभूपकौंचलिद्वारिकानगरीगयो पा

विजै० ॥ ६५ ॥

ईअसुधिआरेकृपानिधिसुषसबकैउरभ
यो॥रुकमनीदेषिआदिसवत्रियपताहिभेटन
आइयो॥चलीकौतिगहितसुभद्रानिरषीवकु
सुषपाईयो॥४६॥सोरठा॥चंचलनैंननता:
कि झिनैंपटचकुंदिसिलषनि॥रहीपंथगति
थाकिपरेफंदाकरकैंसफर॥४७॥दोहा॥म
षसषसकलवनीठनी॥करैंसकलसिंगार
धीररहीनहीपंथउर॥म्याकुलतननसम्हारि
४८॥चौपई॥तबहीसुभद्राअर्जुनदेष्यौअ
पनौपतिकरिउरमहिलेष्यौ॥सिवसेवाकोइ
हसबसारदीयोमोहिपथ्यभरतार॥४९॥इ
हसबबिधिश्रीहरियहचांनी॥तबइहअ
पनेउरमेंआंनी॥गर्भसुभद्राकोइहभयो॥जठ
रबासअहिदांनवलयो॥५०॥दीजैपथ्यहि।
टै मि[illegible]कलंक॥श्रीहरिआंनीइहबुधिअंक
बोलिपथ्यसौंतबइहकही॥बसतुबमनहि

॥

सुभद्रा रही ॥५१॥ मे आपादी मी हरि लेकु पाछै

के है बकुत सनेह ॥ हलिकवरि अर्जुन सुषपा

ई ॥ भई सद्धि पुर मीत रि जाई ॥५२॥ दोहा ॥ को

पि भयो वलिभद्र को ॥ अव अर्जुन कित जाई

त्याग गहि के दारिका छांड्यो भीषम गाई ॥५३॥

कोपि चल्यो स जि सैंन बकु ॥ बरजे श्री हरि आ

इ ॥ कोपार थके सरस है ॥ कैयारन जी त्यो जाई

५४ ॥ हारे होय कलंक कुल ॥ जीत्यै कुगति नां

ही ॥ ताते कोप स्थिपरि हरो ॥ चल्यो दारिका जा

हि ॥ ५५ ॥ वलिभद्र उवाच ॥ तेरी इत्कर तत स

ब ॥ कछू न जांनि जाई ॥ फेरि नहीं उद्दिम कर्‍यो

ख्वे ठि रहे हकुर गाइ ॥ ५६ ॥ आये अर्जुन इंद्रपथ भू

पति बकु सुष पाई ॥ लई सुभद्रा गेह मै मंगल चा

र कराई ॥५७॥ पुत्र वधू कों ताल षी बकु विधि क

रि आनंद ॥ सुभ लछिन गुन आगरी मुष द्दिनी

वि॰जे॰
॥ ६६ ॥

राकाचंद ॥ ८० ॥ चौपई ॥ इहविचारि श्रीहरजू
कह्यौ ॥ सबहीसों ऐसौ अनुसस्यौ ॥ चल्यौ इंद्र
पथजइये भाई ॥ जाइपथ्थकौ करैसगाई पर
लीनें गजरथ तुरी तुषार ॥ आनत रूप भूषन भं
डार ॥ हरि हलधर सब मंगल गाई पहुचे बे
गि इंद्रपथ आई ॥ ८१ ॥ पथ्थ विदेहसि सुभद्रा
दई ॥ भांवरि पारि रीति सब ठई ॥ हस्ती हयरथ
थ भूषन दीनें ॥ जाचक सकल अजाचक ।
कीनें ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ करि विदा बलिभद्र की
नगर द्वारिका हेत ॥ आप कृपा करि हरि रहे
भूपति के संकेत ॥ ८२ ॥ गर्भ सुभद्रा के भयो पु
त्र कला जनु चंद ॥ नाम धस्यौ अभिमनु तब की
नौ परम अनंद ॥ ८३ ॥ द्रुपद सुता के पंच सुत प्रग
ट भये सुषकारि ॥ मांत्तरा कपितु पांचते ॥ पांचऊ
कौ उनहारी ॥ दुरजोधन संसौ कियो । रची कहा

करतार ॥ इतिअकेलेयांचवे ॥ अवधावौप
रवार ६८ ॥ इतिश्रीमहाभारतेपुराणेविजय
मुक्तावलीकविछत्रविरचितायां सुभद्राविवाहवर्णनंनामद्वादशोध्यायः ॥ १२ ॥ सोरठा
॥ षेलतपासेसारिअर्जुनकृस्नअनंदसौं भा
रतदाउहकारिअपनोअपनोंभाषिकैं ॥ १ ॥ अ
थ अगनिअयात ॥ धस्यौविप्रकोरूपयो ॥ इषीदी
नकैकैमहारोगग्रछायो ॥ तहांआयकेदीनवां
नीबषांनी ॥ हरोपीरमेरीमहासुष्पदांनी ॥ २
कहैअग्निमोहीक्षुधानैकनाही ॥ दयाआप
कीजैमहाजीवमाही ॥ कितेजत्नकैइंद्रकौवि
पनजार्‌यौ ॥ महाकोपिकैनीरसौंवारिमार्‌यौ ३
सबैठौरकोंमेभरोसोनसायौ ॥ चल्यौअबेहूं
रावरेपासआयौ ॥ चस्यौकाननैइंद्रकोवीर।
जैसो ॥ महारोगनासैकरैकाजतैसो ॥ ४ ॥ चले
कृस्नअरूपथ्थकौसंगानीनैं ॥ बनेजारिवेकेस

बेकाजकीनैं ॥ तबै अग्निसौं पछ्यवयं
नीवषांनी ॥ धनुबांननांही सुनौं सुष्यदां
नी ॥ ५ ॥ दोहा ॥ अछयतनदयो अगनि
आपुकाजपहचांनि ॥ दीयो धनुषगांडीव
तबनंदघोषरथआंनि ॥ ६ ॥ साजिदीयोर
थअर्जुनैंतैंवहीश्रीजदुराई ॥ पूरबदिसिप
ठयोसुभटपावकसाजोजाई ॥ ७ ॥ आपुरहे
पछिमदिसाछाईलईदिशिवांन ॥ जीवजं
ततविपनमैंभाजिनपावैजांनि ॥ ८ ॥ पूरब
तैसाजिअगनि ॥ अर्जुनपरमप्रचंड ॥ दीन
सबदरोवैसबै ॥ सावजपंषिअषंड ॥ ९ ॥ जीव
पुकारैदीनरट ॥ सुनिसुरपतिसुषदाई ॥ तव
बनजारैआगनिइह ॥ यहकिततोहिसुहाय
१० ॥ प्रलैकालकेमेघजे ॥ तेबोलेसुरराइ
कोरिछ्यानवैराकसंग ॥ बरसहुवनपरजा

ई॥११॥ उमैआयमेघन भतमध्यो दिसिदि
सिक्षाई॥ बरसोहेलखिपप्य्यत्तच लीनौ
धनुषचढाय॥१२॥ सवैया॥ धायकैंपथ्य
चढायलयो धनु घायलयो बरअंबरवां॥
नन॥ दोरि दिवागनिलागिउठी द्रुमजारित
साषसमूलसपानन॥ कोपिमहामघवा
बस्याकह्न॥ एकनवुंदनभीनतकाननव्यो
मविलोकितअद्भुतकौतिग किंनरजक्ष
चढेसुविमानन॥१३॥ दोहा॥ दादसजो
जनलोविपनपरेवुंदनहीएक॥ कोरि
क्रूनानमेजलदमिलि॥ उद्दिमकियेअनेक
१४॥ सुसेस्पारसावरसुवर॥ सेहीसीहसको
च॥ सारीसुकसोनासवे॥ सकलसिचानने
सोच॥१५॥ चिराचील्हचिमगादरे॥ चक

विजै०
॥ ६८ ॥

वाचक्रलत्वचकोर ॥ बरलउबरतनजीवस
बबचनननकाहूवीर ॥ ६ ॥ दंडक ॥ धाई
धाईमेघबरछाईछाईचितपरिवरसिव
रसिहारिभोगमहरायकैं ॥ मरपिफरपिफर
तरपितरपितहोजिततितनीरमराटरिढह
रायकैं ॥ नरुतरुलागिआगिबरलउबर
तनभागीपंछीपसुबचनपरायकैं ॥ छत्र
वलवंतबीरपथ्थकेअनंतबरतपितअ
गनिकरिकाननचरायकैं ॥ ७ ॥ दोहा ॥ सु
निमुनिबनकीइहदिसा ॥ तबकोप्योसुररा
ई ॥ हन्यौंवज्रवानावरीटटिपरीषहराई ८
॥ चौपई ॥ अर्जुनबांनलयेफिरिछाई ॥ वृंद
नपरैकहूबनआय ॥ सुरतोस्योपंजरदसवा
र ॥ जौरेपथ्थउहेआकार ॥ ९ ॥ इहिविधिव

॥

नषांड्यौनचरायो ॥ भगेमयासुरदानवआ
ये ॥ राषिराषिइहअसुरपुकारैं ॥ मोदेसाद
रजारैमारैं ॥२०॥ दईदिलासाराष्यौसोई ॥ छा
डित्रासतोहितेनकोई ॥ असुरभनैंसुनिपच्छ
सयानेंतेरोकतुहीकौंनबषानैं ॥२१॥ मया
सुरउवाच ॥ जितेत्रिभुवनमैंअसुरहोतिनकौ
स्तुतिधार ॥ जबचाहैतबआयहैंकरौकाज
सबसार ॥२२॥ विदाकरीअर्जुनसुभटअसुर
चल्योसोधाम ॥ पुरईपावककामनासबविधि
केगुनग्राम ॥२३॥ दोहा ॥ आएसुरपतिपक्षमि
मैंविग्रहसकलनसाय ॥ सुतहिदेषिकछुसु
षभयोकछुमनमैंपछिताइ ॥२४॥ इंद्रसीधा
येसुरपुरी ॥ चलेपच्छयहआप ॥ चलेइंद्रपथ
कृष्णजुत ॥ जिनकोअमितप्रताप ॥२५॥ निर
षिनृपतियुधिष्ठिरभूपतब ॥ कहीपरमसुषपाइ ॥ श्री

विजै० ||६९||

जदुराईप्रतापतें॥ तैंजी त्यौंसुरराई॥२४॥ गहिहैं
तौकौंधनुषहीं कोऊ मुनिवलिवंड॥ हरिसुज
सधरपरहीसप्तदीपनवखंड॥२५॥ वाराय
तीकौंतवगयविदाभयेजदुनाथ॥ इतभूपति
केनिकटहीसोभितवंधवसाथ॥२६॥ राजा
युधिष्ठिरउवाच॥ रचियेधांमवनाय॥उतिमा दी
सेह्रहरितैं॥ वहुविधिचित्रकराइ॥ धवलनवल
नीकीसभा॥२७॥ अर्जुनउवाच॥ जोतवभूप
तिआईसुपाऊं॥ मामयासुरवेगिवुलाऊं॥
राजोवाच॥ वेगिहीवंधवताहिहकारो॥ उति
मउतिमधांमसवारो॥३०॥ सुन्निमयासुरको
उरआंनी॥ आयगयो तवहीसुषदांनी॥ आव
तहीतिनभूपतिदेषे॥ धर्मधुरंधरचित्तविसेषे
३१॥ इति श्रीमहाभारतेपुराणेविजयमुक्ताव
लीकविछत्रविरचितायां इंद्रवनषंडवदाहि
नोनामत्रयोदशोध्यायः॥१३॥ आदिपर्वसम

सा॥ अथ द्वितीयसभापर्वकथनं॥ दोहा॥
धर्मधुरंधरतिलिकछिनक॥ धर्मसुवनभुवभू
प॥ कहीमयासुरअसुरसों॥ कोजेसभाअ
नूप॥ १॥ चंचरीछंद॥ नवायसीसबेगिदै॥ च
ल्योसुधीरचित्रकें॥ समुद्रपाससोगयो॥ सु
धामसीसकेलयो॥ २॥ दोहा॥ हिरनाखुसकों
सदनसौंलीनोंतिनधरिसीस॥ लेआयोसो
इंद्रपथ॥ लखीफूलिअवनीस॥ ३॥ सवैया॥
सुंदरनीलरंगीले॥ धरेओरपीरेहरेरचिधामब
नाये॥ मानिकलालनिकेवडुजालप्रवालनि
कषचिथंभसुहाए॥ स्वछसिलाजनुदीसतनी
रवनीचकवाजनुपैरतधाए॥ हेअमरावती
तेअतिअद्भुतसुंदरसबसबैछविछाये॥ ४
दंडक॥ सोभाहिकेसारतहांफटिककिवारव
नेकेतेद्वारद्वारजिनैदेषेबुद्धिभरमैं॥ दियेहे

विजै० ॥७०॥

किदावेहै विचारनहीभूलिरहे जांनियेसनि
रसैपैनारनाहीसरमें॥ धांमनिकेबीचिनिदरि
चिनिमरिचिकानिराजतहे नीलमनिछत्रघ
रघरमें॥ भूपकीसभाकीआभाकौंनसौंवर्षा
निकहें॥ ऐसीयुतिनाहिकइंद्रकेनगर
में॥५॥ दोहा॥ पटदानेसदेषियेदियेनपट
तिहिवार॥ जिसरवरहेनीरजुत॥ प्रथवीके॥
आकार॥६॥ मनभायोदेकेसवै॥ समदिमया
सुरग्रेह॥ भूपतिवेठेतिहिसभा॥ वंधुनिसहत
सनेह॥७॥ चौपई॥ रिषिनारदभूपतिपेआ
ये निरषिसभावकुविधिगुनगाये॥ ऐसी
सभानमेकहूदेषी॥ सबठावनतेउतिमलेषी
८॥ रिषिउ०॥ सवैया॥ किंन्नरजछपुरीअ
वलोकितधर्मपुरीअवलोकतफीकी॥ भोग
वतीअवलोकीसवै॥ सुविलोकियासुरसपुरी

सुरहीकी ॥ भूतलभूपनकैधांमधांमविलो
किफिरयोनभईरुचीजाकी ॥ श्रोरसमानसभा
सहलागतरावरीश्राहिसभाश्रतिनीकी ॥ ९ ॥
दोहा ॥ राजोवाच ॥ तीनभवनकीबातसबजान
तहोरिषिराइ ॥ सुद्धिकहोनृपपंडकी ॥ मोकों
सकलसुनाइ ॥ १० ॥ चौपई ॥ सुनिश्रवनिपति
बहुसुषपाई ॥ एकबातमेकहीनजाई ॥ निर
षतपंडहिभयोससोक ॥ भईकुमृत्युगयोजम
लोक ॥ ११ ॥ जग्यकरोमिटिहैसबदोष ॥ पंड
महीपतिपावेमोष ॥ विलषेभूपतिबहुदुषपा
ई ॥ देउपदेसचतेरिषिराइ ॥ १२ ॥ जग्यराजसी
भूपतिकीजे ॥ भूपनीतिजगमेजसलीजे ॥ जग्य
विधानसकलश्रनुसरै ॥ एकराइछतरछांकरै ॥ उ
चंदनगारेछितिपतिएक ॥ एकतेश्रानहिसा
मधश्रनेक ॥ सहसधेनुसुवरणजुतदेऊ पित
कोत्यारिजगतजसलेऊ ॥ १४ ॥ भूपकह्यामनचिं

विजै०
॥७१॥

ता आई॥ जिनके श्रीहरि सदा सहाई॥ इहक
है नारद स्वर्ग [illegible]र॥ सुमिरि भूपति श्रीहरि।
आए॥२५॥ रिषि उपदेस महीप सुनायौ। जग्य।
करौ उनमो हिवतायौ॥ श्रीहरि कहौ मतौ इह
कीजै॥ जानै जरासिंधु जस लीजै॥२६॥ तिन नर
मेध जग्य जग्य है नाध्यौ॥ ता हित भूपनि कौ गन
बांध्यौ॥ एक घाटि सो अधपति रोके॥ पर बंधी
सो महीप सोके॥२७॥ मारि ताहि हौं बंदि मिलां
ऊं॥ सोकवंत सब भूप छुडाऊं॥ भीमसेन अ
र्जुन सग लये॥ रूप कपरिया के तिन ठये॥२८
नगर राजगिर चलित गए॥ दुर्ग मठाम विलोक
त भये॥ मध्य नगर के लागे जांन॥ बाजन बाजे
हने निसान॥२९॥ जग्यथली भूपति हो जहां ला
गे जांन सबै मिलि जहां॥ रछक हुतो मल्ल तिहि
वार॥ विन बूझे कीयौ चले अगार॥३०॥ दोहा॥
तिन कर पकर्यो भूमि कौ देहिन कौ कुंजांन

तुमसौंकछुसरवरनाहीकहतमनवनईग्रांन।
२१॥मिथ्योमदधरसाभीमसौं[illegible]अद्भुतजुद्ध
पवनपुत्रकेउरहयो॥मुदगरकरिकुक्रुध॥२२
लखरायभूपतिलगिस्यो॥पथ्थपचारयोग्रा
ई॥चेतिभीमकरिक्रोधअति॥हन्योंगुरजउ
रधाइ॥२३॥फेरिवलीवरवाकुवरउरिभुजाउपा
रि॥करोदुष्टविनप्रांनसोफटिकसीलासोंमा
रि॥२४॥कस्योंप्रनांममहीपकोंजगपथ्थलीमेजा
ई॥देषतहीसंदेहकरि॥योंबोल्योभवराइ॥२५
ग्राहितपीकेभेषतुम॥दीषतवकुवलवंड॥मांग
ऊजोमनकामनां सोईदेकुअषंड॥२६॥श्रीरु
द्रउवाच॥मागतजुद्धमहीपतिदीजे॥जीमहि
ग्रोरबीचारनकीजे॥तितिकुमैजोग्राहसुपाउं
सोइकछोरनजुफनग्रावें॥२७॥भूपतिकह्मत
हिंपहिचांन्यों॥वेंनतवेइहभांतिबषान्यों॥तो
संगबारग्रनरहहासो॥मेंफिरितूनवदेसिनि
कास्यो॥२८॥होंग्रबजुद्धनमारौंहोंनाही॥तूरन

विजे०
॥७२॥

पा८दोषावही [illegible] ई।॥ कोमलगातधनं नयंदेष्यो
जुबन [illegible] नलिष्यो॥२८॥भीमघरीइकजु
द्धहीसोहे॥ फेरिहेदर्योंकतयापहिजैहे॥भूपति
दोसमहीअतिआंन्यों॥ कोपतभीमचढ्योसुषपा
न्यो ३०॥सोरठा॥ उरेजुद्धविविबीर॥मानहुंगज
मात्तभीरत॥ सूरसमररनधीर॥मनौंसिषरद्वयसैल
के॥३१॥भिरतनकोऊंहारायेदोऊसमरप्रवीन ल
टपटायगिरिगिरिउठत॥ दोउरोसहीलीन॥३२॥ह
नीभीमभूवपालसिरभइगदाद्वैषंड॥जुरासिंधुतव।
क्रोधकरिगह्योसुभटवलिवंड॥३३॥फेस्योगहिकैच
रनविवितीनबारभूपाल॥फेरिगदाकरिमेलईम
गध्रोवचनकराल॥३४॥चौपई॥ तूजांनैकौरवसौ
भाई॥मोसौंतेरीकहावसाई॥ केअबसमरछाडि
भजिजाउ॥वज्रपातकेंओडोघाउ॥योसुनिपथ्थ्य।
हिचिंताआई॥कहाहोइजिहांकछ्सहाई॥फिरिके
कोपेदोऊबीर॥रनमेउदितकोपांभीर॥३५॥जुरासिं
धुवकृवरकेधाई॥लताहन्योंपवनसुतआई॥सम
पेडपरिपरयौसुजाई॥रहीविकलत्तामगधेछाई॥

३७॥ जैसें करिकैं उठो पन्हारि॥ [illegible]रिको मुषनिरषौ
सुषकारि॥ मुकिकै हस्मद[illegible]॥ तिनको
फास्यौ देषत नैन॥ ३८॥ समकिसैन कोप्यौ वरवीर
दुनोंकै गयो फूलि सरिर॥ जरासिंधु भुव पटक पछा
रि॥ कानि फकावौ चिनैं फारि॥ ३९॥ सोरठा॥ सवरे
राजा राई मुकराए तव। वंदि तैं॥ छूटि चले सुष पाई
ल्यौ पंछि पिंजरा नतैं॥ ४०॥ त्रिभंगी छंद॥ जयनदनं
दन दुष्ट निकंदन जगवंदन गरुडासन॥ भवभयमो
चन जनमन रोचन दुष्प मोचन भयनासन॥ सज्जन
जनरंजन दुष्टनिगंजन परम निरंजन जय जगकर्त्ता
कष्टनिवास्यौ दुष्ट सिंघास्यौ मास्यौ लोकनि हर्त्ता॥ ४१
॥ दोहा॥ हरिगुन गावत भूप सब गये आपने धांम॥ जु
रासिंधुसुत बोलि हरि जुरासिंधु इहि नांम॥ ४२॥ नगररा
जगिरि को तिलक॥ कानौं ताकै सीस अर्जुन भीम हि
संगलै॥ चले तिहुपुर ईस॥ ४३॥ जुरासिंध॥ कोटमम धुम
रहरन धरन नष अग्र सयल वर॥ हिरनाकुस हिरनाछि
हरन भ्रमुरदन धरन धरा॥ संषासुर संघरन स्हरन हरि।
अंधक वंधहि॥ षर दूषन वपु भंजि गंजि भंजन दसकं

धरि ॥ गजकाजकाज्ञसकल[illegible] धुवद्याल सिंधु असु
र[illegible]ल ॥ नमोनमो कविछत्र कहि सुनारायण जग
बंदन ४५ ॥ दोहा ॥ चलि हरि आराइं सुपथ ॥ ताक
हदेकैं राज भूप जुधिष्ठिर सुषभयो ॥ भये सकल मन
काज ४६ ॥ श्रीकृष्ण० ॥ पठवो बंधव आपनें जो
तहि चकु दिसि देस ॥ गये कृष्ण तव द्वारिका यो क
हि के उपदेस ४७ ॥ इति श्री महाभारते पुराणे विजय
मुक्तावली कविछत्र विरचितायां जैसिंधुवधो नाम
चतुर्दशोध्याय: ॥ १४ ॥ दोहा ॥ करि कृपा चारो अनु
ज भूपति लये बुलाइ ॥ कह्यौ करो सब दिग विजै दि
सि दिसि जित हु जाइ ॥ १ ॥ भीमसेन पूरव गये ॥ उत्त
र पथ्य सुजांन ॥ सहदेव दछिन गए पछिम नकुल
पयान ॥ २ ॥ दिसि दिसि जीति जाय सब आंनि वां
धि महीप ॥ कीरति सो छाई धरा थल थल जंबूदीप
॥ चौपई ॥ सब बंधव नृप अंक मिलाए ॥ समदे नकुल
द्वारिका गये ॥ करि विजय कृष्ण हि लै आए ॥ नगर इं
द्रपथ बहे बधाए ॥ ४ ॥ आये दुरजोधन गुन ग्राम अ
तुल रूप ताको संग्राम ॥ कीने सकल जग्य के साज

बोलिनहांसकलरिषिराई ॥५॥ छप्पै ॥ आयेगौतम
व ॥ राअत्रिपाराससरआरा ॥ विश्वामित्रविशिष्ट
गर्गअंगिरासुहोय ॥ बालमीकउदुरवासजासुम
तिपारनलहए ॥ बहोसुभद्रकद्रोणअोरनारदमु
निकहेरा ॥ कविछत्रअठ्यासीसहसरीषीसक
लजेरभूपतिभवन ॥ जग्यस्थललगेसवे वेदध्व
निद्विजउच्चरन ॥ ६ ॥ सोरठा ॥ भूपतिकेचितचा
ऊं ॥ रत्नककीनेसबनृपति ॥ दुरजोधनभंडा
र्ज भंडारीसोभितभये ॥ ७ ॥ दोहा ॥ जहांहिएक
कतहांहे दुरजोधनदानि ॥ रीतिहोईभंडारज्यो
सारचेमनजांनि ॥ ८ ॥ जितौलुटावेभूपधनदू
नोहूनौं [illegible] ॥ होई दिषिभस्योभंडारतबभलिर
ह्यो ॥ सबकोई ॥ ९ ॥ चौपई ॥ कीनोगर्वजु
धिष्ठिरराई ॥ कोनमाजुमेरीसरिआई ॥ धनि
होंजाकोंभस्योभंडार ॥ इहसकलवस्तनमेंसार
१० कीनोगर्वकृष्णजबजान्यौं ॥ इहविचारअ
पनैंअरआंन्यौं ॥ करणरायभंडारीकीनौं वेग
हिरूपहोगयोहीनौं ॥ ११ ॥ सोरठा ॥ चिंताका

॥७४॥

रिल[illegible]ह॥ वि[illegible]कही॥ सुनियेत्रिभुव
ननाह॥ रीतै भये भंडार सब॥ १२॥ कृस्न उवाच॥
तैंक छूकीनो गर्व मन त्रस्न हस्तकुरराइ॥ घटै
घटायो द्रव्य नहिं जो वह देहि वहाइ॥ १३॥ देतक
र्नकें कंपा उठै संके गिरवर मेर॥ है कुरराज कर्न
को इतनो हीं नृप फेर॥ १४॥ आग्या अर्जुन को दई
लंका कों अब जाउ॥ जा तिलंकपति कौ सुभट
बहु सुवरन लै आउ॥ १५॥ सवैया॥ धाइकै जाइ
चढ्यो लयो धनु सायर बान निछाइ लयो ई॥ को
वरनै वरवाहु पराक्रम मार गलंक कों बार कि
योई॥ न वाइकें गर्व निसाचरनाथ कौं घोर अ
दंड निदंड दियोई॥ कोस रिदी जिय देव अदेव
सुपध्य समान नि और वियोई॥ १६॥ चौपई
पुरन जग्य कह्यो भवराई॥ भीम कह्यो उठि कें सु
षदाई॥ आइ सुदेहु सबै अवनी कौ कोंनक भा
लकरै अबटी कों॥ १७॥ दोहा॥ इहवनि आई
सबनि कौं॥ कही सुषद सुषपाई॥ प्रथम तिल
क हरि सीर कीयो यस प्रभु त्रिभुवनराइ॥ १८॥ वे

श्रोत हां सिसुपाल नृप ॥ [illegible] मौरौ लैन ॥ कहौ
कहा को भूप हरि ॥ कहत तिल[illegible]हि दीन ॥ १९ ॥ चौ
पई ॥ गायो राजत जनम सिरानो ॥ ताको नाम कहा
मुष आनो ॥ कौरव आदि महीपति जहां ॥ हरि कौ
देत मान कत तहां ॥ २० ॥ जरासिंधु छलि कै जिन
मार्यो ॥ मैं हूं अब इह मंत्र बिचार्यो ॥ मारौं याहि बैर
सो लेहु ॥ रहन न यह हो याहि न देहु ॥ २१ ॥ द्रव्य इते मैं
चाहौं और ॥ अलका गयो पथ्थ सिरमोर ॥ जीत्यौं
धनपति तिन बरआई ॥ मिल्यो पथ्थ को माथो नाई
२२ ॥ कंचन मनि गन मानिक जाल ॥ दीनी चंद्रवदन
वरु बाल ॥ तब सुष सन्न बीर चलि आयो ॥ नृपति
जुधिष्ठिर हरिस्रम पायो ॥ २३ ॥ जब तैं टीका हरि सि
र सुन्यौं ॥ करि करि क्रोध सीस तिन धुन्यौं ॥ बारबा
र अनूत र कहे ॥ आपति बैठ सन मुष सहे ॥ २४ ॥ स
वैया ॥ एक कहू हौ दस बीस पचास कहा हौ कहि सौं
हूं तै आगरी नाषी ॥ देव अदेव सबै नर देव जिता तैं छि
ति देव भए सब साषी ॥ जेती कछू कछमी जु तो कृष्ण

जहीमरजाद ... वढि...ही॥ चक्रहन्यौसिसुपाल
॥७५॥ कौसीसरूभामहिं चक्रकीननराधी॥२५॥ दोहा॥
सबकेउरसंकाभई॥ सबकंपेभुवराई॥ जैजैजैभाष
तहै जैजैत्रिभुवनराई॥२७॥ प्रथमतिलकहरिसी
रकर्‌यौ॥ भफीरिभूपतिकेंसीस॥ विधिसैंसबपह
राईकैंकीनविदाछतीस॥२८॥ इतिश्रीमहाभारते
पुराणेविजयमुक्तावलीकविछत्रविरचितायांसि
सुपालवधोनामपंचदसोध्याय॥१५॥ सोरठा॥ दुर
जोधनभुवराई॥ न्यौतिवुलायेइंद्रपथ॥ करणसहितस
बपाई॥ आदरकीनौंधर्मसुत॥१॥ सुंदरमंदिरदेखाहि
भूलिरहेकौरवसकल॥ जनुअमरावतीआहि आ
षंडलसोधर्मसुत॥२॥ दोहा॥ जवभीतरिकौंनृप
चले॥ सरवरसोचितचाहि॥ जानतअमितअगाध
जलपैंतंहीनीरनाआहि॥३॥ बसनउठाएआपनृ
प धस्योफटिककैताल॥ गयेमार्वसोसदनलखिभ
यो विकलवेहाल॥४॥ आगेसरवरवावरी॥ नीरनृप
रेलखाई॥ जानिभूमिधोपैपस्यो॥ जलअगाधमेंजाय
प दरवाजदीनेंकुतै॥ उज्जलफटिककपाट॥ तहेंमा

र्गऋवलोकिकैंतीनीसोईवार॥ ६॥ तामारगाकु
रराजकैंलागीचोटलीलाट॥ तबआगेसहदेवकैं
नयहिगिहाईवाट॥ ७॥ निरखीभूपकीइहदशापंच
बीरलसीकाई॥ अरुहसिद्रुपदसुतागई॥ रह्यो
नृपतिमूरझाई॥ ८॥ हिमकरहतजैसेंनलिनत्यों
भूपतिमुषदेषि॥ उत्तरायेभीजेवसन आदरकि
ये विसेष॥ ९॥ वैठारेभूपतिसभाधर्मपुत्रतिहिका
ल॥ रच्यौअपारोनृत्यकोवोलिगुनिनकेजाल॥ १०
आंनीअर्जुनजीतिकें॥ उत्तरतेंजेवाल॥ भीमजीत्ति
प्रवलईतेंआइतिहिंकाल॥ जीतिनकुलसहदेव
बरआनीहीजेनारी॥ नृत्यहेतआगेंनृपतिनेसब
लईहकारि॥ १२॥ सोरठा॥ नृत्यततियवहुभाईउर
पतरपउलथासहित॥ उपमादीजेकाई मांनहुंरंभा
उर्वसी॥ १३॥ इंद्रपुरीसमसोसभाधर्मपुत्रसुरराइ नृ
त्यततियजनुमेनिका॥ तिलोतमाछविछाय॥ १४॥
चौपई॥ देषिसभाआयेज्योंनार॥ जेवतषटरसभोजन
सार॥ भांतिभांतिकेविंजनआंने॥ नांमकहालगीकों
नवषांनें॥ १५॥ जीमउठेजवदीनेपांन॥ गएमेहजव

वि॰प्रे॰
॥७६॥

बुद्धि निधान॥ म[illegible]ति नम[illegible]गुनसुहाई सव बं
धु[illegible]॥१६॥ पंडसुतनिको कहमति
कीजैं करौसुदेस निकारो दीजै॥ मारतसव विधि मेरो
मांन देसतजै सो करो सयान॥ १७॥ चलि ध्रुतराष्टु
भूपपैं गये पंडसुतनि वद्धाउ छदये॥ तबजौ है पितु
मोह अंदेस॥ पांचो बीरनि छूटै देस॥ १८॥ भीषमउवा
च॥ जव वै सव वालक हुते॥ दीनै देस निकारि॥ भ्रमत
फिरै वनवीथिकनि रच्यौ सहाई मुरारि॥ १९॥ मननवि
चारो दुष्टता॥ कारन भलो न येह॥ कह्यौ मानि मेरो उ
न्है जीवदान किनि देह॥ २०॥ यौ सुनि कै उसरे नृपति
आये अपनें ग्रेह॥ सकुनि उसासन करन तहां वोले स
हित सनेह॥ २१॥ दुष्ट चौकरी जुरी तहां॥ करै विचारि
विचारि॥ सो कीजै पांचौ अनुज॥ दीजे देस निकारि
२२॥ सकुनिउवाच॥ मंत्र विचारयौ एक मैं आप मांनि
मन लेहु॥ भूपहरावहु जूव मै देस निकारो देहु॥ २३
जो विरंचि उनको करैं॥ रछिया लिछ्या निसहाइ॥ भूप
जीति हों आंपवैं लहैं न कौउ दाउ॥ २४॥ दोधकछंद॥
मंत्र महीपति कैं मन आंन्यों॥ सत्य इहे अपने उर आंन्यों

(७)

भीषमविदुरतहां [illegible]ले॥ [illegible]या॥ इतहांकीकथो
ले॥२५॥ द्रोणहिआदिसबैचलि [illegible] ना।
कोंसमजाए॥ ॥ ऐसोमंत्रकयूप्रतिपारो भूपजुधिष्टि
रभूदेसनिकारो॥२६॥ भीषमद्रोणउवाच॥ जोलगिउ
नकेंभूपसुनित्रिभुवननाथसहाई॥ तोलगिकाहूसों
कछु॥ केसेहूंनबसाय॥२७॥ द्रोणदंडक॥ देषिकेपं।
रावोकछूकीजीयेनअनरावो॥ दावोकिनादावोकि
येकेंहैमहाहानिये॥ ऐसोअवबेकोहै कुटवंट
वटेकीजिहिनेकहूंतोत्रासहरिहूकों उरआंनियें
साजतुहैकाजतूकसाई॥ अंतराईकेसकेहै अपज
सइहनीकेंउरजांनियें॥ बंधुनिसोंकीजेमोहद्रोहउ
रकोहछाडोकीरतिकलितजातेंभूतलवषांनिये २८
॥दोहा॥ परद्रोहीसुकृतघनी तेअंतेंकबसहोत दी
ततनरकअघोरमेजातसंघरतगोत॥२९॥ सुनिनृपन
हिउत्तरदीयोवचन कठोरघोर॥ सरसोलाग्यो।
चित्तमें चितयोंभीषमओर॥३०॥ भीषमदोहा॥ बल
कपटकोनासनो कैहेमूलविनास॥ बाढेंबंधुविरोध
अतिकैहैजगउपहास॥३१॥ छप्पै॥ विनसैंसोईध
र्मजहांपाषंडहिकीजे॥ विनसैसोईप्रीतिजहांहांसी

मन दीजें ॥ विनसे सोई [illegible] मातापितु मंडहि वि
नसे सोई [illegible] आप कुल कु रणी छंडही ॥ विनसे सो
धन बेगि जिही धन हीनें [illegible] रनु करहि ॥ छत्र सुमति मा
रग चलो कुमति कल हनृप परिहरहु ॥ ३२ ॥ विनसे सो
ई विप्र जो न षट्कर्म हि साजे ॥ विनसै मंदिर वहि निक
ट रावरि कैं राजे ॥ विनसे सोई कथा जो न ता महि मन
दीजै ॥ विनसे सोई काज जहा पर आसा कीजें ॥ विन
से नारी प्रचंड ॥ यह सकल कुमति प्रति परिहरो ॥ सिष
सी षि भूप भीषम कहै सु नृप ता महि मंडल करो ३३
विनसै सोई वंधु कुदया जा के उर आवे ॥ विनसे तस
कर वह भेद अपनो जव तावे ॥ विनसे सोई नेह क
पट डे ग्रह उर मै धरिये ॥ विनसें द्विज सेवा करतु
विनसै सरिता निकट ॥ इहि भांति भीषम सीष
भीषम कहै सम मफहू भूपति आपघट ३४ ॥ दो०
॥ तजौ नृप की वांन सव ॥ अंतस वढै संसार
है कलह कुटंब मै च रवी राषी करतार ॥ ३५ ॥ धर्मपु
त्र कौ भूप यौं आयस देहु वलाय ॥ बचनन मेंटैरा वरौ
उठि कानन कौ जाय ३६ ॥ भू भीषम के यो वचन

सुनि ॥ भूपति गये [illegible] ॥ आए कुमार ए अनुज
सब ॥ हितु कैं अपने पास ॥ ३७ ॥ पाई जाई सु सकु
नि तब ॥ रच्यौ कपट को जूप ॥ निरष करन रा विप्र
त्र कों योबो ल्यो भूव पाल ॥ ३८ ॥ आन इबो लि जु
धिष्ठिरैं योवो ल्यो सुष पाई ॥ कपट जूप मे लेषि के
ले है ताहि हराय ॥ ३९ ॥ कर्न गयो चलि इंद्रपथ क
ह्यो भूप सो जाई ॥ बोलत षेलन जुप को दुरजोधन
सुष पाई ॥ ४० ॥ चले भूप इह बात सुनि भीमसेन
सुधि पाई ॥ जाहु हस्तनापुर नही कही नृपति सों
जाई ॥ ४१ ॥ राजा युधिष्ठिर उवाच ॥ चोपई ॥ जुवा छु
द्र कों छत्री भागैं ॥ ताकु महा अपजस भव लागै क
ह्यो भीम कौ कस्यौ न कांम ॥ चलो भूपत व वुद्धिनि
धांन ॥ ४२ ॥ चले अनुज संग कसि करिवार ॥ चली द्रो
पदी लियें भंडार ॥ साहन लै परिघ हि सिंधाए नगर
हस्तनापुर चलि आये ॥ ४३ ॥ कोस एक आगै है लि
ये आदर भाव अमति गनि कीये ॥ हितु कैं लिये स
भा महि आई ॥ निरषत विदुर महा दुष पाइ ॥ तब आ
दर भूप कौ कीनौं ॥ बोलि सकुनि ने आसन लीनौं

भीषम विदुर भाव यह जांन्यौं ॥ कपट षेल आपने उर आं
न्यौं ॥ ४४ ॥ भूप जुधिष्ठिर कौं तब देषि ॥ हा बिरदन कर ज
[illegible] छिसे षि ॥ चक्रत भये चहुं घां तकें ॥ भूपति डर कछु
क छिन हिसकें ॥ ४५ ॥ कपट षेल कौ कीयै विचार कौ
रव जीत्यौं सब भंडार ॥ राजपाट आपनै षो हास्यौं विल
वदन भए बंधव चास्यौं ॥ ४६ ॥ फूल्यौ दुरजोधन मन बराई
लीयौ दूसासन निकट बुलाई ॥ तुरत जाहु न हिला गैवा
र ल्यावो द्रोपदी सभा मझार ॥ ४७ ॥ इतनी वात कहत उठि
धायौ ॥ तुरत द्रुपदतनया ढिग आयौ ॥ अनुगत वात आ
यकैं भाषी ॥ ताकी नैंकन कान न राषी ॥ ४८ ॥ दुसासन
उवाच ॥ दो० ॥ जीत्यौ कौरव नृप मैं परि जुधिष्ठिर हारि
तू दुरजोधन मन वसी चलि मेरै संग नारि ॥ ४९ ॥ द्रोपदी
उवाच ॥ दंडक ॥ सत्य धर्मपुत्र कैं असत्य कहुं देषियै न जा
कें [illegible] तितेज छत्रि छोर लौं मढ़ति है ॥ तामैं अधर्म तू काहे
भाषत है दूसासन कीरति निसति ॥ अपकीरति बढ़ति है
कम की करै जदा विदं तन मै बारि बारि मीडि मीडि हाथ
ऐसै द्रोपदी रटति है ॥ मात के समांन जेठे बंधु की वधु सौं
अब ऐसी कौं ऐंनैं सीतै रम षतै काढ़ति है ॥ ५० ॥ दोहा

दूसासनफिरितहांगयो ॥ कह्यौनृपतिसोंजाइ द्र
पदसुताहरिध्यानयवक्र ॥ रहीग्रेहमुवराइ ॥ ५१ ॥ दु
[illegible] ॥ दूसासनजियमारिहोंल्याउंद्रोपदीवा
ल ॥ पकरिकेसनहिकांनिकरि आनिसभाउन्हाल
५२ ॥ जायगहेकरकेसतहे कीनीकछूनकांनि स
भामाझ्रअपनीकरी आईमननगिलानि ॥ ५३ ॥ दु
[illegible] ॥ वेढित्रियामोद्धजंघपर मनमानी
तुवनारी ॥ मेतुमहितसवरीतजी निजतरूनी सुष
कारी ॥ ५४ ॥ [illegible] ॥ पापीवोलनदुषता ॥ कहे अ
वूझतवैन ॥ राजपाटमिटिजायगो रहिगनकछू
रहेन ॥ ५५ ॥ फूकीभूपतितवयौकहीलेकुदूकुलउ
तारि ॥ सुनिदूसासनमोनिकुट अबैनग्याक
नारि ॥ ५६ ॥ चौपई ॥ दूसासनकरपकस्योचीर
भीमसेनथरहस्यौसरीर ॥ कह्योजुधिष्ठिरसोंअ
कुलाई ॥ आयुसुदेत्रियलेउंमिलाय ॥ ५७ ॥ राजा
उत्तरकछूनदीनों ॥ तवउद्दिमदूसासनकीनों ॥ पं
चालीसुमरेअकुलाई ॥ दीनवंधुकीनकरोसहा
य ॥ ५८ ॥ द्रोपदी ॥ दंडक ॥ जिनकीपतिनितिनपती

विजै०
॥७८॥

नकी॥ तुम्हें पति षोवत पतित पतिग तिकैं कसा
ईकी॥ रानी अकुलाय कही फाटि हू न जाय मही
कै सैं जाति सही दुस्यह दुसासन दाई की॥ कीनी करुणा
कांनि नही द्रोणनै गिलानि करी तजी पहिचांनि विवा
नि भीषम भलाई की॥ जैसें पहलाद काज कीनें है
इलाज सोही कीजे महाराज आज लाज सरनाई की
५९॥ सवैया॥ काहू की बार सह्यो गिरि भार सु का
हु की बार अंगार चबाए॥ काहू की वार विदारि हि
रे वसु काहु की बार पयादेही धाए॥ काहू की बा
र कौं पाइन फारि कै ढेरन संघ के रूप हि आए॥ दी
न के नाथ कहाय कै वे गुन बारह मारी कहां विस
राये॥६०॥ दंडक॥ मेटि कुलकांनि मांनी जांनि पह
चानि न ही द्रोपदी सभा मैं आनी गह्यो छोर चीर कौं
रानी अकुलाय कही॥ फाटि हू न जाय मही॥ हूजी
ये सहाय धस्यो ध्यांन जदुवीर कों॥ दीन निकी लाज
राषली जै महाराज आप और का हूं कासों को उद्दा
र कौंन पीर कौं॥ जोर साथ हू सासन हाथ थके पा

अरसे छूट्यो नही केयां हूं पट संचक सरी रकौ ६
१ ॥ साहस सहित बल वाह सिथिलाई गये ॥ भीष
म समेत कोऊ बोलत न तटको ॥ व्याल से विसा
ल काल दंड नै कराह वाकु औ चिरौ औ चिया कौ व
रहसासन भटको ॥ आसा छाडि पति की निरा
स वा मटे ह्यो हरि करुणा निधांन सब सुमो दीन
रटको ॥ देहतैं वढ्यो है पट को टिनम ढ्यो है छत्र
द्रोपदी हू कुल सं जैसो सुतनटको ॥ ६२ ॥ भीम
सेन भीरधों तजी पारथ हूं पीरत जी धीरत जी धर्म
पुत्र सत मेदि ढायकैं ॥ भीषम हूं वानि तजी द्रोण
पहिचांनि तजी करण तजी कानी रहे विदुर वरा
यकैं ॥ वुद्धि कुरराज तजी ॥ दूसासन लाज तजी औ
चा औ चीहास्यो पट घरोई षस्यायकैं ॥ वारनल
गाय करी द्रोपदी का भई तहां सां कैरे सहाय ज
दुराय भयो आयकैं ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ औ चि औ ची
हास्यो पट दुहसासन अकुलाइ ॥ थाकि रह्यो
करि वर घनैं रही सभा अरगाइ ॥ ६४ ॥ मारि डासो

ढवछ्योः

विजे०
॥८०॥

रनमैनिकारिडारौंगर्वसर्बसर्बमूलतैंउषारिडारौं
वाकुहसासनके॥ तोरिडारौंजानुजंघदुष्टदुरजोध
नकेतनकतनककौंदुष्टनकेतनके॥ चाहिमुष
नृपजुधिष्टिरकोभीमकहे॥ आयसुजोदेहुसबै
सारोकाजमनको॥ हमहिंअछतषलचीरगह्यो
द्रौपदीकोधर्मकतहियेमांफजैसेघायघनके॥ ६३
॥दोहा॥ द्रुपदसुताकोइनगह्योजिहिकरदुष्टदुकू
ल॥ होबरवाहुउषारिहौंतेईभुजासमूल॥ ६४॥ द्रु
पदसुताहिंन्हाईहौंताकेरुधिरमझार॥ भीमपेज
बोलीमहाइहविधिवारंबार॥ ६५॥ भीषमउवाच
सांचो।जायेअंधकेअछितद्गनजेअंध॥ चलेकहा
द्वैएककौअसेईसबअंध॥ ६६॥ महिमाकरुणा
सिंधुकीदेषतहैषलनैन॥ भएालटपटेमूढभुजऐ
चतपटनिवरैंन॥ ६७॥ द्रोपदेयत्रियक्रोधकरिस
भाभस्मकेजाइ॥ हौंनीहैसोक्योंमिटै॥ देषिदेषिप
छिताइ॥ ६८॥ सुनिसकलधृतराष्ट्रइहतनछिनहि
अकुलाई॥ धर्मपुत्रअरुद्रोपदीलीयेनिकेतवुलाई
६९॥ समाधानसंतोषकरिदीनेंग्रेहपठाई॥ पञ्चो।

त्रियजुतइंद्रपथपां चौबंधवआई ॥ ७१ ॥ इती श्रीम
हाभारतेपुराणेविजयमुक्तावलीकविछत्रविरचि
तायांद्रोपदीस्वयंवरकूंवरवर्णनंनामषोडशोध्या
यः ॥ १६ ॥ चौपई ॥ दुरजोधनसबअनुजबुलाई ति
नसौंकहीबात अकुलाय कहा हमारेजीतैंहोई
वैसुषविलसतहैंसबकोई ऐसौमंत्रकछुअब ८२
कीजे इनकौसुषसंपतिसबछीजे पांचौंअनुज
निदेसनिकासि तबकैहैसुषकीबहुरासि २ पठ
योकर्णइंद्रपथगयो षेलनऊपसंदेसोदयो चल
नजुधिष्टिरभूपतिकह्यौ न्योतिपठायोआयनर
ह्यो ३ षेलकपटकौबेसबजांनि कह्यौभीमकौ
चित्तनआनैं चलिकैंनृपतिपहुंचेजाय आद
रकीनौंकौरवराय ४ षेलनृपकौतबतिनठांन्यों
कपटमहाअपनेचितआंन्यौं अबेकीजियबच
नदिढाउ फिरिपाछैंनहोईकलाउ ५ तबति
नलीनेबचनदिढाइ जोहारैबनवासैंजाई बाधा
बंधुउऊमिलिकीनौं नृपषेलमैंतबमनदीनौं

ॐ० ६॥ हास्योराज जुधिष्ठिरनृप ॥ हास्यो साहनपाट अरु नृ
८१ ॥ प ॥ हास्योदेससहितभंडार हास्योगजबाजिनकोदार ७
अफुलितह्वैदुरजोधनकही ॥ राजपाटसवहारीमही
बारहवरषजाईवनमेंहोय ॥ गिरिगह्वररहिकेसवदुषसहो
८ ॥ दोहा ॥ वरषतेरहीजाउदुरिजोहमलेहिनिहारि
फिरिकैद्वादशवर्षकोंदैहैतुमेनिकारि ॥ ९ ॥ भीमसे
नउवाच ॥ कपटरूपइनषेलिकैंकांननदिनौवास
पाईरजाईसुहोंकरौंकौरवकुलकोनास १० ॥ नृपता
लहुछुडायकें ॥ करौराजभवईस ॥ करौसकलजगवं
दनाधरोछत्रकिनसीस ११ ॥ राजोवाच ॥ नलदम
यंतीकीकथानृपकहीसमझाय ॥ द्वादशवरषविप
नगहिराजकरैंगेआई ॥ १२ ॥ अर्जुनउवाच ॥ मोकु
आयुसदेहुजोराजछीनसवलेहु ॥ सकलपरेषोजा
यमिटि ॥ नृपताविप्रनिदेहु ॥ १३ ॥ मिटैपरेषोचीत
कोदुजेंहकेहैधर्म ॥ आयुसुदैहैकपालहै ॥ हहैकरौ
मेकर्म ॥ १४ ॥ राजोवाच ॥ छप्पै ॥ धन्निधन्निनुवपा
थ्य ॥ षंडषंडनजसकीनों ॥ धन्निधन्निभुजदंडक

सौसुरपतिवल हीनौं ॥ धन्नि धन्नि तुव पा
नि कौ पिधन करतजु क्कसर ॥ धन्नि धनुर्धर
धीर दीयो विधनां लोकौं वर ॥ कवि छत्र न की
जियेरोस मन तुव सरवर कह्यिो करहि ॥ सं
कत नदस दिगपाल धरसु थरथर थरथर हर
हि ॥ २५ ॥ दोहा ॥ विप्रन को इहदांनन हि दे
हुप ष्यय वलिवंड ॥ बारह वरष व तीति कैं ।
करिहै राज अषंड ॥ २६ ॥ महदेव उवाच ॥ ह
तो अंध सुत अनुज सब ॥ इह मेरे जीय आज
आप वचन प्रति पारिये वन हि चले महारा
ज ॥ २७ ॥ राज सिंघासन द्रव्य धन साहन अरु
भंडार ॥ रषवारो कै राषी हौं कीजे इहै वीचा
र ॥ २८ ॥ विपन दुषी जीन होउ नृप मो सो से
वक पाइ ॥ अन्न अम्प जुत भूषन नित दे हु वन
पहुंचाय ॥ २९ ॥ राजोवाच ॥ तेरो पौरष मैं स
ब जांनौं ॥ अति सुरंतन कसा वषानौं ॥ ये नि
ज वचन हमारो मांनि फेरि राज करिहै हम

आंनि ॥ २० ॥ नकुलपरजस्योयौंहठिभाषै
कौरवमाणैको अबराषै ॥ आग्यादेहु भूमि
भरतार ॥ हतौ अनुजसवलोगेनवार २१
हारीपक्रमिसुनीचैधरौं ॥ तरकीधरतीउपर
करौं ॥ तापरवैठिराजनृपकीजे सकल अ
रिनउपरपगदीजे ॥ २२ ॥ दोहा ॥ नकुल नि
वाखोनृपतितव ॥ योकहि वारंवार ॥ तोसो
वलीनऔरभुवजान्यौंसवसंसार ॥ २३ ॥ गा॥
हिलोडीनरनाथतव ॥ लघुवंधवसमझाय
तवैइंद्रपथधांममै ॥ पहुंचेसवजनआय
२४ ॥ दोहा ॥ तेरहवरषविपनिवसि ॥ फेरि
आयहैधांम ॥ क्रोधनहीमनमेंकरौ ॥ मन
सावाचाकाम ॥ २५ ॥ इति श्रीमहाभारतेपुरा
णेविजयमुक्तावलीकविछत्रविरचितायां
राजायुधिष्ठिरदुर्योधनद्यूपवर्ननंनामसप्त
दशोध्याय ॥ १७ ॥ सभापर्वसमाप्तं ॥ अथवन
पर्ववर्णनं ॥ गीतिका ॥ राजचिन्हतजेयुधि

ष्ठिरभूपततववनकौंचले ॥ चतुरभ्रातासंग।
लीनैंहुतेसुरभलेभले ॥ मातुराषीविदुरकैंग्रह
हेतवहुविधिजांनिकैं ॥ राषीसुभद्रापुत्रजुत
पुरद्वारिकामहिंग्रानिकैं ॥ १ ॥ द्रोपदीकेपंच
सुतनृपद्रुपदढिगतेराषियो ॥ पंचवंधवद्रुपद
तनयासहितवनग्रमिलाषियो ॥ छत्रपाट
धरेसिंहासनसग्रमेसुषपायकैं ॥ २ ॥ चलत
हीयेकग्रसुरमारगविपनकौंतवरोकियो ॥ वि
विकटघटग्रतिरदनदीरघभिमसेनविलोकि
यो ॥ गदाजुद्धहिंपछाडिकैंवलवंतरथततिजिधा
यकैं ॥ मल्लजुद्धकीयोवलीकुटुंषसंगकह
लायकैं ॥ ३ ॥ भूमिमारिसंघारिराक्षसविपन
कौंतवपगधरयौ ॥ लष्योवनग्रतिसघनद्रुमव
हुभांतिकैंवहुफलफरयौ ॥ ललितललितल
वंगलतिकाकलितकरनौंसोहियै ॥ वलिवेली
वकुलचमेलीजुहिंजुतमनमोहियै ॥ ४ ॥ छप्पै सो

विज्ञे
८२

सोहतत्तरवरतालकेरिकरणअम्रत्तफल॥ सो
हतिकुंजनिकुंजकिते सरवरजलनिर्मल॥ सो
हतनिंझरझरत सुथलथलसलितअखंडित
सोहतलतिकाफूलभवरपुंजनिसुषमंडित सी
तलमंदसुगंधीअतिवहतपवनअतिसुषद
गति॥ कविछत्ररम्यअवनीसुथलमुनिरषत
होतप्रसन्नमति॥ ५॥ भुजंगप्रयातछंद॥ तहां आ
पुहीकोकुटीभूपकीनी॥ विलोकीवनीताथ
लीकीनवीनी॥ कहूंकालकेअछफूलेफलेहैं
तहांकोकिलाआदिपंछीभलेहैं॥ तपीविप्रके
तहांचित्तमोहैं॥ मनोदेवदेवेसलोकेससोहैं
मयूरीचहींओरतेनृत्यसाजें॥ कहूंहंसनीहं
सनीकेविराजें॥ ७॥ दोहा॥ तपतीमरकटदेषी
रीषिकोनेन्रपतिप्रनाम॥ भांतिभांतिकरिवंद
ना॥ कहीन्रपतिगुनग्राम॥ ८॥ मोकहहोहुप्र
सन्नरिषि॥ देहुकछुउपदेस॥ दीनोंसूरजमंत्र
तव॥ मुनिसुषभयोनरेस॥ ९॥ जाप्योन्रपतितुर

तहीप्रगटभयोभुवभांन॥ कहीभूपसौंमंत्र कोमुनिजेसकलविधांन॥ १० ॥ प्रातनायके भूपतुमजपियोमंत्रह्रितचित॥ षटरसभोजनह्वो सप्रति॥ पकुचाकुतोहित्त॥ ११ ॥ इहविधिदिन प्रतिभोजनपावहि॥ आपनजैवेरिषिनजिमा वेहि॥ रिषिसबभूपतिकोंसमझावेहि तिह वनवसितनकष्टदुषपावहि॥ १२ ॥ करिदुस्ता जयद्रथआयो॥ हरनद्रुपदतनयाकोंधायो॥ स कोननेकजुद्धकोंकांधि॥ लीनोभीमसेनसो बांधि॥ १३ ॥ भीमसेनउवाच॥ आपामोहिदुसा ईदीजे॥ बांधिदुष्टअवहीमारीजे॥ भूपतिका हेनअैसोकीजे॥ बांधिमारियेअपजसलीजे १४॥ पाईरजाईसुसोमुकरायो॥ लजितचलुच लिकैंग्रहआयो॥ करीतपस्यासीवकीजाईके नीवरषेतनमनलाई॥ १५॥ दोहा॥ वहुदिनवी तेकरततप भयोमेहसउदार॥ मांगितोकोंद योसोईवरसुखसार॥ १६॥ जयद्रथउवाच॥ भीम

मांगी ३२

विजै
८२

सोहत्त तरवर ताल केरि करण अमृत फल । सो
हति कुंज निकुंज किते सरवर जल निर्मल । सो
हत्त निंझर झरत सुथल थल सलिल अषंडित
सोहत लतिका फूल भवर पुंजनि सुषमंडित सी
तल मंद सुगंधी अति वहत्त पवन अति सुषद
गति ॥ कवि छत्र रम्य अवनी सुथल मुनि रषत
होत प्रसन्न मति ॥ ५ ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ तहां आ
पुही को कुटी भूप कीनी ॥ विलोकी बनी ताथ
ली की नवीनी ॥ कहूं काल के अछ फूले फले हैं
तहां कोकिला आदि पंछी भले हैं ॥ तपी विप्र के
तहां चित्त मोहैं ॥ मनो देव देवेस लोके समोहैं
मयूरी चहौं ओर तें नृत्य साजै ॥ कहूं हंसनी हं
सनी के विराजै ॥ ७ ॥ दोहा ॥ तपसी मरकट देषी
री षि कीने नृपति प्रनाम ॥ भांति भांति करि वंद
नां ॥ कही नृपति गुन ग्राम ॥ ८ ॥ मो कहहो सुप्र
सन्न रिषि ॥ देहु कछू उपदेस ॥ दीनों सूरज मंत्र
तव ॥ सुनि सुष भयो नरेस ॥ ९ ॥ जाप्यो नृपति सुर

८

तही प्रगट भयो भुव भांन ।। कही भूप सों मंत्र
को सुनि जे सकल विधांन ।। १० ।। प्रात नाय के
भूप तुम जपियो मंत्र प्रीत ।। षटरस भोजन थो
सप्रति ।। पकु चाकु तो हित्त ।। ११ ।। इह विधि दिन
प्रति भोजन पावहि ।। आपन जैवे रिषिन जिमा
वैहि ।। रिषि सब भूपति कों समझावैहि तिह
वन वसि तन कछु दुष पावहि ।। १२ ।। करि दुषत
जयद्रथ आयो ।। हरन द्रुपद तनया कों धायो ।। स
कोन ने कछु यह कों कांधि ।। लीनो भीमसेन सो
बांधि ।। १३ ।। भीमसेन उवाच ।। अग्या मो हि सुसा
ईदीजे ।। बांधि दुष्ट अवही मारीजे ।। भूपति का
हे न ऐसो कीजे ।। बांधि मारिये अपजस लीजे
१४ ।। पाइ रजाइ सु सो मुकरायो ।। लजित षलु च
लिकें ग्रह आयो ।। करी तपस्या सीव की जाई के
ती वरषे तन मन लाई ।। १५ ।। दोहा ।। बहुत दिन बी
ति करत तप भयो महेस उदार ।। मांगि तो कों द मांगी वर
यो सोई वर सुषसार ।। १६ ।। जयद्रथ उवाच ।। भीम

वि०
॥ ८८ ॥

धनंजयधर्मसुत ॥ सहदेवनकुलकुमार ॥ मीचल
है मो साथ तें इहइ आमो सार ॥ १७ ॥ श्री शिवउ
॥ विष्णुभक्त वे पंचजन ॥ तिनसौं कहा वसाइ
एक घोस वे पंडसुत जीति जयद्रथ जाइ ॥ १८ ॥ चौ
पई ॥ तवही जयद्रथ इहवर पायो ॥ चलि कें दुरजो
धन ढिग आयो ॥ आयपराजय सव अनुसारी
तव मैं शिव की सेवा करी ॥ एक द्यौस शिव दीनौं
मो हि ॥ जीति जाय मैं दीनौं तोहि ॥ सुनि कें दुरजो
धन वहुलायौ ॥ दुष्य भयो मन आनद आयौ २०
॥ दोहा ॥ धर्मधुरंधर धर्मसुत विरहत वनमह जा
नि ॥ भेट्यो चाहत पुत्र कौं धर्मराज सुषदानि २१
लहे अकेलो पुत्र न हीं तव दानव वपु साजि ॥ सि
र अकास पग धरनि सों ॥ दाध्प छिउठिआगालगा
जि ॥ २२ ॥ उपैलेगयो न्रपति कौं वांन धनंजय ता
नि ॥ घालत नहिं ता दुष्ट कौं कांनि भूप डर मांनि २३
सिंघनाद लै भीम तहै ॥ गर्ज उठ्यो किलकारि ॥ गि
स्यो असुर भुव आय कैं ॥ ज्यौं मुर ह त्यौं मुरारि २४

॥सोरठा॥ कह्यौ ब्रासरि सिराई॥ अर्जुन सो उप
देस तब॥ भयो ईश्वर जाई मन वच काय के नेम
सौं॥ २४॥ दोहा॥ इन्द्र वां नल हि सुन्यो केहुँ पथ्य
सत्य भाउ॥ त्रिभुवन साई क स्त्रिया अमरपुरी
दरसाउ॥ २५॥ तब ईश्वर आज्ञा दई कुसुम
विमान वनाय॥ दरसायो सब अमरपुर मे स्त्रो
तहां सुरराइ॥ २६॥ चित्रसेन गांधर्व सौं प्रीति ब
ढी बहु भाइ॥ नित्य कला तिनि अर्जुनैं विद्या
दई सीषाइ॥ २७॥ पथ्य रिसायो इद्र बहु साते
सुरत वगाइ॥ नित्य करे सो सुरतरु नित्य वाज
न विदित वजाइ॥ २८॥ तोटक॥ अर्जुन की बहु
धा हरषी मति॥ ता सह देव प्रसन्न भयो अति
ईश्वर को सब धांम दिषावत॥ देषत पथ्य म
हा सुष पावत॥ ३०॥ विष्णुपुरी अवलोकिसबे
तहां॥ देषहु जाय विरंचि पुरी तहां॥ इंद्रपुरी महि
मंदिर राजत सुंदर रूप निसुक विराजत॥ ३१॥
चेय॥ सुंदर मंदरि कंचन से मनि नील कंगूरन नि
सौं छवि छाए॥ लाल मनो हर मांनिक जाल ष

चे सितखंभ विचित्र सुढार॥ विद्रुम मुक्ता अमोलिक
सों प्रति द्वार निबंद्ध रिखा रखनाये॥ सूरप्रभा सिखा आभा
क वि छत्र विलोकि कें पछ्य हिये सुषपार॥३२॥ चौ
पई॥ कह्यों गंधर्व अचंभो येह॥ काहेतें सुनो इह ग्रेह
कौ हइहलं मंदिर सो भाई॥ कि हि हत तज्यो सुक
हि समझाई॥३३॥ चित्रगंधर्व उवाच॥ ताल वर्ण
दांनव इह नाम॥ तिहि सुरखेजी त्यो संग्राम वाके
त्रास धांम इह तज्यो॥ आखंडल इह ओयह सज्यो ३४
सुनि कें पछ्य हि चिंता भई॥ सहस नैंन पे अज्ञाल
ई॥ कीनो रन दांनव सों जाई॥ वह रन ज्यों घोर द
लल्याई॥३५॥ दोहा॥ कहो कहांलगी जुद्ध कों बा
ढे कथा अपार॥ तालवरण का सब कच मू मारतल
गी न वार॥३६॥ छप्पै॥ करत अमित गति जुद्ध कर
त दानव बरजां न्यों॥ इंद्र पुत्रा शिव बांन कोंपि कें।
तव संधान्यो॥ रुंड मुंड कटि वाहु जानु जंघा कर टूटे
एक हि वा नन दानसर्व सेनावल लूटे॥ भयभीत
से पहत अमुर सव॥ न जित नितरन वन दुवि गए॥ ज
य जुव पछ्य करि वाहु वर सुतन मन आनंद उगए

३१ ॥ इंद्रहिसुवसवसायकैं सुचितैकरतहि
धाम ॥ लहियिग्रपाआयोपहु मिजीतिअसुर
संग्राम ॥ ३२ ॥ दोधक ॥ आयजुधिष्ठिरकेपग
वंदे ॥ बंधवसकलसुनतआनंदे ॥ तोसोतु
ह्मकाहिसीरदीजे ॥ सुरनरकौंनवरावरिकीजे
३३ ॥ इतिश्री ॥ ० ॥ अर्जुनविजयतालवर्णनं
नाम अष्टादशो ॥ १८ ॥ नराज ॥ तबैनरेसधर्मपु
त्रसंगबंधुलैभले ॥ निकेतनारीद्रोपदीमहाअ
रण्यमेचले ॥ लखैतहांअनेकपुष्पस्वर्णवर्ण
देखिकैं ॥ सबैसुगंधफूलमेंनबानहैविसेखिकै
१ ॥ उमयद्रोपदीलियेसराहितादियोकहै ॥ म
गाईदेईभीमसेनपुष्पआजहांलहै ॥ उडायपौं
नइहांपरेकहासुनारिपाईये ॥ नजानियेदिसा
सुकौंनकौंनदेसथाईए ॥ २ ॥ द्रोपदी ॥ विलोकि
देहआपनीविचारितुनक्यौकहै ॥ विनाअने
कजत्नतैनसरकोडियोलहै ॥ कसाअसत्नदैततै
विचारिचित्तमेंकियौ ॥ नदेहमोहिय्यौनिसोक

श्री॥
विजै०
॥८८॥

के रहै महा हियो ॥ ३ ॥ दोहा ॥ गदल ईत तव भीम क
र ॥ कंदो लै अकुलाइ ॥ उत्तर दिसि गिरि की द
रनि ॥ कांनन पो हैंच्यो जाय ॥ ४ ॥ वैठि वीर गिरी
सी पर पर ॥ उठै नौ महा गल गाजि ॥ पावस घन गर
ज्यो मनौं ॥ चले सिंघ मनौ भाजि ॥ ५ ॥ गिरि गाकर मग
सघन द्रुम टूटे गुहा पहार ॥ सुनत नाद हनुमंत तव
आय गयो तिहि वार ॥ ६ ॥ कियो वृद्ध कपि रूप
तिन परयौ वाट विच आइ ॥ अवलोक्यो सो भीम
तव सकै न वाट छुडाइ ॥ ७ ॥ तारि दै दै भीम डरावै
वानर के मन कछु न आवै ॥ फूकि फू कि कै कुहति
न लसका स्यो ॥ छुटै न मारग पचि पचि हास्यो ॥ ८ ॥ भी
म उवाच ॥ मारग छाडि कि हत हौं तोही ॥ नाथ तजी
व हिल स्या मोहि ॥ मेरे वचन प सो जोरै है ॥ अपनो
कीयो आप ही पैहै ॥ ९ ॥ मरकट उवाच ॥ हौं अस
क वक्रु भांति न हास्यो ॥ तुम समरथ इत उत गहि डा
रौ ॥ भीमसेन वर करि कै रहि हास्यो ॥ मरकट नट टरै न वौ
हु टास्यो ॥ १० ॥ तव तिन वक्रु विधि अस्तुति ठांनी ॥ सत्य

७०२

कहौ तुमको हो भाई ॥ असुर सुरेस कगंधर्व कोई
साची बात कहौ तुम मोई ॥ ११ ॥ गर्व हमारो वक्रु वि
धि भाख्यो ॥ वादौ रिभीमतव चरनन लाग्यो ॥ अब
जिनि कपट हिये मे राखौ ॥ अपने भेद सकल विधि
भाखौ ॥ १२ ॥ हनवंत उवाच ॥ हनूमान है मेरो नांम
बहे सपुत्र ऊतु वमन काम ॥ सुनत हि भीम अ
अकुलाई ॥ चरन कमल तिन वंदे जाय ॥ १३ ॥ दोहा ॥
सलिगर्व में मन करयो छमियो सो अपराध ॥ सदा
चुक जाकी छमु जो जन साध असाध ॥ १४ ॥ लीनी
लंका रूप जिहिं ॥ सो वपु देदरसाय ॥ कहै जुधिष्टि
र रूप सों निज के मन पतिपाय ॥ १५ ॥ मूंदत आंषे भी
म के कीनो रूप कराल ॥ पग धरती आकास सिर
निरषत भीम बीसाल ॥ १६ ॥ भीम दोहा ॥ देषि सकों
इह वपु नहीं ॥ विकल होत मम देह नाते दरसावो
वह निज सरिर करि नेह ॥ १७ ॥ निज मरति हनुमंत
करि दरसाई सो वाट ॥ पठ्यौ हितु करि कैं तहां कु
तिकम [illegible] जिहि घाट ॥ १८ ॥ भीमसेन उवाच ॥ दुजो

पोहो चेपुहेथ

धनकरि दुष्टता लीने जु पहराई ॥ बादश वरषै बन
लै आई ॥१९॥ दोधक ॥ जुद्ध महा उन सौं अब के
है ॥ जीतहि मो धरनी सब पैहै ॥ आप कृपा क
रि कै चलि आयो ॥ बेठि धुजा गल गाजि सुनायो
२०॥ होई सहाइक छांह ही कीजै ॥ तौ वर जीति
सवै भरलीजै ॥ बैन सुनै हितु वंत जवैजू ॥ बाह
दई हनुवंत तवैजू ॥२१॥ नाई चल्यो सिर सो
सिर दैव्यो ॥ उत्तिम कुंजन निजु लै विशेष्यो ॥ गंध
र्व रत्क करे दिषि धनंजै ॥ यौ तिन सों तव भीम भनै
जू ॥२२॥ दोहा ॥ अगपारे हुक पालके लहो प्र
सून निधाई ॥ जुकी गंधर्व कही इहै लक्षित नि
यो जाय ॥२३॥ खरवट सर वर पैठि कैं लीनो वी
डा वांधि ॥ रक्षक दौरे धन कगहि ॥ तौ छन वांन
न सांधि ॥२४॥ कमल फूल जु मत्त रधरे ॥ सिर तैत
बे उत्तारि ॥ को पिगदासी राक अंग ॥ गयो करोरि
कमारि ॥२५॥ मुदगर फरसा सत्रिकि सर ॥ भागे किं
नर डारि ॥ आंनि कमल दीने सकल ॥ प्रिय पांनि

सुषकारि ॥२६॥ युधिष्टिरउवाच ॥ तोसौंजरैंनकुछ
मैंकिन्नरजष्छिककोई तोहीतेमनकामनासवबि
विधिपूरनहोई ॥२७॥ तोटक ॥ जबहीवहुद्योसबी
तीतभए ॥ बनमांहअषेटकभीमगए ॥ फनदीरघप
न्नगएकलस्यो ॥ तिहिदोरितबेपगआयगह्यो २८
॥ दोधक ॥ भीमवलीनछुडावतछूट्यो ॥ हारिरह्योव
लदीर्घटूट्यो ॥ मारिगदाअहिकेशिरतोस्यो ताक
हेनेकसक्योनअंगमोस्यो ॥ २९ ॥ बीतिगएदसवास
रताही ॥ बाटतहांलगीभूपतिचाही ॥ बंधुनिसौंमिलि
कांननदेष्यो ॥ सर्पग्रस्योतबभीमविशेष्यो ॥ ३० अ
र्जुनसोंअहिवाननमास्यो ॥ दोरिसहदेवषंगप्रहा
स्यो भूपकहेकतपन्नगमास्यो ॥ देवनिकोअवता
रविचास्यो ॥ ३१ ॥ चौपई ॥ नागघोषनृपकेंसंताप
सर्पभयोमुनिविप्रनीश्राप ॥ तोसोजंतुआयहेकोई
तातेयाहिप्रहारनहोई ॥ ३२ ॥ भीमसेनकरिक्रुरिब
रह्यास्यो ॥ साकतमरतुम्हारोमास्यो ॥ कीनोंपन्नगजे
जेकार ॥ जान्योभूपधर्मअवतार ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ तुव
पुरषाऊंभूपमुनिनागघोषमोनांम ॥ विप्रदोषदुर

गतिभई ॥ भयोसर्पेराजनग्रांम ॥ ३४ ॥ अपनीनृपतामेमहा
दुष्टकीनौंअपराध ॥ तौनौदव्यसबविप्रनिकोरीनौ
दंडअगाध ॥ ३५ ॥ मोकहदीनौंश्रापतिनपायौइह्अ
वतार ॥ तबविनियोकरजोरिकेकैपाउंमुषसार ३६
कह्यद्विजनजवपकूमिमें ॥ होईधर्मअवतार जब
लगीहोसुभगतिनृपति ॥ ताहियरसितिद्विंबार ॥ चौ
पई ॥ छुवतजुधिष्टिरमिटिगयोदोष ॥ पायोनागघो
षनूपमोष ॥ छाडिभीमभयोअंतरध्यान ॥ आयेवंं
धवनिजअस्थान ॥ ३७ ॥ सबहीकेमनआनंदभयो
सोकद्रोपदीउरकोगयौ ॥ पंडपुत्रवनमेंब्योपरहि
बनफलषाईअहेरौकरही ॥ ३८ ॥ इतिश्री ॥ नाग
घोषमोक्षवननंनामएकोनविंशोध्याय: ॥ १९ ॥
दोहा ॥ दुरजोधनवैठ्योसभा वंधुनिमोसुषपाइ ॥ पंड
पुत्रपाचौंतबे हियराषटकेंआय ॥ १ ॥ करणदुसास
नसकुनितब बोलिलीयोसुषपाइ ॥ मोमनआईसो
करौ ॥ औरनकछूउपाई ॥ सवेया ॥ बूझतहैसवही
दुरजोधनबुद्धिउठीइहमोउरहीतें ॥ सुद्धिलहैनपि

नामस्त्रीषम जायजुधिष्टिर भूपहि आते ॥ लैंहि
गेयेसवदेसभंडार सवैधन आयैलयओधिवितीते
सानिचलेचतुरंग चमूसब बंधहि जीतैं कंजकुटीतै
३ ॥ दोहा ॥ मांनिरजासुसीसतिनि साजेदल चतुरंग
चलेभूपकरि दुष्टता ॥ कैएदुसासनसंग ॥ ४ ॥ गिरि
गकरमगदेषकरिलछ्यौघोरखनजाई ॥ चित्रसेन
गंधर्वतवरोषितपकज्यौआय ॥ ६ ॥ बांधेविधिकी
पासिसैं दुरजोधन भुवपाल ॥ मनवचकमैवफुक
र्नच्छपकीनौकोपकराल ॥ ७ ॥ गंधर्व ॥ सुंदरी ॥ क
रनमहीपतिकोपकरयौवर प्रेरिल्योवरखाननि
अंबर ॥ गंधर्ववोलिउठ्यौतिनसौंहसि कौंनछु
डावहि भूपलीयो यसी ॥ ८ ॥ देवनसुरनतूकतः
ठौंनहि ॥ मांनवजुधनहीउरआनहि ॥ गातलक
ऐसुवांननछंडन ॥ होतनहीकछुपोरिषमंडित
९ ॥ श्रवनकुलाहलपथ्थसुनि ॥ आयोसरधनुसा
जि ॥ निरषिवंधदुरजोधनैवलीउठ्योरनगाजी ॥ १०

विजै०
॥ ८९ ॥

॥ अर्जुनउबाच ॥ चौपई ॥ जोवांधोदुरजोधनरा
जा ॥ कहपथ्थतोहमकौंलाजा ॥ जहूंपिहमकौंमा
रनआए ॥ आपनकियेआपफलपाये ॥ ११ ॥ तबे
पथ्थविनवेगलगाजि ॥ तुमोपेकितउवरेभाजि
छाडिरायजोचाहेजियो ॥ नातरबंधतहोतुवहि
यो ॥ ११ ॥ गंधर्वउवाच ॥ दोहा ॥ दुरजोधनकरिउब
ताआयोतुवबधकाज ॥ अवलअकेलेजानिवन
उरकछूधरिनलाज ॥ १२ ॥ मित्रभावमेंडरधस्यो
तोवाध्योभुवराई ॥ बोलिपासिसोंप्योन्रपतिअर्जु
नकरसुषपाय ॥ १३ ॥ छूट्योम्रगज्योवधिकतेंयों
भुवपतिउरजांनि ॥ दियोरजाईसुधर्मसुतविदा
करेसुषमांनि ॥ १४ ॥ अर्जुनउवाच ॥ आजुभए
तुमतेंअरिनयोंकहिसमदेराई ॥ बिलषवदनउ
तकर्णतव ॥ चलेसदनदुषपाय ॥ १५ ॥ जैसीकरैसो
तैसीपावै ॥ ओछोताकेंओछोआवै ॥ परिहि
तकूपजुकौबोदेकोई ॥ निश्चैगिरिहेतामेसोई

१६ ॥ चौपई ॥ दोहा ॥ मलिनभूप आए सदन निसि
दिनकछुनसुहाई ॥ लषीलषीपुरबासी सबैयोस
बकरतबवाई ॥१७॥ पुरवासी उवाच ॥ गएविपनि
करिदुष्टताधर्मसुवनवधकाज ॥ बांधिलियेगंध
र्वनृपउपजीदलउरलाज ॥१८॥ कुलहिकलंकवि
चारिकैंपथ्थउठीअकुलाई ॥ चास दिषायेगंध
र्वैलानौंतुरतछुडाय ॥१९॥ गयेताकिहेदुष्टतागईजी
वकीआस ॥ पथ्थछुडेराजांनिकैं वैठेमलिनअवा
स ॥२०॥ हुतेजहांनृपधर्मसुतधर्मराउतहांआई ॥ दे
षनसत्याकरिदयौमायाम्रगमुकराय ॥२१॥ आपवि
प्रकौरूपकरि आयौभूपतिपास ॥ कह्यौदेहुम्रग
मारिकैंरहपुजबोमोआस ॥२२॥ तुमक्षत्रिहौवि
प्रहौंरक्षटारोमोआरि ॥ तौश्रीजैमौकाजसवसंघ
जाईजोमारि ॥२३॥ दोधक ॥ बंधवपांचतहांउठिधाए
काननमैंम्रगकेढिगआये ॥ दुरिकरूकरुसुम्रतनिय
रैं ॥ हाथिचढेनघौरैकरुघेरैं ॥२४॥ लागित्रषावनथाकि
रहहैं ॥ छेशभयेनहिजातकहेहैं ॥ पर्वतपैचढिकैत

विजै०
१९०

बहैरें॥ देषत सूझिय सो जल नियरै॥२५॥दोहा॥ नकु
ल आयो तब अंबुदित्त॥ लीनो भरि कर नीर भई अका
सबांनी तहां॥ चक्रत भयो सुनि धीर॥२६॥चौपई॥ मे
रे प्रस्न उत्तर दे हि॥ तब तू नीर आप कारले हि कह्यो न
ताको इन कछू मान्यो॥ नकुल नीर तब बाहिर आंन्यो
२७ प्रांन तजि गई ताकी कांषनि॥ चिंता करी युधिष्ठि
रराय॥ सहदेव धाई निरहित गयो॥ वाही विधि तिनि
हुं जी दयो॥२८॥ अर्जुन भीम गए जल पास लयो।
अंबु भलके भूरि बीस॥ फीरि सो शब्द अकास ह भयो
उत्तर ताहि न तिन हूं दयो॥२९॥ म्रतक परे ते ता जल
पारि॥ गए जुधिष्टिर भूप विचारि॥ नीर दुहु भरि अंजु
लि लियो॥ सोई शब्द अकास ह भयो॥३०॥ अकासवां
नी उवाच॥ होव्रुमो नृ उत्तर देहु॥ पाछे देव नीर भरि
लेऊ॥ धर्म बिवाद सकल तिनि छ्यो॥ भूप सत्य सब उ
तर दयो॥३१॥दोहा॥ लोभ कहा गुनवंत मिको सुगु
हानि कहा जु समो वितयेतें॥ दुष्प कहा जड मूरष सं
गति॥ सुष कहा अपवाद कियेतें॥ नेह कहा जीम रैन
बस उर देस कहा उपदेस कियेतें॥ मीत मसो पति आहि सें
तें

मेंत्रियसीलवतीहितकेचितयेतैं ॥ ३२ ॥ चौपई
कह्योभूपमेंराष्योतोहि ॥ प्रीतिभईउरअंतरमो।
हि ॥ अवतेरेमनमेजोभावें ॥ वरमागेंसोमोपेपा
वे ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ च्यारोविरमरेपरे ॥ तेअवदेहुजी
वाय ॥ औरनहीमनकामनां ॥ इहकरौसुषदाय
३४ ॥ धर्मवाच ॥ जोचाहेच्यारौंनमेसोईदेहुजी
वाई ॥ औरनजीवेतीनएनिश्चेजांनौराई ॥ ३५ सो
ईअवकीजेसत्यभाऊ ॥ कहीभूपसहदेवजीवाऊ
फेरिभईउरधर्मेंबांनी ॥ बातभूपतुममिथ्याजांनी
अर्जुनभीमबीरमाद्राये ॥ कहिकाहेनैवेनजिवा
ए ॥ ३६ ॥ राज्ञोवाच ॥ निजबीरनकोपकरौवांहअ
जसहोईअतिधरनीमांह ॥ तातेसहदेवदेवजिवाय
मिथ्यावचननभाषोराय ॥ रीझ्योधर्मदेहधरिआ
यो ॥ सतवंतभूपतिउरल्यायो ॥ ३७ तेरोपिताधर्म १४ला
हौंआई ॥ अवदेहुएेसबैजिवाय ॥ जलसौछिर
किजीवायच्यारि ॥ कहीसुनोसुतसवसुषकारि
बारहबर्षगाईवनवीति ॥ चलियोव्यासकरजाहि

रीति॥ धर्मराउकहिस्वर्गसिधायो पांचोवंधुकटीतहां
आये ३९॥इतिश्रीमहाभारतेपुराणेविजयमुक्तावली
कविछत्रविरचितायांदुरजोधनमाममभंगवर्णनंनामवि
शोध्याय:॥२०॥दोहा॥धरमसुवनभूवभूपतब सुमि
रेश्रीरिषिव्यास॥आयगएतितिहिंठावही करनसकलदु
षनास॥१॥चामरछंद॥वुद्धिदैंरिषीसमोहिजायकै।
कहांरहैं॥सुष्पसौंरहैजहांसमूहवस्तुकौंलहैं सोध
अंधपुत्रसोधरंचकौंनपावहीं॥ठावसोहमैरषीसकै
कृपावतावही॥२॥व्यासउवाच॥औरतौदिशानभू
पपावरेइरोनही॥जाकूजूविराटदेसमुष्पपाइहोतहां
च्यारिवर्णकेहियेमहांमहादयारहै॥गुप्तहोईजाय
कैंरिषीसवातयोकहै॥३॥दोहा॥तवरिषीसकोव
चननृपकीनोंपरमप्रमांन॥तवविचारकीनौंइहै
सवगुनगपाननिधांन॥४॥चोपई॥जेरिषीनामभूप
कोभाषै॥नामजयंतभीमकोराष्यौ॥विजैव्रहंडला
अर्जुननाम॥सहदेवग्वालभयोगुनग्रांम॥५॥वाह
कअश्वनीनकुलकुमार॥योकहिकैरिषीकियोवि

चार॥छाड़िगर्वसेवगझ्योंसेवा॥कीजेमनमारेतु
मदेवा॥६॥व्यासउवाच॥सोरठा॥क्रोधतजोहै
विरोधतजोअरुगर्वतजोतुमधामपराये॥आइसु
पायकरोसबधायसुजायरहोसबअपुराये॥जं
चोऊंनीचोकहेकोऊआयकेंसोऊसुनोरहिये
सिरनांयकें॥सोचनमोचनराजीवनेनसदारहि
योतिनसोंचितलाये॥७॥सोरठा॥चलियेतेहीठां
हजबजैसोसमयोलषे॥गर्वनहीमनमांहनैकहूं
रूपविचारिये॥८॥दोहा॥इहविधिकेबहुसिष
देगयेव्यासरिषिधांम॥सोईमतरहिदेलह्योमन
सावाचाकांम॥९॥॰पाईसोभूवपालनवब
नते॰भयेउचाव॥॰पांचोबंधवकरिछिमाआये
नगरविराट॥१०॥मृतकपुरुषसोबांधिगिहीआवध
बांधेधाई॥नगरनिकटतरवरसमीतापरराख्योजा
इ॥११॥निरषिग्वालताथलकह्योयाहिछुवैजोआ
ई॥बरषदिवसलौंमृतकइहताकहुबैहैधाई॥१२॥
इहकहिकैग्वालनिबोराय॥आपनचलेनगरकौ
राय॥पठतनगरसगुनभयेघने॥सहदेवसोंभूपति

विजै०
॥ ८२

नौं ॥ १३ ॥ राजोवाच ॥ कैसेसगुनभयेसुषकारि ॥ सो
तुमबंधवकरौविचारि ॥ ऐसेलछिनपैयहिचालौं
हैकैकाजसकलमनमांन्यौं ॥ १४ ॥ सहदेववाक्यं ॥
वालषिलावतवालककौंसुतग्रस्तनपालकौसुरभी
कौं ॥ सुषमेह्योससिरावहिगै ॥ सबहोयगौकाजमहा
पतिजीयकौं ॥ लीलगयोद्विसिवामचिकारी ॥ कछू
हमोउरलागतफीकौं ॥ केतिककालवितीतभये
तवसोचउठैकघूविग्रहजीकौ ॥ १५ ॥ चौपई ॥ पुरमे
बंधवच्यारुरहे ॥ राजसभाचलिभूपतिगए ॥ द्विजके
रूपकरोतिलियेंसोहतवादशातिलकैंदियें ॥ १६ ॥ उठि
विराटनिरषतसिरनायो ॥ कोनविप्रकहांतेआयो ॥
देअसीसबिनवैयोराई ॥ धर्मसुवनकोवरवाआय ७
गिरिगकरहैकैदुरिगयेपंचौं ॥ मोसौंवैनकह्योइहसां
चौ ॥ जाउविराटमहीपतिपास ॥ रहिहौंतहांसुषीसु
विलास ॥ १७ ॥ धर्मपुत्रतुमपासपठायो ॥ तातेंनिकट
तुमारैंआयो ॥ सुनिभूपतिकीनौंसनमांन ॥ बैठोगग
नमनिग्पाननिधांन ॥ १८ ॥ राजोवाच ॥ जेरिषीनामका
सरिषिभाष्यौ ॥ सुनिछितिपतिवकुआदरराष्यौ ॥ अ

नृप

धीसनवैठैनोभुवपाल॥ सिरपरितानेछत्रअनूप ॥ १९ ॥ फिरिकैआयोभीमकुमार॥ आइभूपकोकियोजुहार॥ दीरघतनदीरघभुजदंड निरषतकोतिकभएअषंड॥ २० ॥ राजाविराटवाक्यं॥ दोहा॥ कितेंतेंआयेकौंनतुम॥ कहातिहारोनांम कौंनपांतिकिहिहेततुम॥ आयेमेरैधांम॥ २१ ॥ भीमसेन॥ गीतिका॥ व्यासनामजयंतभाष्यौपंडसुतकेद्वारहैं॥ सर्वदाकरतोतहासमभीमभीमकोआहारहौ॥ दयाकरतेस्वतहोभोजनसलौंनेंअतिघनें॥ अतिहिसुगंधितसुघरविंजन॥ सकलषटरससोसनें॥ २२ ॥ रिझीमनरेसदिनप्रतिदेतपटभूषनघनें॥ राषतेवहुमांनमेरोअतुलसरिवरमोपनें॥ केविराटउदारहितकरिवचनअमृतभाषियो॥ हेतसोवहुमांनिकरिकैंनिकटअपनेंराषियो॥ २३ ॥ दोहा॥ नीरष्योसरवरभीमकीभूपतिताकोदेह॥ वेसोवलीविचारिकैं॥ ढिगराष्योकरिनेह॥ २४ ॥ फिरिअर्जुननटरावकैं॥ कीनोत्रियकोरूप॥ कंकनकिंकनिआदिदे सजिसुभोअनूप॥ २५ ॥ सीदुरसी॥

विनो०
॥९३॥

[सुप] सतमोलसुषसहिदीजन[illegible]पानि॥ बीवकचरनमंदेग।
कीधुनिकोनीतिनश्रांनि॥ २७॥ सुनिभीतरिवोलेनृप
ति॥ सवकुंमोबोहार॥ सकलगणवसंगीतलषि॥ कल्ला
चोगुनीचारु॥ २८॥ अर्जुनउवाच॥ होंश्रपारेधर्म
सुतकेरहतवकुसुषपाईकें॥ भांतिभांतिरिझावतो॥
करिनृत्यगीतसुनाईकें॥ कोंनअपनोगुनकहेसव
हूफेंबेरिषिबोलिकें॥ देंहिसकलसुनायकेंसवक
हतविद्यावोतिकें॥ २९॥ दोहा॥ पारथकोमेसारथी
विडेबहंडलनाम॥ जीवनआयेरावरेग्रेहलयोविश्रा
म ३०॥ बृहंडलउवाच॥ धर्मपुत्रकरिकेंवकुनेंहपठ
एइहांजानिकेंग्रेह॥ अवश्राभारहमारोलेकु॥ वस्त
रअन्नवरषमरिदेह॥ ३१॥ लघुकन्यावालकहिपढाई
हरनगुनसंगीतसीषाउ॥ भूपसनाउत्तराकुंवारि॥ सो
पीपढनयोगसुषकारि॥ ३२॥ फिरिसहदेवपहोंमो
आय॥ सुद्धिकरिभूपनिसोजाय॥ सहदेवउवाच॥
होंतोधर्मपुत्रकोग्वाल॥ करतोमहाकणभुवपाल
३३॥ वेतोडुरिकनविधिनगरा॥ देउपदेसपठेइहांदय
करिजांनोंगायनकीसार॥ अरुसवविधिगहिसको

हथ्यार॥ मोदेषतधनुकोकहिहै [illegible]सोस
मतीकैं॥ [illegible]ामसैंनइहुब्रतिहमारी इहजीवका।
चित्तविचारि॥३५॥ अरुजयंतजैरिषिमोजांनैं उ
न्हैंहूजिभूपतितवमानैं॥ सुनितिनिजंन्योवृद्धिवि
साल॥ सोपीसुरभीकीनोग्वाल॥३६॥ दोहा॥ फेनि
निकुलआयोतहांलीनोताजवहाथ॥ देषिरूपकी
रासितहां॥ चक्रतभयोनरनाथ॥३७॥ विराटउवाच॥
कौनपातिकोआपहौं। कहातुमारोंनांम॥ कहिका
रणकविछत्रकहि आयेमेरेधांम॥३८॥ दोधक॥
नाहकभूपजुधिष्ठिरकेरो॥ राषतमांनसबेविधिमे
रो॥ वेदुरिकैंवनमांहिसिधारे॥ देसवत्तेंइमकुउषभा
रो॥३९॥ काटरकूटरअश्वचलाऊ॥ जौजनसोइक
बासधेनई वरुहुओरिषिकौंगुनमेरो॥ मैंवहुनांम
सुन्योनृपतेरो॥ मोकहुसापियेसाहनजेते॥ जान
हुगोगुनमैंमेतेते॥ योसुनिभूपउदारभयोचित॥ हे
तकस्योवकुधानितहिनीत्ति॥४१॥ दोहा॥ आयौ
साहननकुलकरि॥ कैभुवपालउदार॥ वकुरोआई
द्रौपदीभूपतिसदनमझारि॥४२॥ देषतभूपतितरु।

विजै०
॥ ९८ ॥

निडुतसंभ्रम बढ्यौ अपार॥ सचिकिधोरति मैनका
रंभातेसकुमारी॥४३॥ नगीपन्नगीकमलयाभुवआई
यस्हिहि॥ सवरनबासचकोरसोससियोआईग्रेह॥४४
राजोवाच॥ कहोकौनकीकुलवधु अईइहांकिसकं
म कौंनम्यातिवरणौसकल सवविधिकेंगुनग्राम
॥४५॥ द्रौ प दी उ वा च॥ पंडपुत्रग्रहद्रोपदीरानीपरम
उदार॥ ताकिदासीमोहिमानि॥ आईहोतुमद्वार॥४
६॥ सुंदरी॥ वेपतिसंगगाईवनमेंदुरि॥ मोसहवैन
कह्योहसिकैंमुरि॥ जाहुविराटमहीपतिकेघर॥ का
टहुकालतहांइहऔसर॥४७॥ आईतुवसेवाकरन
मोहिसुजांनीनांम॥ अग्यादेहुककपालकै करौइहांवि
श्राम॥४८॥ रानीउवाच॥ कौनसेवउद्दिमकहाक
रिजानौकहिवाल॥ चंद्रवदनिसोवेगकहि॥ सासोपो
उताल॥४९॥ द्रौपदी०॥ दंडक॥ मंजनकराउंसव
भूषनवनाउ॥ चुनिचीरपहिराउंआछेभाईनसंजोय
हैं॥ दर्पनदिषाउंदरसाउंमहानिकीदुति कुंकमसुगं
धघनसारउरलोयहों॥ बीजनडुलाउं॥ जलसीतलपी

लाऊ ॥ अरु सेज़ नहो विछांउ न करो गीका ज दोय हैं
ऐसें कैं सुजांनी कहतजांनों नीकैं मोरी रांनी ॥ मूरु ह
न षाहु ॥ औरपाय हुन धोय हो ॥ ५० ॥ राजोवाच स
त्यवचन ते कहे सुजांनी ॥ मेतु निज्ञ पंडु को जांनी ॥ त
म नया समेरे ग्रेह मेरहिये ॥ मोसौं मन की बाता कहीयें
॥५१ हलकी भारी जो कोउ भाषें ॥ तू जिन ताको आ
दरा षे ॥ थोरे हि की जो संतोष ॥ निस दिन करिहो ।
तु वपरिपोष ॥ ५२ ॥ सुजानी उवाच ॥ गीतिका ॥
करतरता पांच गंधर्व ॥ अंतरी छ्य सदा वसें ॥ विक्रमी
बलवंत वक्रविधि घोर रूप महालसें ॥ देहि मो को दु
ष्य जो वैं ॥ आई ताहि संघारिहैं ॥ देव कों नरदेव कों छ
ति देव कों न विचारिहैं ॥ ५३ ॥ पाप दृष्टि जो मोहि देषें
प्रान गत जो जानियो ॥ पांच सरत्वक वेसदा इह ॥ सत्य
के उर आंनियो ॥ निकट तिन राषी सुजांनी ॥ परम ।
जियसुष पाय कें ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ इहि विधि पंचो पंड
सुत ॥ और द्रोपदी वांम ॥ काल छ्यपति न कें करें ॥ छत्र ।
सकल गुन यांम ॥ ५५ ॥ चोपई ॥ हो हि एक संग काल
द्दिपाई ॥ सकल अवस्या वतो जाई ॥ ५६ ॥ जब भूप

तिहि जहारण आवै ॥ प्रथम हि जे रिषि को शिरनां
वै ॥ ५६ ॥ इति श्रीमहाभारते पुराणे विजयमुक्तावली
कवि छत्र विरचितायां पंडव अग्यात वस वर्णनं नाम
एकविंशतिमोध्यायः ॥ २१ ॥ दोहा ॥ अपनी दुहिता
कों रच्यो नृपति विराट विवाह ॥ छत्र सकल पुर मैं भये
गृह गृह प्रति उत्साह ॥ १ ॥ छिति के कित्ते छत्री सत
ब आये तिनकें धांम ॥ सक्र समान पराक्रमी जगमे
जीनके नांम ॥ २ ॥ सोरठा ॥ समार ची तिहि काल ॥ अ
मरावती सी जगमगी ॥ आपन ज्यों सुरपाल भूमिदेव
सब देवसे ॥ ३ ॥ नराज छंद ॥ कहूं नृत्यकालीन के।
नृत्य सोहैं ॥ कहौं राग की तान सों चित्त मोहैं ॥ कहो कं
चनी लै मृदंगीन चावैं ॥ लसै उर्वसी सी सवै मांन पावै
४ ॥ कहूं मत्त माते नरैं भीम भारे ॥ कहूं सेष सूरे उराडे
र रारे कहूं मत्त मातंग के घोर घूमैं ॥ तमी पुत्र से देखि
ये चारु भूमैं ॥ ५ ॥ दोहा ॥ मत्स्य एक आयो तहां वांने वां
धे जाल ॥ पगा मै टोडर पीतपट बोलि उठ्यो उत्ताल ॥ ६ ॥ स
भा मांझ नरनाह सब आरव नरन की भीर बडे धनुर्ध
र साहसी देषत हैं सब वीर ॥ ७ ॥ मासो मत्स्य कहे रे नही

कौतुकाकुदेस॥ हैकोऊमोसौजुरै अगणादेहुनरे
स॥८॥ छप्पै॥ मरहठसोरठजीतिजीतिसारंगतिलंगी
जीतिविदरभीमल्लसकलभूधरकेसंगी॥ मगधजीति
मेवारनगरवरजीतिचंदेरी॥ बंदरवारिधघाटजीतिकर
नाटकन्हेरी॥ कविछत्रजीतिअंगदनगरनहिकोऊस।
रिवरिकरि८सकें॥ भुजवदहुसभातिहिसूरकेसुकरि
बरमोसनमुषतकैं॥९॥ चौपई॥ सुनिसुनिसभानवो
लेकोई॥ मनसाहसकाहूनहीहोई॥ नृपतिविरागहि
सुधिभईआई॥ लीनोस्वारथजयंतवुलाई॥१०॥ राजो
वाच॥ सुनिजयंततुआयुसमांनि॥ मल्लजुद्वतुयासों
ठांनि॥ जोहारैतोलाजनहोई॥ जीतेदेईद्रव्यसवकोई
१२॥ दोहा॥ तबजयंतइहमल्लसौंकहीबातहरखाई
हमतुमरससौंबेलियेलीजेसभारिभाय॥ तूजोआने।
रोसमनडारैमुजाउषारि हमपरदेसीनन्पायही देहै
भूपनिकारि॥१३॥ दोहा॥ तनदीरघदीरघभुजा वच
नकहतकतदीन यौंसोऊँनहिउचरैंहोयजुतनकैं
हीन॥१४॥ चौपई॥ मल्लजुद्वदोऊमिलिकरै॥ लट
पटायधरतिधुकिपरें॥ फिरिफिरिखरकरिउठतस

विजै० म्हारि॥ कोउनमानैदुहूनमेहारि॥ १५॥ तवजयंततुअ
॥९६ बरकियौ॥ मद्यउठायपहुमितैंलयौ॥ करिवहूक्रो
धसुभूतलडारयौ॥ जनुसुरवज्रधाईगिपारयौ॥ १६
सम्हरिउठ्यौयेवचनसुनाई॥ अबमारुंतोषकला
कितजाई॥ लैतवगुरजउठ्यौअकुलाई॥ हन्यौजयंत
नासिकाआई॥ बीषमचोटथरहरयौसरीर॥ मुरछी
तपऊमिगिरयौबरबीर॥ १७॥ निरषतजेरिषिओर
सुजांनि॥ हैहैकरिकरिकेअकुलांनी॥ चेतिजयं
तउठ्यौगलगाजि॥ जांननपायौसोबलभाजि॥ १८॥
भ्रमहिसातबारउठिमारयौ॥ गहरौगर्बदुष्टकौमारयौ॥
फिरिसोउरयौनकरिबरजोरि॥ दोवरकौनौंमछूम
रोर॥ २०॥ देषतसभासकलनरहर्षे॥ बसनरजत
मनिमांलनबर्षे॥ अतौदियौसुरसरीवहाई॥ तबस
बसमदेराजाराई॥ २१॥ तोटक॥ मत्तगयंदहुतौ
इकऐसो॥ अंजनकोभूवभूधरजैसो॥ नीरनिकेत
सोछोरिचलायो॥ गर्जतधांमनिडारतआयो॥ २२॥
कांनिमहावतकीनकरैसौ॥ प्रांनतजेढिगआवतहै

सो॥ सुंदरमंदिरडारिदयेजू॥ भीलसबैनरनारिभ
राजू॥२३॥ भूपतिसोंसबलोगपुकारे॥ हेनरकेति
ककुंअरमारे॥ ताहितकेंतिनलोगपठाये॥ बांधहु
याकहंभाषतआए॥२४॥ चोपई॥ कोउनीकटसके
नहिजाई भूपतिसोंसबहिंसुनाई॥ क्योंहुंहाथि
नकुंअरआवे॥ करेउपावसुभूपवतावे॥२५॥ दोधक
केसवमिलिकरबांधहुजाय॥ केअवसस्त्रवधोकि
नताहि॥ वोलिजयंततेअज्ञादई॥ यागयंदतेचिंताम
ई॥२६॥ केवरबांधिकिताकहमारि पुरकोकंटक
खेगिनिकारि॥ कहेजयंतजुमारेंयाहि कुंअरकोजि
नपकरोजाय॥२७॥ सिंघनादगाज्योवलबीर तवग।
यंदथरहस्योसरीर॥ पुंछपरिवफकजोस्योअैसौं॥ या धा
वतम्रगकोंचीताजैसो॥२८॥ पकरिरदनलेपहुच्यो॥
थांन॥ ज्यौंअजयागहिलाजहिकांन॥ बांधिताहिम्र
पहिसीरनायो॥ तवजयंतवसननिपहरायो॥२९॥ दो०॥
इहविधिवितेमासदस॥ नृपबीराटकेतीर॥ कालछेप
इहविधिकेरैपंडपुत्रवलबीर॥३०॥ इतिश्रीमहाभा॥

रतेपुरा[illegible]हारवली कविछत्रविरचितायांभीमसे
नविजयग[illegible]नामद्वाविंशतिमोध्यायः॥२२॥सोरठा
नृपतरुनीकोवंधु॥कीचकवलीविसालतन॥जोवनम
दअतिगंधसहसदुरदसताहिबल॥१॥दोधक॥सतवं
धवकीचकअतिवली॥बरअवगाहतरनअस्थली सो
हतएकमांतकेजाये॥अैसेसुमटमहीपतिपाए॥२॥गी
तिका॥एकद्योसकीचकमोहकेनिजमहलभूपतिकेग
यो॥कीनेप्रनामअसेसभग्नीटिकेंआसनदयो॥वाउ
तहांटेरैंसुजानी॥नृपत्रियाभोजनकरें॥रूपदासीकोवि
लोकतदेहकीचकथरहरैं॥३॥बातभग्नीसोकहेचित्त।
अटकदासीसोरह्यो॥कालघेर्योमूढहहसिकेसुजा
नीमोकह्यो॥हेपंचगंधर्वमोहिरक्षक॥तुरतताहिसंघारि
हे॥वहवली होईकहोयनिर्वल॥कछूचित्तनविचारिहैं
४॥कामअंधभयोसुआतुर॥तुरतभगनीसोंकहे दे
हदासीमोहिमांगे॥इछ्यामोउरयोरहैं॥देहुवदलेस
हसनारी एकइहमोदीजीये॥याडिलज्पाकहीतोस
कह्योमोरोकीजीये॥५॥रानीउवाच॥आहिदासी

द्रोपदी की कहो किहि विधि सोइ ॥ ऐसे नैं उत्तरा
सम लोभ चिन्तन कीजिये ॥ जीवको [illegible] आयहीर
मी ॥ सो कहै कौ पाई कै ॥ दई न जाई बीर मोपे ॥ आपधं
म सिधाइये ॥ ६ ॥ कीचक उवाच ॥ कहि कै से तू राखी
है दासी बरकरिलैंहु ॥ राज पाट सब छीनि कैं कोटिको
टि दुष देहु ॥ ७ ॥ चोपई ॥ चेरी लागि न सावे राज ॥ तेरो
कहा सुधरि है काज ॥ अति बलवंत बीर है मेरे ॥ राषि
लेहि कौ ऐसो तेरे ॥ ८ ॥ रानी ० ॥ परतरुनी रत जे नरभ
ये ॥ अपनी करनी ते मिटगए ॥ जो चाहे अपनी कुस
रात ॥ फेरि कहै जिनि या की बात ॥ ९ ॥ सवैया ॥ ग्रंथ
महा दशकंध हरि सीय राघव को सरताउर साल्यो ॥ स
क हि स्राप दियो मुनि गौतम ॥ जानि कुकर्म के कर्म
निचाल्यो ॥ सुंभ निसुंभ हते तरुनी अरु तारहिलाय
गिव ध्यो बरवाल्यो ॥ यो समझे मन मे सठ तू किनि
कौन गयो पर वाम को घाल्यो ॥ दोहा ॥ भगनी मुष ए
वचन सुनि ॥ उठि सिसु धायो धांम ॥ विकल महा जि
य कल नही ॥ धरी मुहूरत जांम ॥ १० ॥ चोपई ॥ कीच

बि०ऊ०
॥९८॥

ककुसुधिबुधिनहारही ॥ सुनेंसदनसुजांनीलही का
मअंधअंचलतवगहौ ॥ आतुरकैयाविधिसोक
ह्यो ॥ १२ ॥ चित्तमेरोतेतसौंअवलागो ॥ मोआसक्के
सुधीरजभाग्यो ॥ मेरैतरुनीससिउनहारि ॥ सबपरिह
रीसुहागनिनारि ॥ १३ ॥ उत्तिमभूषनवसनवनाउ
अरुदासीकोंनावमिटाऊं ॥ काहूजीवनजनमगमा
वे ॥ तूतौमोउरमेंअतिभावे ॥ १४ ॥ सुजांनीवाकं ॥ गं
धर्वपंचमाहिरिझवारे ॥ दिरघतनवलविक्रमभारे ॥ मो
हिधीवतवेतुरतहीआवे ॥ कीचकनेरमांननसा
वे ॥ १५ ॥ तोयमेरेमोअपजसक्केहे ॥ मोहेदोससक
लजगदेहे ॥ इहसुनीकीचकवकुभोमांनी ॥ तुरत
गयोमुकरायसुजांनी ॥ १६ ॥ निसदिनताकुंनिंदन
आवैधनसंपतिघरबारनभावे ॥ इतीबोलीसुइ
हविधिकरी ॥ वहदासीमोचिंवसिरही ॥ ७ ॥ मो
रेल्पावसुजांनीअवे ॥ मोमनईछापूझेसवे ॥ वहु
भांतिनहुतीसमझावे ॥ चित्तसुजांनीकछूनआवे

१८ ॥ इहविचारिनहीबोलेसोई ॥ आजुकालिक
छूकलहनहोई ॥ कीचकआतुरकैउठिधायौ ज
हांसुजानीतिहिथलआयौ ॥ १९ ॥ दोहा ॥ सूनेंग्र
हमैपाईकैगहिकैसकरिधाई ॥ अबकहिधौंतो
कोंअवै ॥ कौंनछुडावैआय ॥ २० ॥ दासिकर्मकर
यकैत्रासदिषांऊंतोहि ॥ अपनीमनभाईकरौं
इहैआंनहैमोहि ॥ २१ ॥ कैसौंकुंघलनहीइछैत
जै ॥ अंचलडास्यौफारि ॥ कैरतैंकेसनसोतजैअ
तिअकुलानीनारि ॥ सुजानिउवाच ॥ जांनतरस
कीरीतिनही ॥ तूषलराकहूबात ॥ परतरुनीकैं
मनदीयैं ॥ तबसुषसबसरसात ॥ २२ ॥ रसहीरस
हीमनमीले ॥ तवलहिएपरनारि ॥ बौरायौयेवच
नकहि ॥ मूढकैपाऊंविचारि ॥ २४ ॥ सिथलभयो
येवचनसुनिकैसद्यियमकराय ॥ सुजानीवाकोंरै
निभयेतेंकौंनलहूनांचअषैपैरैजाय ॥ भोगजोगसुनै
सदनबैनिसिकीचकराई ॥ जाऊंतहांहौंआईइहं

विरा० ॥९९ जांमुकौरैनिविहाई ॥२५॥ कीचकयोसुनिकैंसुषपायैं
बैनसुन्योहिलवंतसुहायो ॥ आतुभयोअपनेग्रहसोई
चाहतवाटनिसाकबहोई ॥२६॥ बैनकह्योतबैआ
यसुजांनी ॥ दैपतिभूपतितहांसुषदांनि ॥ कीचककौ
निननैकनराषी ॥ सोगतिबांमतहांसवभाषी ॥२७
आयसअर्जुनकौंनृपदीजै ॥ कीचकमारहिसोमत।
कीजै ॥ रोवतबांमहिस्वासनआवत ॥ भूपतियाबि
धिकैंसमझावत ॥२९॥ दोहा ॥ माससहोसवितैंत्रिया
मोव्रतपूरनहोई ॥ तौलगिकालहिकाटिए लषैक
छूनहिकोई ॥३०॥ चौपई ॥ अवविधितैंकीचकसं
घारूं ॥ नतवनाहीओरविचारविचारूं ॥ कैंतौलागि
रहियेमनमारि ॥ कैंवनवासकरावऊनारि ॥३१॥ किल
षवरनत्रियपैंहोचीजहां ॥ हुतेव्रहंडलअर्जुनतहां
बरनीकीचककीअधिकाई ॥ भूपतिकेमनकछूनआ
ई ॥३२॥ मेरौकह्योतुमसाईकीजै ॥ ।हतकीचककौं
जगजसलीजैं ॥ तुमहिंअषित्तकीचकउपदयो ॥ ।

पोरिषकहांतुमारोगयो ॥ ३२ ॥ अर्जुनउवाच

जो भूपतिको आयसपाऊं ॥ तोकिचककोंमारि

गिराऊं ॥ नृपकी कानिनतोरिजाई ॥ तातेकछू

करोनऊंपाय ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ गईनकुलसहदेव

पैंविलषिवदनवरनारि ॥ अधिकाईतादुष्टकीस

बविधिकहीविचारि ॥ ३५ ॥ सुजांनीवाच ॥ कीचक

बाहहमारीगहि ॥ तुममेंकहोकहांपतिरही मे

रेजियकोपरिहसुसारो ॥ कोंनआपनेअरिकोंमा

रो ॥ ३६ ॥ सहदेवनकुलउवाच ॥ सुनिसुनितेरेब

चनअब ॥ वाढ्योक्रोधअपार ॥ मेट्योजायननृप

बचन ॥ विनयोवारंबार ॥ ३७ ॥ मारैकीचकछिन

कमैकोअबसकैवचाय ॥ कैरेअवगपानारिअ

बकोकहिनकीहिजाय ॥ ३८ ॥ चोपई ॥ मासएक

तूओरनिवारि ॥ तवसकिसैंकीचककोंमारि।

ईनहुतेत्रियभईनीरास ॥ पहुचीभीमसेनकैपास

३९ ॥ सजलनयनभरिआंसुढारै ॥ भीजतनयनभ

येरलोरे ॥ पवनपुत्रजवइहविधिजांनी ॥ विलषी

विनै०
॥१००॥

मरीहारसुजांनी॥४०॥ आयोहारलषीत्रियनेन
खासालेले कहैलबैंन॥ बोलिविलषीअसुवनिमां
ह॥ कीचकदुष्टगहिमोवाह॥४१॥ पंडूसुतननपेंफि
रिउकारि॥ वेनगुहारिलगोकोऊचारि॥ अवजोसां
ई'तूसहिरैहै॥ गहिसेदुष्टमोहिलेजैहै॥४२॥ सवै
या॥ रोसवढ्यो विषसोसवअंगलषीत्रियकेमुष
पेमलिनाई॥ क्रूरतईतरफेरिनदेत्त॥ गरोभरिकें
मुषवातनआई॥ कीचककोसुनित्तामुषनांम
सुदेरिगिस्योंदृगमेअरुनाई॥ देषतहीवधि
होछिनमेइह्इहपेंजजुधिष्ठिरलाषदुहाई॥४३॥
सेहष्यिमीचवुलाईलईतिनस्यारवरायकेंसंघ
सोंषल्यो॥ दाउरधायजुस्योअहिसोंसुकपोत्तकि
धोंवरवाजसोंझेल्यो॥ मुषकजुंवमजारहासोंप
ग्ल्पीलकोचाहतगर्धनठेल्यो॥ घरयोहिकाल
करालसाईकर॥ आइभुजंगमकेवलमेल्यो॥४४॥
दोहा॥ कालसर्पसोंचलडस्यो॥ कामलहरिअ
कुलाइ॥ पूछमरोरीस्यंघकी॥ अवजीवतकित

जाय॥४५॥जोनहिमारोंछिनकमैं॥आवैकौं
तहिलाज॥जौवैरीकरिजीवहैतौमोजीवनकछु
नकाज॥४६॥सुज्ञानीवाच॥तुमदेषतसवपंचनि
मांह॥दुसासनपकरीहीवांह॥दुरजोधनजंघवैठी
नेचीर॥हुतेअछिततहांपांचौवीर॥४७॥विपन
जयद्रथछलकेहरी॥वांध्यौदुष्टकांनिनहीकरी।
द्रुपदेकीचकपाफास्यौचीर॥तातैव्याकुलभयो
सरीर॥४८॥दोहा॥सभामांझसुनिकीचकैंभीम
चल्यौअकुलाइ॥अवहीमारौंदुष्टकौंकोअव
सकेवचाय॥४९॥द्रोपदीवाच॥अवनउताव
लकीजियेजांनौंकालवचाय॥दुष्टहमारोरैनि
मेंरहैअषारैजाइ॥५०॥मेसहेटतासौंधवदीआ
वैंतहांनिसंक॥ताहितहासंघारियोकरियोदया
नअंक॥५१॥सुरोमत्तौसुकीजीयेआवैजामैजी।
त॥नहीउतावलकीजिये॥इहस्यानानकीरीति५२
चौपई॥भीमसेनतरुनीवपुकीनौं॥दृगअंजनसिर
सेंदुरदीनौं॥पटभूषनआभरनसवारे॥करिकिंक

विजै०
॥१०१॥

निनूपरफ़नकारे॥५४॥ करितरुनीवपुपोहोमो
तहां॥बदीमहेटअघोरअहां॥बेठिरह्यौतासहमे
जाय कीचककालपहोचोआई॥५४ दोहा॥ हो
नहारसोनहि मिटैभावीमहावलीष्ट॥कीचकम
नसिजसिंधुमैंवोस्योवलिअरिष्ट॥५६॥चौपई॥रेनि
भयेसुकाकीचकपायोवांमसहेटथलीतहांआयो
देषित्रियावपुयोहसिभाष्यो॥नूधनिहैअपनो
पनराष्यो॥५७॥आवतही करता कहुमेलो मांन
कियोवहुवारनठेलो॥नैंकजहीवरकीचककी
नों॥दुष्टकेलित्रियातवदीनो॥५७॥जांनिगयो
इहवांमनहोइ॥हैवरबीरनमेइहकोइ॥तोकह
मारिसुजांनिल्पांऊं॥८ जोनवधोद्विजदोषनपांऊं
सोरठा॥भिरकौपिदोऊवीरलटपटातलोटतलप
टि॥सरसमरसनधीरभूधरजनूभूधरभिरत॥५९॥दो
धक॥द्वैमेंहरिनकोउमांनें॥कोपिअमितगतजु
द्धहिठांनें॥अतिबरभीमसेनतवकियो॥मूठउठाय
भूमितैलयो॥६०॥पटक्योभूमिगरैगादीयो॥मारि

सुदृढ मसेषगम्रांन विन कियौ॥ मारचौ हटे राष्यौ

जाइ॥ जानैं पुरजन न नहीये जाइ॥ ६१॥ दोहा॥ मारि

दुष्ट धरि चोहटें॥ जिय की विथा न माइ॥ अर्थ रै

नि सुत पौन कौं नृप थल पकर्‍यौ आनि॥ ६२॥ जा

गे पुरजन सदन सप्रात भये नर नारि॥ मन कदे।

षि की चक सकैं कोऊ नही विचारि॥ ६३॥ भुजंग

प्रयात॥ नृपाल सुधि पायकैं॥ गये तुरंत आयकैं

विलोकि भीत कि रहे न वैन जायते कहे॥ ६३॥ वि

लापता मसोत ए॥ असेष सोक सों रहे॥ उपाव।

कौंन तंनिरए कछू न बात जांनिये॥ ५४॥ दोधक

वंधव की सुधि ता छिन पाई॥ भूपति की तरु नीत

हां आई॥ रुदन कैं अति हि तु षटांन्यौ॥ दीषत भू

प महाविलषानैं॥ ६५॥ राजोवाच॥ कौंन हि कीच

क सूरप्र हाल्यौ॥ जास हजु दजु स्यौ सोई मा स्यौ॥ औ

गन ही छत्तु स्रो न न आवे॥ मूलि रहे कछू सोध न पा

वे॥ ६६॥ रानीउवाच॥ रहे तुम्हारे ये हमें॥ जां हिसु

नी नांम॥ गंधर्व रत्नक तासु के रहत कअसहु जांम

विजे०
॥१०२॥

६९ की चक्र अति आसक्त के । गही सुजांनी वाल
नाई दिनते मे लग्यो घे स्यो है इह काल ॥ ६८ ॥ दो धक
की चक तिन मंध र्व निरख्यो । काहू पास निराष्यो ग
यो । अब चलीया को किरीया कीजे । ले लै कुस स
ब अंजुल दीजे ॥ ७० ॥ लषि कुंत वार हि बोल्यो राऊ
पर जा लोग निबेगि बुलाय ॥ लेकी चक कों घाट
हु जाउ ॥ बिधि सो सब किरिया करवाउ ॥ ७१ ॥ गी
तिका ॥ कहे जै रिषी नी चले गनि नहीं अंग घूवाय
ऐ ॥ बरन उति मही यज जोई ॥ ताहि बेगि बुलाइए
सुधि आई भूप कों बोल्यो जयंत विचारि कें ॥ बार
धा दे इकराज अगपाति हि दई तब टारि कैं ॥ ७२ ॥ फे
रि आयौ पैान को सुत भूपता सो यों कह्यो ॥ बैनमे
रो मेटि कें कहि वेगि मुक कहां रह्यो ॥ पंडसुत की कों
निराषो क्रोध कै कै सैहनो ॥ तर रहसनमो नसोब
हु बंध सरि विरहो गनो ॥ ७३ ॥ भीमसेन० ॥ मार्यो की
चक मेकहा ॥ कतकी । जत है क्रोध मो उपपायो बांधि

नृपअंतहिलीजेसोधि ॥ ७४ ॥ भ:ज:अआजिनद्यु
तिकतहैंनहींअनतहिंजाउं ॥ मनसावाचा
करमनातुमकौंमहाउरांऊं ॥ ७५ ॥ सोरठा ॥ करी
क्रपानरनाथ ॥ इहिविधिकहीजयंतसौं ॥ लैकी
चककौंजाऊ हरिनगरतेंक्रतिकरो ॥ ७६ ॥ भीम
सेनउवाच ॥ बंधुकुटंबजुहोई ॥ सोईम्रतकहि
काष्टिहै ॥ कहापरिहैमोहि ॥ असोकर्मनमैंक
रो ॥ ७७ ॥ चौपई ॥ भूपतिकौंफिरिआयसुपाऊं
योनरनाथहित्वैनसुनायो ॥ जोअबभोजनकौं
कछुपाऊं ॥ लगहिंकीचकवाटसिधाऊं ॥ ७८
भोजनकौभूवपालमगायौ ॥ बैठिजयंतरातहां
सबषायौ ॥ रोवहिंकीचककेसबभाई जेवत
सोनहिंहोतअघाय ॥ ७९ ॥ दोहा ॥ करिभोजन
बलिबंडतबकीचकलियोउठाय ॥ हरिनगरतें
घाटपरम्रतकउतारयोजाय ॥ ८० ॥ बनउपवन
द्रुमतोरिकैंआंनिधरेतिहिंठोर ॥ औरसीबरव
ऊमीरकेकेतिकआंनेठौर ॥ इतकौचककैबंध

वि॰ मे॰
१०३

सब॥ पकरि द्रोपदी बाल॥ जारन कीचक संग ही
लिये चले तिहि काल॥ ८१॥ चौपई॥ या इ हित मा
सौ वंधन तु हमारो॥ पकरि याहि वाके संग जारो ब
रजत प्रजन सो नही मानैं॥ काहू अपने चित न आ
नैं॥ ८२॥ पकरि ताहि लै पहोचे तहां कीचक मृत
क परयो हो जहां॥ भरि भरि घृत घट के तिक आने
चंदन के गन कौं न बषांनैं॥ ८३॥ रुदन करत लषि
द्रोपदी॥ यह तन चलो जयंत॥ क्रोध बढ्यो आ अं
ग में देषत कर्म दुरंत॥ ८४॥ बसन उतारि धरे कहै
भीम भीम कै धाई॥ फूलि गात ह्वै भयो उपमा क
ही न जात॥ ८६॥ कीचक चढ ई सकल अंग के स
दीय मुकराई॥ कर लैत रवर वज्र सम दई दिषाई
जाई॥ ८७॥ देषि सकल भय भीत ह्वै भागि चले दि
सि च्यारि॥ एकौ कीचक कै ढिगे रहे न नर अरु
नारि॥ ८८॥ चौपई॥ कीचक भागे सब अकुलाई
द्रुहां गंधर्व पकौ यौ आय॥ तोटक॥ द्रुम धाइ हमे
नर बिर किते॥ अवलोक भजे रन सूर सजे॥ नृप

कल्कै भेरनुसकै तिसकै सि चितान चढाये १ रो॰
रजिनै कहौ मुपमुजाय करत रजस्तौ गधावे
लै जिव्य लपहि चौ॰ प्राप॥

कीचक होत हि तंउ सवे ॥ सुधिली जियजूत है आ
य अवे ॥ ९२ ॥ न कह्यो कछू संभ्रम भूलि रहे मुष
तें कछू बैन न जात कहे ॥ सव कीचक भीम जराय द
यतरुनी उर आनंद को टिठये ॥ ९३ ॥ दोहा ग्रहतन
पठइ द्रोपदी आणयो सरपास ॥ न्हाय धोय पय
रे वसन ॥ आयो आप अवास ॥ ९४ ॥ सरवर तट कु
म डारिकें ॥ आयो भूपनिकेत धाई धाई नर नारि
सव ॥ तू फुत कै कै हेत ॥ ९५ ॥ चौपई ॥ तूजयंत कहि
धो सव भाई ॥ को गंधर्व पहों च्यो आई ॥ ताके हाथ
कहा हथियार ॥ सो सव वर्नंउ ताको सार ॥ ९६ ॥ भी
मटंडक ॥ आयो बीर अे सो कोऊ गंधर्व अनें सो
गिरि मंदि रहे जैसो कांनवरनि वतावहि ॥ हाथ मे
तमाल काल दंड जैन कराल वाज दे षिये विसाल म
हा काल काल गावई ॥ भरि भरि कीचक संघारे मे
रे है वतदी भाजे हूं न बीर भाजि जानि को उपावही
मोहि वुधि आई एक ॥ कंदरा मैं पाई देषो त्रिभुवन
राई विना और को बचावही ॥ ९७ ॥ दोहा ॥ नीचे उ

परिकाटदैं कीचकदीनेजारि॥ आयोबीरकरालत
हां॥ जहांसुजानिनारि॥९८॥ दोधक॥ ताकेकांनमां
गकछुकह्यो॥ होससंकतहांवैठिरह्यो॥ देषतसोउठि
गयोप्रकास॥ डारिगयोद्रुमसरवरपास॥९९॥ सुनिसु
निसबहीअतिभैमांनी॥ देबीकरिकैं गनीसुजांनी
अरुगांधर्वभक्तिउररांषे॥ निसदिननृपसेवाअभि
लाषे॥१००॥ पांचोबंधवकालहिपाय॥ भयेयेकथ
लसबजनआय॥ हरषेभीमसेनगुनगाय॥ कोउस
कैनभेदहिपाय॥१०१॥ इतिश्रीमहाभारतेपुराणेवि
जयमुक्तावलीकविछत्रविरचितायांकीचकवध
नामत्रयोविंशोध्याय:॥२३॥ चौपई॥ दुरजोधननृ
पइहसुधिपाई॥ कीचककीन्हिमारेसोभाई॥ मोउर
उपजतइहसंदेह॥ भीमकह्योहैकारजएह॥१॥ दु
रजोधनउवाच॥ तोमरछंद॥ सुनिद्दूततिन्हिथ
लजाउ इहसुधिलैफिरिआव॥ तबभूपआयुस
पाई पहोच्यौतहांसोजाय॥२॥ लहिभेदबातवना
ई तिनकहीनृपसोंनाय॥ सतहनेकीचकराइकि
छूभेदतांनिनजाय॥३॥ नहिपंडसुततिन्हिठाउं ल
हियेकहूनहीगांउं॥ तबदूतबीनयोयेह॥ नृपकें

नयोसंदेह ॥ ४ ॥ भूपतिकरिसंदेहमनवोलिभीषमसे
न ॥ पुरविराटकीचकवधे ॥ कह्यौकारनकौन ॥ ५ ॥ भी
भीमादिसाकं ॥ कीचककौंसंघारिहै भीमविनाको
और ॥ कितेउरदसमनाहिबरसुभटनिकोसीरमोरि
है ॥ सुसर्मा ॥ दोधक ॥ भूपतिऔरविचारनिकीजे
मोसंगसेंनकछूअबदीजे ॥ जौहरिकैंसुरभीहमल्या
वै ॥ होहितहांसबपंडवआवें ॥ ७ ॥ वेसुरभीनहरिस
हिरेहैं ॥ लागिगुहारिचलेतहांऔहै ॥ भूपतिसंगच
मूसबदीनी ॥ वेगिबिदातिहिऔसरकीनी ॥ ८ ॥ तो
टक ॥ ननाहचमूसबसाजिचले ॥ चतुरंगवनेसब
सूरभले दिसिउत्तरआपमहीपगये ॥ बनविथिनि
विथिनिपूरलये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कोपिसुसर्मातवगयो
उत्तरदिसिउत्ताल ॥ ततछिननृपतिविराटकेहेरेधे
नुकेजाल ॥ ९ ॥ भुजंगमप्रयात ॥ कितेग्वालबांधे
सुसर्माजहांते ॥ कितेजीवलेलेभजेहैतहांते ॥ किते
आयहिकेभूपहींपेपुकारे ॥ कितेधेनुकेवृंदलीने
तीहारे ॥ १० ॥ चलेसेंनलेबीरजोआपभाषे ॥ कियो

आपुहीजायकेंधेनुराषो ॥ तबैभूपसोचैकहा मंत्र
कीजि ॥ रहैआपनैंबोलसोदाउदीजे ॥ २१ ॥ दोहा ॥
कीचककौंसुमरैनृपति इहकहिवारंबार ॥ बावि
निसुरभीवटिये ॥ कोकहिलगेप्रकार ॥ २२ ॥ हरये
बोल्योभूपतवसैंनपलानौंजाय ॥ धाईसुसर्मा बी
रतैसुरभीलेहसूडाय ॥ २३ ॥ नगस्वपपनी छंद ॥
नरेसछाडिकेचले ॥ अनेकसूरलेभले ॥ कुरंगयोत
रगहे ॥ करीसमूहसंगहे ॥ २४ ॥ महाकरालजुद्ध
में ॥ जुरेतिविरयुद्धमें ॥ नअस्त्रसोंकहेमुरे सव
मलैतहांजुरे ॥ २५ ॥ विजयचरंडलघररहे ॥ पंडुपु
त्रतेच्यारि देषतकोतिगजुद्धकौं ॥ सकैनकोऊ
हारि ॥ २६ ॥ दोधक ॥ तबरनसुभटसुसर्मा कोप्यो
भूपविराटनहीपगरोप्यो ॥ भागतजांनिबांधरथ
धर्यौलेकरिताहिपयानोकियौं ॥ २७ ॥ सहदेव
चपुग्वालकैजैरिषिकौसिरनाय ॥ टेरसुस
मींहांकिद ॥ फिस्योततछिनजाय फस्यो

मतकरीदलतासकोअंकुसदीनौंजाई॥ फेरोवल
करिसंघरयो॥ गह्योकोपिधसिधाई॥१९॥ चौपई॥
तबैसुसर्मावलकरिहासो॥ पंडपुत्रसोधरनिपछा
सो॥ मछ्तत्रजुद्धकरिदलविचरायौ॥ छोरिविराटहि
दलमेंल्यायो॥२०॥ जेरिषिकोतिनमाथोनायोता
कीसेनावकुसुषपायो॥ लेसुरभीतनमनसुषपाई
चलेआपग्रहकौंतवराई॥२१॥ उत्तरदिसिकुरजोध
नराई॥ बेटिनईसुरभीसुषपाय॥ करनदुसासनग्रो
रभगदंत॥ कितेजुहलेचलेतुरंत॥२२॥ दोहा॥ भगे
ग्वालपुरआयकै॥ बकुविधिकरिपुकार उत्तर।
कैयोंनिश्चंतकैबैठौसदनमझार॥२३॥ छप्पै॥ दूरजो
धनइकहरी हरिदुसासनबरकरि॥ एककरनकु
लिहरिकोपिसबआगेधरि॥ हरीहरषीभगदंतकी
पीलीअरुधोली॥ लछिनकवरकलिंगहरीकेति
कएकठोरि॥ हरीद्रोणसुरभीकितिकयोनश्रवन।
हरकीजिय॥ सुनिउत्तरउत्तरकीदिसासुसवतेरा
धनलिजिय॥२४॥ तोटका॥ करतकुलाहलगीरिगि

रिजात ॥ दीरघदीरघसुरकहीवात ॥ ऐसेप्रिका।
है जगमेजिये ॥ कहाकुवरनहारैं हिये ॥ २५ ॥ उत्त
रवाच ॥ जोमेरे ढिगसारथ्थिकैतो ॥ तोकहिकोरथ
कोदलकैतो ॥ ताविनुकैसेंके रथवाहैं ॥ पेडोपातें
नृपकोचाहैं ॥ २६ ॥ दोहा ॥ द्रुपदसुताए वचनसु
निअर्जुनसौंहरवाई ॥ कहीसकलजुतसाहसें
इहविधिकेंअकुलाई ॥ २७ ॥ छप्पै ॥ सत्रीजव
डरायरहैजगकमैत्रथासवधर्मअगारथ ॥ काहु
त्रियाविजगायनके वरदेत अभैपदजी तिकेंभा
रथ ॥ तूससवायडरायरसोकतचाउनचित्तक
हाश्कैंपारथ ॥ काहैतें आपहसोहठिवैठिसु।
वैपान ०कैरेउठिउत्तरसारथ्थि ॥ २८ ॥ दोहा ॥ उ
त्तरसौंतवहीकही विजैवृहंडलवात कौंनजुद्ध
कीबातकोंहरषतहैहठिगात ॥ २९ ॥ पारथसार
थ्थैकीयोजांनौरथहांवाहि ॥ जहांहोततहैंसा
रथीकहौकहाउरताहि ॥ ३० ॥ भयोवृहंडलसा
रथीरथआरुह्यकुमार ॥ सजिकेदललीनौंघ

नौंकोपिकस्योकरवार॥३१॥ उमरवाच॥ ऐसोर
थ्थ्रवहांकित॥ तुरततहांचलिजांऊं। हनौंसक
लसतवंधवनवचैनकोरवनाव॥३२॥ तोटक॥
तवसारथिवरकरिरथहांकैयों॥ ओघटघाटनका
ननताकैंयों। कौरवदललाखीसीधुसमांन॥ लखि
उत्तरघटरहेनप्रांन॥३३॥ गाजततसिंधुरअतिहय
हीसत माच्योमारकरतभटदीसत॥ उत्तरतववि
नवेकरजोरि॥ सारथिफिरिअहतनरथमोरि॥३५॥
बारबारसोविनतीकरै॥ राकोसारथिचित्तनधरै
रथतजिसोभाग्योअकुलाई॥ धाईपथ्थपकरयोसो
सोजाई॥३६॥ बांधिधस्योरथउपरजाई॥ सनमुष
चल्योसेनकेंधाई॥ तबगुरुद्रोणपथ्थपहिचान्यो
सबहीसोइहबेनबषान्यौं॥३८॥ सवैया॥ बांधि
रथीरथआनिधस्यो जिहिंआपनिसंकनिसंकष
रीसी॥ साईरसंयमकोअवगाहनआपभुजाब
रपेजपरीसी॥ बानसरासनसूरसजो इहवांनभ
लीकछूमैंनहीदीसी॥ पोंनकेगोंनहूंतेंअतिल

घवआवनेसुनत अर्जुनकीसी ॥३७॥ दोहा ॥ उ
त्तरसौंसारथीकही करनकछूभयअंक सकल
निपातौंअरिचमू रहिहांआपनिसंक ॥३८॥ नगर
निकटतरवरसमितापरधनुअरुबांन ॥ आनिउ
तायलमोनिकटगंजोअरिदलप्रांन ॥३९॥ दोधक ॥
बैनसुमौंउठिउत्तरधायो वेगिहीताद्रुमकैंतटआ
यो ॥ लेतहीपन्नगसेसरदेषे ॥ संभ्रमचित्तमहाति
नलेषे ॥ ४० ॥ सारथिकौंतववैंनसुनायौं ॥ व्यालभ
येइषमोकहुआए ॥ योसुनिकैंतवसोउठिधायो वां
नसरासनलेतहांघायौं ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ निर्गुनयन
गुनवंतकरिसुधेकीनेवांन ॥ काढीमंगामूमितें
धोयेसकलकृपांन ॥४२॥ पहरिकवचसिरटोप
टें करीधनुषटंकार ॥ हांकेयोरथवज्रक्रोधकरि
पठ्यौंकरकमझार ॥४३॥ बीरधनुर्द्धरधीरकें उ
रमैंकछूनसंक ॥ भटदुरघटघटसवकटक कोर
वकैंआतंक ॥४४॥ चौपई ॥ वैठ्यौआंनिध्वजाह
नुमंत ॥ जाकेवलकोकछूनअंत ॥ सुन्यौसंषध

नुषटंकारयो॥ जीतनदुर्जनदलपगधारयो॥४५॥
उत्तरवाच॥ मोसींकहनब्रहंडलश्रांन॥ सत्यकरे
कोश्रापनिदांन॥ अर्जुनउवाच॥ सुनियेउत्तरराजस
त्यभाऊ॥ जेरिबिभूपजुधिष्टिरराउ॥४६॥ हैंश्रर्जुन
इहसुनियकुमार॥ भीमजयंतनुम्हारोरखवार॥ सहदे
वसुभीरावनसैंन॥ वाहकनकुलमनोंमहिमैंन
४७॥ दोहा॥ वहरानीहैद्रोपदीजाहिसुजांनिनांम
कछूनभयचितकिजियेसवजितैंसंग्राम॥४८
हमहीलगीसुरभीहनी॥ लेतहमारोसोधश्रवस
निबीतिसोश्रवधि॥ तवमैंकीनोंक्रोध॥४९॥ फि
रिउत्तरलाग्योचरननि॥ सुनिसाइसत्यभाइ॥ दसौं
नांमश्रपनेकहौं॥ तोमोमनपतियाइ॥५०॥ श्र
र्जुनउ०॥ जनम्यौंकौंहरब्रह्मतन॥ श्रर्जुननांम
बषांनि॥ सितवाहनश्ररुफालगुन॥ कृष्णजि
ष्णउरजांनि॥५१॥ विजयकिरीटीनांममो॥ श्ररु
विभत्सहिजांनि॥ सव्यसाचधनंजइ॥ एदसनांम
बषांनि॥५२॥ चौपई॥ भीमसेनसवकीचकमारे

नं॰
॥१९८॥

लषि अपराधी तिसंघारे॥ मारयोमल्लकुरद्रगहि
लायो॥ तिरेय्रहह्मवञ्जसुषपायो॥५४॥ तौरे आय
विपतिसबटारी॥ बर्षदिवसकी अवधिनिवा
री॥ द्वादशवरषेवनमहरहे॥ तवछायामे अतिसुष
लहे॥५५॥ विराट उ॰॥ हलकी भारी जोहम कही
समरथ आपनसो सबसही॥ जोकछूहमतेन
भयो अपराध॥ सोसबछमियो आपनसाध॥५६
॥दोहा॥ बीरधनंजयक्रोधकरि चल्योसबवर
थहांकि॥ अतिबरपैरेतुरंगत वश्रमितरहेत
वथांकि॥५६॥ तेजदीयोगंधर्बतब फिरिवरम
रेतुरंग॥ कहदिगणरूपथ्थसों कौंनकरैरनरंग
५७॥दोरा उ॰॥ आयोधनुर्द्धरधीरवलीसुकहो
अवरणसन्मुषको अबरहे॥ जयद्रनु सोनही
नेकऊसोजनमबायगयोमषसोंदलषेहैं॥ या
हीतेंसोचवढ्योउरअंतरकोकहियोवरवान
नसैहैं॥ कोरिउपायकरोतुमपारथ्थजीत्योन
जेहैनजेहैनजैहैं॥५८॥सोरठा॥ बीटकली ॥१

योकलिंगजीतनपारथबीरकौं॥ कीयोको
रिरनरंग॥ अचलमेरुसोरनरुप्यो॥ ५८ दो०
पथ्यसहसदसबांनसौंहन्योकोपिकैंबीर
मूर्छिगिरयोकलिंगरन॥ धरनसकतरनधीर॥ ५९॥
जबकलिंगमूर्छितगिरयोतबविकरनरनगा
जि॥ कोपिसरासनबांनलेआयोसनमुषसा
जि॥ ६०॥ दोहा॥ तबविकरनबांनतीसपथ्यके
हियदिय॥ विसेषिबांनवृष्टिसौंसलोपसूरकै
गये॥ नक्षांनियेदिनेसद्योस अंधकारसौंछये
सरोषपंडपुत्रकेंक्रपानकोपिकैलये॥ ६२॥ त
बविकरनचालीससरहन्योकोपिवलवंड॥ को
रिबांननभछाईकें संयमकियोअषंड॥ ६३॥ त
बविकरनसाहसससहीतभूमिगिरयोमुरकराय रमाय
निरषकरनवरबीरतवलीनोधनुषचलाय॥ ६४
रनअर्जुनकेनैंकहुसहिनसक्योसोबांन॥ रन
मंडलतजिसोभयोरविसुततेजनिधांन॥ ६५॥

॥श्री॥ चौपई॥ देवकरनमहावलभारे॥ हसासन भाइंतसम्हारे॥ दुरजोधनसतवंधवधाये॥ च

॥१०९॥ हूंदिसघेरिपथ्थकौंआए॥ ६५॥ सुंदरी॥ नीर

दघेरिहैगिरिकौंजनुयौंचहुंओरनितेभटअ

र्जुन॥ कोपितबीरघनेसरडारत॥ एकलैले

गिरिकेगनगारत॥ ६६॥ लेकरवाननिषथ्थउ

ठ्योतवमारिभगायदयेवरकेंसब॥ भागत

सूरनहिफिरिहेरत॥ तेरनभूमिघिरैंनहिघे

रत॥ ६७॥ सुंदरी॥ अहयलूनतैंएककरै

सरदेषतहीलषिएकरपेसो॥ आवतहीम

गजूथनिउपर॥ कोपिउठ्योसुतकेहरिकैसो

सोहिकरेभटबेधिसबैतिन॥ औरकियोवरवि

क्रमऐसो॥ काटिदियधुजबैरषचौरविछा

यदयौकदलीवनजैसो॥ ७०॥ भुजंगप्रयात

जबैपथ्थकेक्रोधतेंवांनछूटे॥ कितेसैंनके

हहकेसीसफूटे॥ गराभागिकेएकपीछे

नचाहे॥ कटेएकतेजानुजंघानुचारे॥ ७१॥ म
हाक्रोधकेकैघनेंवामसांधे॥ ससोकेकितेवी
रकेंहृदय बांधे॥ छूटेमोहनीबांनसोंसर्वमोहे
कहांलोबषानोंनमेंहेसुकोहे॥ ७२॥ चोपई मो
हिरह्योदलसंग्रमभारीछाई॥ एकनभीषममो
ह्योजाई॥ उत्तरपठयोतवेपचारिपटभूषनसब्ब
ल्यावउतारि॥ ७३॥ गीतिका॥ सीसभूषनसेंन
के नृप आदिदेसबकेहरे॥ आनिकेतिहिवार
उत्तरपथ्थकेंआगेधरे॥ जागिकेकुरराजलज्जि
तबांनधनगहिकरलियो॥ धाईभिषमवरजिराष्यो
प्रगटनासोयोकियो॥ एकपथ्थअनेकजांनोजु
द्धजीतनहीसकों॥ लाजकेहैवीरभागतचित्तमें
रहुवातकों॥ विकलकैविलषाइवियथ्योकछू
नहीमूषतेंकही॥ व्याकुल्योलेस्वासवचनघन
सेंउरसही॥ ७५॥ दोहा॥ भीषमआयुसमांनिकें
दललेचल्योअवास॥ धावनधायगयोतवेनृपति
विराटकेंपास॥ ७६॥ हंसासनउवाच॥ जीतिउत्त

रघ्रगिच्चहूं कौरवगणपराई ॥ सतसहूत कीनी
क्रिोभागतिहारेराई ॥ ७७ ॥ चौपई ॥ भूपतिबे
ललकासेसारि ॥ संगलीयैं जैरिषि सुषकारि ह
रष्योसुत की कीरति गावैं ॥ सवजनमन आनंद
वढावै ॥ ७८ ॥ राजोवाच ॥ विजैवहंइलहोइजैहै
सोकतजीत्यौजाई ॥ गुरुजुरैसंग्रामथलजमहु
दयेभगाई ॥ ७९ ॥ चौ० ॥ इतनीसुनतभूपपरज
स्यो ॥ रातेद्रगकरिवहुरिसभस्यो ॥ ततछिनहि
नरनाथविराट ॥ पासोजैरिषिह्योललाट ॥ ८०
छूट्योरुधिरद्रोपदीधाई ॥ अंजुलमैतिनलीं
नौंजाई ॥ नीरषिभूपउरचिंतामांनी ॥ कैयोंनक
हैइहभेदसुजांनि ॥ सुजानिवाकंय ॥ भूतलरु
धिरपस्योजोयेह ॥ द्वादसवरषनवरसैमेह ॥ यो
कहिकैभूपतिसमूझायो भीमसेनकै उरदुष
आयो ॥ ८२ ॥ दो० ॥ क्रोधभयोलषिभीमउर
धर्मपुत्रदैसैंन ॥ वरज्योकेहरिछुधितसोजुलक
कष्टूदहहैन ॥ ८३ ॥ ध दोधक ॥ उत्तरयेहत ।

ही चलि आयो ॥ भूपति कोइ हवै न पुनायो अ
ग्र ब्रहंड लहि दल जीसों ॥ कौरव को वकु धाव
लरीसों ॥ ८४ ॥ सूर भगायदये सगरेयौं ॥ यौं न दि
स्वारत मेघ घनें ज्यों ॥ यों नहि भूपति धाम सिधारो
उत्तर भीतर वोलि पठायो ॥ ८५ ॥ जुद्ध कथा सग
री सुन लीनी ॥ सारथ की सरजाल प्रवीनी ॥ अ
र्जुन है जीन कौरव मारे ॥ यो सइ तेइ हि ठंउ
निवारे ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ धर्मपुत्र नरनाह सौं अ
र्जुन वोल्यौ वैन ॥ जांने हम सब कौरवनि अब
कछु चिंता है न ॥ ८७ ॥ तेरह वरष वौ सदस।
विति गए इहि ठंउ ॥ अब वैठो सिर छत्र धरि गु
ह करौ कत नांम ॥ ८८ ॥ सवैया ॥ पाय कै त्रास
अवास तजे वनवास सजे दुष साधना साधी
नेकहूं सोच सकोच करौ नहि कानि सबै कुर
नंदन वांधी ॥ भूषन प्यास उदास महा गति जो
गाकें जोग निकी अवराधी ॥ आयुस दीजिये
आप महीपति लेहि भुजावल सौं सब आधी ॥

वि०
॥९९॥

१९॥ दो०॥ प्रातहोतसिरछत्रधरधर्मपुत्रसु
षपाइ॥ दोनदीयोकविश्वत्रकहिछिप्रहि
विप्रवुलाइ॥ ए०॥ वंधवआसोजोरिकरि
ठडेभयेसुजांनि॥ कारनसवहीकाजकेकी
जेकाहिसमांन॥ २१॥ नहिवाहनहूंआरूहे
उत्तरसहितविराट॥ नृपतिजुधिष्ठिरचरन
परराष्योआंनिलिलाट॥ २२॥ विराट॰ सोर
ठा॥ ढिठईभईजुहोइ॥ सोछिमियेकरिकैंक्र
पा॥ भूपवडेजोहोइ॥ चूकनमांनतजनकी
२३॥ चौपई॥ धोषैतुमपैसेवकराई॥ सोअव
चूककहीनहिजाई॥ ओछिछरिमननही
धरीयेईसीअनुग्रहहमकोंकरिये॥ २४॥ जु
धिष्ठिरउवाच॥ तोसोतुहीनहूरोजगमंडल
मेंआंन॥ विपतिहमारीसवहरी॥ राषेपुत्रस
मांन॥ २६ चौ०॥ तुमपटतरकोदिजेआं
न आरिननकेहैअपनेंजांन॥ तुमहमकोंस

बकीनीभली ॥ तुमकीरति सबभूतलचली
२६ ॥ निति निति निह दीसी हैं नए ॥ अवतुम
भुजाह मारिभए ॥ जीतिसमरसुरभीज्ञे आनी
ज्ञितनी ज्ञितनी जाकी ज्ञांनि ॥ २७ ॥ तेसवता
की ताकों दीनी ॥ सबकी विदामहीपतिकीनी
दुरजोधनसंदेसपठयो ॥ भूपजुधिष्टिरपैचलि
आयो ॥ २८ ॥ दो० ॥ प्रगटेभीतरि अवधितु
म फेरिकरोवनवास ॥ मितिसो पूरनकी ज्ञिये
तवतुमकरो आवास ॥ २९ ॥ कहीसब विधिम
लमांसकी समझायोसोहूत ॥ समदितारि
बेशोतहां ॥ योंसुरसरपुरजूत ॥ ३० ॥ इतिश्री
महाभारतेपुराणे विजयमुक्तावलीकविछत्र
विरचितायां ॥ अर्जुनविजयबर्णनंनामचतु
र्विंशतिमोध्यायः॥२४॥ ॐ ॥ दोहा ॥ उत्तर
सौकीनौंमतोनृपविराटतिहिंवार ॥ दुहिता
दीजै अर्जुनैंकरिविवाहसुभचारु ॥ १ ॥ दोधक
अर्जुनताकहनृत्यसिखायो ॥ द्यौसनिसाए

विनै०
॥११२॥

नतासरूपायो॥ ताकरूसोदुहिताअबदीजे
जीमैअोरबिचारनकीजे॥२॥ योकहिकैंति
नहूतपठायोअर्जुनकौंइहवैनसुनायो॥ तो
ईसुतानृपआपनीदीनी॥ हितविवाहसवेवि
धिकीनी॥३॥ अर्जुनउवाच॥ मेंदुहितासम
जांनियठाई॥ लाजतुम्हैनहिभाषतआई
मोसुतकौंदुहिताइहदीजे॥ आनंदसोंसब
कारजकीजे॥४॥ नृपतियोसुनिकैंसुखपा
यो॥ बूमिमहूरतमंगलठायो॥ गावतआनं
दसोंनरनारी॥ भूपजुधिष्टिरकोसुखभारी॥५
॥दोहा॥ दूतद्वारिकानगरकौंपठएराम्वङ्गसु
खपाई॥ बारनलागाईबाटमैं॥ कहीकृष्ण
सोंजाइ॥ राजायुधिष्टिरउवाच॥ संदेसोदूत
हाथिपठयौ॥ सवैया॥ दीननिकेनेहूनहेडोल
तहैगहेगहेद्रोपदीकीलाजवहे॥ ऐंसैंकौना
वहतो॥ तातमांतपासपहलादकेनिरासरहे

जौनहोतीतेरीआसत्रासकेसेंसहतौं॥ ओक
छाडि आपनौंसुलोककियेलोकलोककौंन
भांतिथिरथोकध्रवलोकलहतो॥ त्रिभवनराई
जोपेहोतेनसहाई॥ आपकेसेकेधोमेरोम्य का
ज ओरलोंनिवहतो॥७॥ दोहा॥ करिआएहो
करतहो करिहोसदासहाई॥ सहितमातुअ
भिमन्युले आपपहुंचिबीआई॥८॥ चलेकृ
ष्णभगनीसहित॥ लेअभिमन्युहिसाथ॥ च
लेतुरतसुषपाइके॥ धरमसुवननरनाथ॥९
मिलिकेंसारंगपानिकोंलेआयेनिजग्रेह।
स्तुतिवंधुनिसंजुतकरी॥ मनवचकर्मकरि
नेह॥१०॥ जुधिष्टिरउवाच॥ श्रीजदुनंदनमु
निजनवंदन॥ कल्मषदहरसवदुखनिकंदन
जगतारनवकवदनविदारन॥ दुषटारनगज
राजउधारन॥ ११॥ जगपावनिसंतनिमनभाव
नि॥ ब्रजछावनगिरवरनचलावन॥ जनमन

वि०
॥११८॥

दोहा॥ देखी बो समदी सुता हरषे भूपविराट धी
मे पुत्र सुख पाई के लसित अनंदित पाट ॥२५॥
राजा युधिष्ठिर उवाच॥ सुनि अरु नगुन ग्राम के
गि बुलाउ मयासुरे ॥ लसवार हु धांम षचि
षचि रचि रचि जोंल मनि ॥२६॥ चौपई॥ तव पा
थ्थ मयासुर वो लिलयो॥ वहु भांतिन कैं वकृस
मझयो॥ प्रति धाम नि चि। त्र विचित्र करयो रंग
रंग नई गुरखांन ठस्यो ॥२७॥ अति दीसत उज्लखे
त अटा॥ इकनील वने जनु घोर घटा॥ उपमा कवि
कोंन वर्षान कहे॥ निरषे नरकौ तिग भूलि रहें॥
२८॥ इक अद्भुत वाहिर सा भसनें॥ न्रपके हरि हि
वेहित धांम वनें॥ तहां वैठत भूपति नि त्तसभा
अमरावती मोहित देषसभा॥ २९॥ पुरअंत हधां
मससोभ गहे॥ रनवास जहां सब वांम रहे॥ ह
य ही सत वारन गाजत हे॥ निसिवासर दुंदभी
बाजत हे॥ ३०॥ सुव भूप सभा सुषसाजत हे॥

वऊभीरतहांदरवाररहे॥ कहिकोकविता॥
ह्लिवषानिकहे॥३१॥इतिश्रीम॥अभिमनुवि
षाहराजधांमवर्ननिनामपंचविंशोध्यायः॥२५॥
तोटक॥सोमवंसधर्मपुत्रसक्रसोसभालसैं चा
रिवंधदेविसविलोकिदुष्पकोंनसें॥ अंजली
नजोरिजोरिकृष्नसोंविनैंकरी॥ सोधिकेंज
हांतहांविपतिजीवकीहरी॥१॥ अर्धदेसपाइ
एविचारआपसोकरो॥ ज्योंहरेअसेषसोक
लेसहेहरो॥ देसतैंतनिकारिअंधपुत्रकांनिना
करी॥ धांमग्रांमछीनिछीनिसंपदासवेहरी॥
२॥ दोहा॥ करिआयेहोकरतहो॥ सेवकसदा
सहाउ॥ करीवंदनाकृष्नकी धर्मसुवनभुवरा
उ॥३॥ राजायुधिष्ठिरउवाच॥ चौपई॥ कष्ट
पवपुबरसायरथाहन॥ मंतरूपसंषासुरदा
हन॥ वंदनमुनिजनसनकसनंदन॥ जैजैजै
तुमजैजगवंदन॥४॥ सूकररूपसरदनधरनीध

र ॥ बरहिरनोछियतितिप्रांननिहर ॥ भूतलल
षलदलनदुषनिकंदन जैजै ॥ ५ ॥ नरहरिबपुहितभ
गतसवारन ॥ हिरनाकुसनषउदरविदारन ॥ के
टिककष्टहर्नजगफंदन ॥ जैजैजैतुमजैजग
बंदन जैजै ॥ ६ ॥ छलबलबरपातालपठाउन ॥ वाव
ज बपुधरिभूतलिश्रावन ॥ काटतसुवमायादुष
दंदन ॥ जैजैजैतुमजैजगबंदन जैजै ॥ ७ ॥ फरसपा
निछत्रियमदनासन ॥ रघुकुलकमलदिनेस
प्रकासन ॥ रामचंद्रदसरथनृपनंदन ॥ जैजै
जैश्रीजैजगबंदन ॥ ८ ॥ कंसकुटिलअसुरन
का भयहारी ॥ केसीमर्द्दनअजरविहारी ॥ पीत
बसनतनचर्चितचंदन ॥ जैजैजैश्रीजैजग
बंदन ॥ ९ ॥ बोधसरूपपरूमिपरिधरिहौ
कलिकीकैउग्रनिसंघरिहौ ॥ वर्णतवंदित
छत्रवकुछंदन ॥ जैजै० ॥ १० ॥ दोहा ॥ विनय
मांनिकैकस्किपाकुरजोधनपेजाई ॥ समुझ

यवहु विधि तिकैं वचे गोतकोघाउ ॥ ११ ॥ चौ०
विहसि कृस्न तब हि उठि धाए ॥ नगर हस्तनापु
र चलि आये ॥ सुनि कुरुनंदन अनुज पठाए स
मामध्य लै कृस्न हि आए ॥ १२ ॥ श्रीकृस्न उवाच ॥
धर्मपुत्र तुम पास पठायो गोत विरोध हि मेटन
आयो ॥ भूपति जगमैं यह जस लीजे ॥ आधो देस
बांटि कैं दीजे ॥ १३ ॥ अपने कुलहि कलंक न ला
वो ॥ कलह गोतको भूप बचावो ॥ दुरजोधन बोलो
अकुलाई ॥ केसैं सकौं कलेस बचाई ॥ १४ ॥ देस
बांटि जो उनको देहु ॥ जोगी द्वै कपाल हम लैहैं ॥ भू
मि बांटि कित मो पैं पावे ॥ जो वे न भभूत ल फिरि आ
वे ॥ १५ ॥ श्रीकृस्न उवाच ॥ और भूमि भूपति जिन
देहु ॥ पांच ग्रांम दीजे करनेहु ॥ तिलपथ षागइं
द्रपथ लीजे ॥ अरु सुनपति पांनीपति दीजे ॥ १६
दुरजोधन उ० ॥ दोहा ॥ सूचि अग्र जीतनी कटे सो क
बहू न हि देऊं ॥ पीछे भुव वैं ईल हैं ॥ प्रथम जुध करि
लेहु ॥ १७ ॥ चौपई ॥ तुम हि कहत तइह कैसे आवे

विजै०
॥१६॥

जीवतमोहिकोधरनीपावे॥ सुनिसुनिवचनजुर
तेमात॥ डि.प्रतसुनेइहअद्भुतवात॥ १९॥ छप्प
सवैया॥ औकैसोकसमूहवितैं॥ अपलोक
महाअपनेसिरलेहो॥ केलिसकेलिमहादुषमे
लिहोयागा तियलिकैंओजसपेहे॥ उपाईकैव्या
धिनलिजियेराईसुआइपरैतैंहीयेपछितैंहो सू
फिरहीइहकृष्णकहीतवआपुमहीतवदेहोजु
देहो॥ २०॥ कोपिकैंलेइगदाकरभीमसुपथ्यधनु
द्धरवाननिवांहैं॥ बंधसमेततहासहदेवसुसा
यरसंयमकोंअवगाहैं॥ बेछिधुजहनुवंतवली
रनगाजिउठेइहतमनचाहे॥ औसोईभावतहे
जियसुमानेंकोतेकैरोकहामनसाहै॥ २१॥ दो
हा॥ कृष्णउठेरावचनसुनिकहि॥ तिनकोइ
हसमुझाय॥ भावीसोकैसेमिटे॥ कोकहिस
केवचाय॥ २१॥ नगरहस्तनापुरतवे कौंतापं
चीआई॥ समाचारश्रीकृष्णजूकहेसकलस
मझाय॥ २२॥ दुर्योधनमतिपरिहरिदेतनचास्योग्रा

म॥ देवकी कहि कहा चली॥ श्रवणसुणतनहिनं
म॥ २३॥ एकबातकीभयभईकर्णहिवाछ्योमैं
मारिलेहुएहकरतोहे॥ जीतोभारथसबै॥ २४॥ मा
हुआपतुमकर्णपैंल्यावोअपनेग्रेह॥ कुसलहो
यतुमसुतनकी॥ वाढैअद्भुतनेह॥ २५॥ कर्णपास
कौंतभाईउनिउठिवंदेपाइ॥ करिआदरआस
नदयौबैठेसबसुषपाइ॥ २६॥ कौंताबाचा चौप
ई॥ जेठेसुततुतेरौराज॥ लेहुसकलग्रहचलिघ
आज॥ हस्योकर्णमातामुषचाहि॥ इहसबबात
अदूभितआहि॥ २७॥ अवंतुमराजहमारोटासो
घालिमनुसाजलमैंडास्यो॥ तनयोम्योकुरजोधन
छांह॥ अबकितडारतनरकनमांह॥ २८॥ कौ
ताउवाच॥ जोनचलेसुतकरिकैनेह॥ एकवां
ततोमांगैदेह॥ मोपुत्रनकौंकरिनप्रस्हारइह
सबकरौस्याकौसार॥ २९॥ सुनिसुतमेरेबचन
विलासपांचबांनमोतेरेपास॥ जननीकौंकरि
केहितवेई॥ यामैजगतविदितजसलेई॥ ३०॥ क

रोउवाच॥ [illegible] नुवहित पाहरौं एकपष्य
सौंहै।रनकरा॥ औरनकौंनहिघालौंघाउ अब
मांताअपनेंघरजाउ॥३१॥दोहा॥दीनेपांचौवां
नकरिकैंताकौंतिहिकाल॥विदाकरीपगावंद
नैतवैकरएभुवपाल॥३२॥इहसुनिकैंताआ
ईतहांत्रिभुवननाथक्रस्नहेजहां॥करणकही
सोवर्णसुणाय॥इहविधिकेसवनिसानसा
ई॥३३॥दोहा॥प्रातहोतश्रीक्रस्नदुरयोध
नकैंपास॥गएफेरिहितसंधिकैंछत्रसुबुधि
अवास॥३४॥कह्यो:हमारोकीजियेपांचग्राम
किनदेहु॥ वंधुएकसोपंचसौंनिसिदिनवढै
सनेह॥३५॥दुर्योधन०॥नितिउठिउसलेसा
लहरिकतहिसलावतआंनि॥करौंअपांडव
भूमिसबकरौनकुलकीकांनि॥३६॥श्रीक्र
स्नदंडक॥ कोपिकोपिभीमभुजारोपिरनमां
ह॥ ओपिओपिमुषगदालीनैंगलगाजिहै
रोसस्यिआंनिआंनिक्रोधधनुतांनितांनि।

लैकैपथ्थपांनिधनुक[illegible]तेआंपिहै। अश्व
नीकुमारकेकुमारकीनकोसकेमुनिधीरम
धरोगेबरपोरिमसोभाजिहै॥ गर्वहीअरूक
मंत्रमूढ तू नजानेकछू॥ चेतिहैतूमूढजबआ
ईमुंडवाजिहै॥ ३७॥ दोहा॥ इहमुनिसकुनिस
रोषकैकहीनृपतिसोजाई॥ कहाकांनियांकी
करौवांधिलेकूसुषपाई॥ ३८ साबमिलिकैंचा
हतकियेवनैनहिकछूवात॥ विलषभीमविदु
रतवविकलकैगरगात॥ ३९॥ चौपई॥ भीषम
विदुरविलोकितजांनि॥ बदनपरसोसारंगपानि॥ स
मुषभीत्तरिदेष्योव्रहमंड॥ संभ्रमछायोचित्त
अषंड॥ ४०॥ छपै॥ देषेगगनससूरचंद्रतारा
ग न। देष॥ देषीपहुमिसनीरभूरिभूधरसविसे
षे॥ देषसरितासलिलसिधुसरवरजलसंजुत
देषेतरवरविपनिसघनद्रुमउपवनअद्भुत॥ मृ
गराजमत्तमातंगलषिअवलोकेरिषिराजग
न॥ भ्रमभूलिविदुरभीषमरहे॥ सिथलविकल

वि० ॥२१८॥

के सकल तन ॥ भीषम० ॥ चौपई ॥ बलदुरजोधन
मरमन जांनत ॥ सिधत्रिभुवनपति की नहि मा
नत ॥ भूल्यो मूरष नृपता गर्व ॥ कुलकेकमे तजे
तिन सर्व ॥ ४२ ॥ केहे सौं रचो करतार ॥ भीषम क
हत वारही वार ॥ चल्यो कृस्न नृपको समुझाइ
पकुचे धर्मपुत्र के आइ ॥ ४३ ॥ श्रीकृस्न० सूचि
मम हि तुमको नहि देत ॥ उद्दिम ली नो भारथ
हेत ॥ विना जुद्ध वे कछू न दे है ॥ जो रन जीतै सो
भुव लेहे ॥ ४४ ॥ इति श्रीमहाभारथे पुराणे विजय
मुक्तावली कवि छत्र विरचिते श्रीकृस्न दुर्योधन सं
वादे नाम षट्विंशति मोध्यायः ॥ २६ ॥ इति विरा
ट पर्व समाप्तं ॥ अथ उद्दिम पर्व कथा ॥ सुंदरी ॥
बैठि सभा सुत धर्म महीपति ॥ बोलि लिये तहां कृ
स्न महामति ॥ बंधव चारि विराजत ता थल कौं
नव षांनि कहे तिन केवल ॥ १ ॥ राजोवाच ॥ जु
द्ध चैहरि सो कछू कीजहि ॥ भूतल मैं बहु धा
जस लीजहि ॥ मो हि मां हा मन मैं डर आवत

॥१

विग्रह हों निसि द्यौस बचावत ॥ २ ॥ दोहा ॥ बनि
आई सब कैं मतैं लीनों द्रुपद बुलाइ ॥ संधि मान
कुराज पै दीनें तुरत पठाइ ॥ ३ ॥ गए द्रुपद नरना
ह तब भूपति कौरव पास ॥ आदर करि आसन द
यो बोले बचन प्रकास ॥ ४ ॥ दुर्योधन उवाच ॥ गी
तिका ॥ कोंन हेत महीप आये ॥ सोक हो समुझा
य कें ॥ पावन भये तुव दरस तें ॥ बड सुख्य दीनो आ
य कें ॥ द्रुपद भूपति यों कहै जग मैं महाजस ली
जिये ॥ नृप जुधिष्ठिर कों धरा नृप बांटि कैं कछु दी
जिये ॥ ५ ॥ नृप कै कुल कलह नां सो लेहु तिन हु
बुलाइ कैं ॥ सब आपनी मरजाद सो रहिहै सदा
सुष पाइ कैं ॥ लगी सरसी बात इह सो चित्त कछू
नही कीजिये लावही ॥ कहत विदुर न कोंन मोप
भूमि रंच कपावही ॥ ६ ॥ तोन छाडो वरन सुरपति
आए आंनि बचावही ॥ कोंन धिष्टिर भीम को है
बचन कै सें पावही ॥ द्रुपद सुनि कैं सीस ढोरयौ रही
सो ईकै रहै ॥ सो बचाइ कौ बचै गुकि क्रोध सो तब

विजै०
॥२४९॥

यो कहे ॥ ७ ॥ दंडक ॥ लोकमे आपकघू अवली कनलीजि ॥ नलीजि नली जियेजू ॥ चाहत भूमि जुधिष्टिर सुछिम ॥ दीजिये दिजी मदिजीयेजू यो करि राज निकंटक आपनकी जियेकीजि येकी जियेजू ॥ छत्र महा हितुकें तुव वैन यातीजै पतीजै पतीजीयेजू ॥ ८ ॥ दीजिये पंचतुन्हे । अब यामन हि नृपकी नृपता मिटिजे हे ॥ बैठि रहे तिनमें सुषमानि ॥ जुधिष्टिर आप महा सुष पैहे ॥ जोंनि अजोंनि प्रमानके मांनि कि भूमि अबे अपनें बलें रले हे ॥ बांनकी धारमें स्याप रवार हितो हि वहाय धनंजय दे हे ॥ ९ ॥ दोहा ॥ फिरि आयो तब द्रुपद नृप नृपनि जुधिष्टिर पास दुरयोधनकी कुमतिके कीने वचन प्रकास ॥ १० ॥ ॥ द्रुपद ॥ बुधिके के वकु चातुरी अरु के कें वहु ग्यान ॥ समुझायो समझो नही करि देष्यो सव स्यांन ॥ ११ ॥ हठि विराट पठयेत हां नृपति तासरी वार ॥ समझायो दुरजोधनें बाचो कलह अपार ।

१२ ॥ चौपई ॥ नृपविराटपकूं विधिकें कही ॥ सु
षमसी कछू दीजे महीं ॥ वे संतुष्टि वैठि तहां रहे
फेरि कछू नहीं तुमसों कहै ॥ १३ ॥ दुर्योधन० कहै
कें अगवावरो मागत धरनी आई ॥ हनो पंडसुत ।
छिनक में ॥ को अब सकें बचाई ॥ १४ ॥ हम सोरा
बो है ततु मम ति भाषो ये वैन ॥ जो लों जियमें जीव
धरकहैं न तिल भरि दैन ॥ १५ ॥ विराट ॥ सवैया ॥ आप
न रावकूं गोत को घाउ उतें उन वारही वारवराई दें
न कहे न हि छ्यारिकियां म ॥ कहा मति धो तुमकों व
नि आई ॥ को नीजु है जो होय रहे न मिटे इह भ
पतिमें मति पाई ॥ नीकी औ रवुरी विधिको सव
के करता हरता करताई ॥ १६ ॥ चौपई ॥ इनकही
वेमें कछू न राषी जे मष आई तेई भाषी ॥ कहा क
रे काहू कें होई ॥ हो नि मिटै सा कहि कोई ॥ ७ ॥ आ
ये नृपविराट उठि धांम कीये कृष्ण कौं अमित प्रनां
म ॥ कहे न मान त षल कछू वात सुनि सुनि वैन ज
रत है गात ॥ १८ ॥ यई सुनि कृष्ण विराट तव भय चलि

कैं नगर द्वारिका गए ॥ युधिष्टिर नृप मन दु
चिताई ॥ बांचत सूरी दीलराई ॥ १८ ॥ दो
उत दुरजोधन अनुज जुत कीने चित्त विचा
र ॥ भीषम अरु आए विदुर बैठे सब परिवार
१९ ॥ दुरजोधन वाचा ॥ भुजंगप्रयात
बड़ो सोच तो आपनैं चित्त कीजे ॥ मतो हो
ई हरो पिता मोहि दीजे ॥ सदा पंडु के पुत्र
है साल मेरे ॥ तिन्है ना सके जल कीने घने
रे ॥ २० ॥ कहो मंत्र जो जासु के चित्त आवे हि
तु होय सो हेतु की सी बतावे ॥ गई ते रहै ब
षे रा सुख मांही रहे साल जाको सो जीवे अ
घा हि ॥ २१ ॥ भीषम विदुर उवाच ॥ सवैया ॥
एक सुने नही भाषी अनेक सु टेक सबै है
कुटेव की टेकी ॥ ताको भलो न भयो कब
हू ॥ जिहि पै जत जो नही आपु के रूकी ॥ यो
समझो अपने मन में हह रू रकी मांहि न
बो निभले की ॥ छाडि दई कुल की करबी

श्री इहरीतिलईहठिकैंअववेकी॥२४॥चौपई॥
भूपररहतनदीसैंकोई॥अमररएकजसम्र
पजसहोई॥हिरनाकुसअरुरावनगयो इ
हधननाहिनकाहूकोभयो॥२५॥कतअभिला
षकाजसोंकीजै॥लोकविलोनअलोकन
लीजै॥हानिहोयजीतैंअरुहारैं॥जमुरहिहै
नित्यवदनपसारैं॥२६॥सुनतवचननहिभूप
हिमायो॥तवतिननियरोसकुनिवुलायो॥सो
ईकरौजुमंत्रविचारौ॥मोउरभाववचनतिहा
रो॥२७॥सकुनिउ०॥मेरोमतोमहीपतिकीजै
नगरविराटवेगिलैदीजै॥जौलौंउनकैंनही
सहाउ॥लेसवसेनांतिहिथलजांउ॥२८॥पांचु
बंधुनिमारौंआजु॥सीझिजायतौसगरोकाज
उपजतहीजोकाटैव्याधि॥फिरिकतमरियेक
तऔषधिसाधि॥२९॥दोहा॥अंकुरनिरषिक
एछकौकपितोरततिहिकाल॥त्योंअपनेअ
रिमिटियेकुटमसहितभुवपाल॥३०॥तोमर॥

सुनिमतमांनिभूपदलसाजा॥ सकलवुलाए
भवकेराजा॥ सकिलेदलपक्षमीनसमांहि
छारभएसवगिरवरजाहि॥३१॥ आयेसोमदत्त
भुवराउ॥ अरुभगदंतसवलदलभाउ॥ तिनिके
दलकीसंष्यानांही॥ रथहयरथहाथीगनेन
जांहि॥३२॥ सेनासल्यछोहनीतीन॥ कोरथ
बाजिगनैंकरीनि॥ करनमहारथवंतपलांमें
अगिनितदलकलिंगनहांआंम्यौं॥३३॥ को
पिचल्योदलआपुसुसमी॥ कौंनगनैरनअ
द्भुतकर्मी॥ दुरजोधनद्वारावतीआये॥ आव
तश्रीहरिदरसनपाए॥३४॥ दुर्योधनउ०॥
करौसहायहमारेआय॥ तोजगमेअतिहो
तप्रताप॥ दलसजिचलौहमारेसाथ॥ बारबा
रविनवैंनरनाथ॥३५॥ कृष्णवाक्यं॥ मेतोस
वआयुधतजे॥ अस्त्रगहोंनहिहाथ॥ कैतक
र्मीजादौदियौ॥ दलजुततातेकेसाथ॥३६॥ जादौ

दलसजिकेचल्यो ॥ सुभटचमूचतुरंग ॥ सस्त्र
अस्त्रअनत्रानकसिकसेवमिसवअंग ॥ ३७
तीनिछोहनीसकनिदल ॥ नीरदघोरसमांन
चपलाचंचलचलधुजाधनुषहिधनुषबबांम
३८ ॥ दलएकादसछोहनी ॥ समिटिचलोकुर
खेत ॥ महारथीअरुअतिरथी ॥ बलकतहेर
नहेत ॥ ३९ ॥ सवैया ॥ कोपिचढ्योदुरजोधनको
दल ॥ कोपिचलेसवसूरवलीहे ॥ कुंजरपुंज
निपाईकजालसुभारपरेभुवभूरिहलीहे ॥ वाजि
नकीषुरतारनिसौंउडिकेधरधूरिअकासच
लीहे ॥ छाहीरह्यो ॥ तमलोपिदिवाकरलोप
गईसवव्योमथलीहे ॥ ४० ॥ सुंदरी ॥ कुंजरपुंज
निपुंजनिसोहत ॥ लालधजातिनपैमनमोहत
दीरघसद्दमहाधुनिगाजत ॥ योतडितानुतबा
रिविराजत ॥ ४१ ॥ हेहयचंचलकेंषगषंजन
पोनकुरंगनकीगतिगंजन ॥ संषघनेवकुंदुंद
भीवाजे ॥ बंदिसबेविरदावलिसाजत ॥ ४२ ॥

विजै०

॥१२२॥

॥मधुभारछंद॥ सुपर्वत चूरि॥ भए सब धूरि
गए मिटि नीर॥ हते जु गंभीर ४३॥ गए कुरखेत
सजेरन हेत॥ पर्यो दल जाई॥ धरा न समाई
४४॥ दोहा॥ इत दल साज्यो सबल अति जुधि
ष्टिर नरनाह॥ चढ्यो बीररस सबनि कों सब
हि कें उत्साह॥ ४५॥ साज्यो बहोरि विराट दल
दुरासिंधु सुषपाई॥ चले पंडसुत साजि कें गर
जि निसान बजाई॥ ४६॥ अर्जुन समें देखारि।
का त्रिभुवनपति के हेत॥ इमसों अरु कुलि
के रवनि॥ षेत होई कुरषेत॥ ४७॥ अर्जुन उवा
च॥ हे रत बात युधिष्टिर राय॥ चलियें सांई क
रो सहाय॥ जेसें काज सबे करि आय॥ तेन क
छू अब जीत गनाए॥ ४८॥ श्रीकृष्ण उवाच॥
दुरयोधन वकु दल लेगायो॥ तिंजे अस्त्र इहमें पन
लायो॥ जो जियमें इह भावे तोहि॥ तो अर्जुन
ले चलिये मोहि॥ ४९॥ अर्जुन उवाच॥ दल दु
रजोधन कों सब दाजें॥ इम बीन वे सो हरन की

जे॥ आपचलेनितदरसनपावहि॥ कलमस
औरकलिसनसावहि॥५०॥ दोहा॥ आप
हमारेपगधरो॥ दलकोऊलैजाउ॥ पथ्यसा
थश्रीहरिचलेजहांहुतेनरनाह॥५१॥ आव
तधर्मपुत्रश्रीसुषपाए॥ हरषिहरषिहरकेगु
नगाए॥ मिमिटेनोसूनछोहनीसात उद्दित
रनकीअफूलितगात॥५२॥ उमडेमोघमडोज
लधिसो॥ कीनेकटकपयान॥ तडितपताका
गरजिघनगरजतसिंधुरआंन॥५३॥ सोरठा॥
चलिआयोकुरषेत॥ जिततितदिसनघोरदल
बलकतभटरनहेत॥ सजेकवचसंनाहतन
५४॥ दोहा॥ जुरिअट्ठादसछोहनी॥ दोउदल
इकठोर॥ महारथीअरुअतिरथीसरभटसिर
मोर॥५५॥ अथफौजछोहनीसंख्या॥ एकदुरदरथ ९

एकहैतीतिअस्वअस
वार॥ पाईकपंचविचारि
यकहियपतिविवार॥
हाथी॥ रथ॥ असवार
॥१॥ ॥१॥ ॥३॥
पयादे॥ पत्तिसंख्या
५ १०

तीनिपतिकोहोईइकसे
नापतितानामंअपनेआप
नेबुधिबल॥ समझिलेहगु
नग्रामं॥५६॥ हाथी रथ
॥३॥ ॥३॥
असवार॥ पयादे सेनामुख
९ १५

वि०जै०
॥१२३॥

तौते तिगुनी गुलम क्क
जांनि जांनि उर लेहु ॥ ता
की संख्या छत्र कवि बुधि
वरव सक्क कहि देहु हाथी
रथ असवार पयादे ४५
॥ ९ ॥ २७ ॥ गुलम ५८

फेरि गुलम तिगुनी करै जो
कछु संख्या होइ ॥ छत्रक
हो सो वाहनी ॥ कहै जग
त सब कोइ ॥ ५२ ॥ वाहनी
हाथी ॥ रथ ॥ असवार पयादे
॥ २७ ॥ २७ ॥ ८१ ॥ १३५

सुमुखा
कीजे तिगुनी वाहनी ता
हि प्रतनां जांनि ॥ इय हा
थी पायक रथी कहक
वि छत्र वखांनि ह्य ॥
हाथी ॥ रथ ॥ असवार
॥ ८१ ॥ ८१ ॥ २४३ ॥

पयादा
४०५ ॥

तीन प्रतनां जोरिए एक
चमूं तव होय ॥ अपने अ
पने चित में समझि लेह
सब कोई ॥ ६३ ॥ हाथी २१८७
रथ ॥ सवार ॥ पयादे ॥
२१८७ ॥ ६५६१ ॥ १०९३५

एक चमू को ओरि कै ति
गुनी करै जु कोई ॥ छत्र
सकल समझि हिय ॥ अ
नीकिनी सो होई ६४ ॥
हाथी ॥ रथ ॥ सवार ॥
७२९ ॥ ७२९ ॥ ७२९ ॥
॥ पयादा ३६४५ ॥

अनीकिनी सेना सक
ल ॥ तिगुनी कीजे ताहि
सोई संख्या छत्र कवि
दस अनीकिनी आहि ६५
हाथी ॥ रथ ॥ सवार
२१८७ ॥ २१८७ ॥ ६५६१
पयादा ॥ १०९३५ ॥

दशअनीकिनीदशगनी साजतपंडितजांनि ॥ ताही सोएकछोहनी ॥ कहिक विछमवषानि ॥ हाथी २१८७० रथ ॥ असवार ॥ पयादे २१८७० ॥ ६५६१० ॥ १०९३	जुरेअठारहछोहनीको कविकरतवषानि ॥ छत्र कहिसंष्यासकल ॥ जां निलेहुसवजांनि ॥ ६५ ॥ हाथी ३९३६६० ॥ रथ २१८७० सवार ३५४६१ ॥ पयादे १०९३५०३ ॥
सप्तछोहनीपंडसुतरा ॥ जतसैन्यसमाज ॥ द्रुपद विराटनरेसतहां ॥ सुभका रीब्रजराज ६७ ॥ हाथी १५३०९ रथ १५३०२ ॥ सवार ४५९२७० ॥ पयादासंष्या ॥ १७६५४५० ॥	ग्यारएकादशछोहनी कुरनंदननरनाथ ॥ भीष मगुरुभगदंतनृप ॥ द्रो णकर्णसवसाथ ॥ ६६ हाथी ॥ रथ २४०५७० २४०५७० ॥ सवार ७२१७१० पयादा १२० २०५८

इतिश्री ॥ राजादुरजोधनराजायुधिष्ठिरकुरषे त्रआगमनोनामसप्तविंशतिमोध्यायः ॥ २७ ॥ दो० ॥
कार्त्तिककीसितपछकी त्रयोदशीसुभजांनिस नमुषदलदोऊजुरे ॥ फिरितहेकियोमिलान ॥ १ ॥
छंद ॥ भानुगयोछपिरैनिभईतव ॥ आपनेठौर विराजतहेसव ॥ घेरघटासमसेनपरीतहां ॥ वंदि

विजै०
॥२२८॥

...सबैकुलिकोकिलकेनहैं॥२॥हैचपला
चलसोध्वजसोहत्ति॥सोविदिसानिदिसामनु
मोहत्ति॥गाजतकुंजरयौंघनगाजत॥गोरमा
दाइनसेघनराजत॥३॥नादसजेसवठांवगुनी
जन॥बोलतसोपिकचातिगकेगन॥घोरघेनें
घनसोउमडेनोथलजोजनवादशलोपिलयो
दल॥४॥दोहा॥कातिकशुक्लचतुर्दशीप्रात
भयोसबजांनि॥इहैंश्रोरकौंसेनतवठाडो
भयोपलांनि॥५॥युधिष्ठरोविक्रमवलीसाधु
सत्यसगपान॥सुरसरीसुतदलपतिकरयोकुर
नंदनवलवांन॥६॥श्रमितपराक्रमभरहरन
सरबरकिजियेकाहि॥सेनभारभीषमलीयो
सबलउपाडरताहि॥७॥सुरसरिसुतदलपति
भयोसुन्यौंपरसुतकांन॥विलषवदनउचित
भए॥रहेनघटमेंप्रांन॥८॥चौपई॥जबइहभी
षमकीसुधिपाई॥जबजनकेमनमेंदुचिताई
त्रिभुवनपतिश्रवराछ्याकरिहै॥धर्मपुत्रकेस

बहुधहहरिहे ॥ ९९ ॥ कुस्महिसुछिमतोइहली
नों ॥ सुसुदिविनिचमूंपतिकीनों ॥ महापराक्र
मसंजुतसूरो ॥ रनमेंजोवलविक्रमसूरो ॥ १०
॥ दोहा ॥ लेयोसैंनआभारसिरकेकेप्रफुलि
तगात ॥ ताकोसाहसकोकहे ॥ कहतनवन
ईबात ॥ ११ ॥ जुरिहंडेहैदलभएरजछायोआ
समांनि ॥ भईछयासीघोसहीभयोछपाकरभा
न ॥ १२ ॥ उतदलपतिभीषमलष्योकहतपछ
नटराऊ ॥ इहत्रिभुवनपतिजुक्तनहि कों
करिघालोंघाऊ ॥ १३ ॥ नराज ॥ विनेंकरोमुरारि
जुसुमांनिचित्तलीजिये ॥ तजेक्रपानगोतघाऊ
कोंनभातिकीजिये ॥ विलोकिकेकुटंववंधु
बंधपुत्रकोगनें ॥ अलोकिहोइलोकलोक
जुद्धमेंतिन्हहनें ॥ १४ ॥ तोटक ॥ इन्भीषम
कोटिकदुष्टहरे ॥ वहुभांतिनकेंप्रतिपालकरे
तिनकोंकिहिभांतिसंघारकरो ॥ अपकीरति
सोवहुचित्तलरो ॥ १५ ॥ इहकाजनहिहमसों ॥

विजे० ॥२२५

सरिहै॥ नहि न भुपवांनधसोपरिहै॥ जब
अर्जुनरघैनं...॥ आतुकेधनुवांनतजै १
१६॥ श्रीकृष्णउवाच॥ कहिवेयोंइहकालर
बुद्धिनइ॥ सिसुतामनतैंअजकृनगई॥ अब
छत्रीयधर्मविचारिहियें॥ नहिपापकक्षूअ
बजुद्धकीयें॥ १७॥ दोहा॥ समभायेवकृष्यान
कथिभागवतगीतागाय॥ अमरएकमुवजस
रहे कह्योकृष्णसमझाय॥ १८॥ सवैया॥ तेज
धराजलपौंनअकास॥ मिलिकेंविरंचिसरीर
रच्योहै॥ क्रोधविरोधसुलोभसकामसगर्वस
मोहसमूहसमोहे॥ वंधुकुटंवत्रियासुतहेत
हिलीनभयोवकृनांचनचोंहे॥ एकरहेजग
मेंजसओजसकालवलीतैंनकोउवचोहे १
९॥ दोहा॥ वदनपसार्योपथ्थकृष्णतव॥ पथ्थ
लष्योअकुलाइ॥ देष्योसवभारथभयो॥ अद्
तकह्योनजाइ॥ २०॥ श्रीकृष्णउ०॥ मतअ
र्जुनतूसंसोकरें॥ इहदलइहथलसवसं

घरें ॥ याम हि सव बचि है दश जोमें ॥ औ रस कल
हु नित गनें ॥ २१ ॥ मेरह सव भार ... रिश छो ॥ इह
तो सो मेजस हि भाख्यो ॥ तेरो कस्यो कहा अव हो
ई ॥ करें कहा ता कों अव कोई ॥ २२ ॥ अर्जुन को सु
नि संसो गयो ॥ लयो धनुष हरि आइस दयो ॥ संग्र
म कौ बल कृष्ण भ गायो ॥ उग्रो वीं तिन को सिर ना २६
यो ॥ २३ ॥ इति श्री ० ॥ श्री कृष्ण भागवत गीता ग्या
न उपदेश वर्णनं नाम अष्टाविंशतिमोध्याय ॥ २८
इति उद्योग पर्व संपूर्ण ॥ अथ भीषम पर्व कथनं
पंडपुत्र कुरराज रण ॥ का पि उठे दल दोय ॥ चर्म
बर्म तन त्रान कसि ॥ बल क त भट सव कोइ ॥ १
॥ दंडक ॥ बीर रस रसे सूर कवच संनाह कसे को ॥
पि को पि जत्र तत्र पैज प्रुष्ठ की लई ॥ तू र स्तूर वन नी
रसा घि भूरि भूरि सूरि सूरि मोम धूरि घो सहिनी सा
म ई ॥ थर थर कं पि उठे भूतल के थल थल धर घर
कुरम की छाती मिं महा ठई ॥ पायक अपार निसें
मत्त दंत भार निसें ॥ बा जि भर तार नसु छिति छ

रखैगई॥२॥श्रीरामउ०॥छप्पै॥छत्रीकुलहिक
हाई॥सकलकुलधर्मनसांऊ॥पातकनीदैनी
गामओ द्विजदोषनपांऊं॥गुरकेवचननिमि
टिसकलतिरथव्रतहारी॥गुरजनसासनभंग
लोकाकीलीकहि टारी॥वकुलाजहोइनृपसं
तनहिं बांनऋपाननिपरिहरो॥प्रतिग्योस
दीहदुरघटसुभटसुजोंनसहसदससंघरों॥३
॥दोहा॥सूरसंघारोसहसदस॥दिनप्रतिक
रिचितचाऊ॥नितकरोजलपांनतवइतनो
करिबरभाउ॥४॥चामर॥चलसंइंद्रुरुद्रजूस
हाईग्रायजोकरैं॥कोपिकोपिजुद्धवांनको
रिकोरिजोधरैं॥लोकपालजोजुरैं तोउनपे
जहारिहो॥आजतेइतेसूनित्यमारिहो॥५
पथ्थसोंजुरेकरालजुद्धभोमहाघनों॥लंकना
थसोसक्रुद्धरामचंद्रपोभयो॥गंगपुत्रजत्रत
त्रवानरछियोकरैं॥सारथ्थिरथ्थिसमेतठंउठं
उंसंघरे॥६॥दोहा॥उग्ररजुगोप्रथमहीक

रिवहुधासंग्राम ॥ एकअसुतभीषमहनेगने
नपरईनाम ॥ ७ ॥ मुजैदोउसेनकेरथीउरदरन
मांक ॥ भीषमपुजयोआयुपनबहुरिहोईसं
ज ॥ ८ ॥ रैनिभयेसबसूरिमांकियोनसरसंघा
न ॥ सजेसकलभटसैंनकेप्रातउगावतभांन
॥ ९ ॥ मारुमारुदोउदलभई ॥ उठेबीररनगाजि
पाईकरथीमतंगगन ॥ अरुजूरेबहुवाजि ॥ १० ॥
मंडलीककीनेंधनुष ॥ सरछाएआकास ॥ अ
तपाल्यौदसमसहसहनि ॥ करिसेनाउरत्रास ॥ ११ ॥
॥ चौपई ॥ दिनप्रतिदसदससहससंघारे ॥ रथी
अतिरथीगजसंघारे ॥ मारगकुछ्यायछीभई
पंडपुत्रउरचिंताभई ॥ भीषमअगनितसूरसंघा
रे ॥ पंडपुत्रसवहियहराहारे ॥ रह्योजुद्धतहौंनि
सेगई ॥ पंडसुतनकेउरमतिभई ॥ १३ ॥ दोहा ॥ अ
र्द्धरैनिसिगइ ॥ आएभीषमपास ॥ बहुविधिकेअ
स्तुतिकरि ॥ बोलेवचनप्रकास ॥ १४ ॥ दोधक ॥ आ
जुपिताकछूसोमतिदीजे ॥ जाविधिजीतिसवेद

ललीजै ॥ जोकुरुनंदनकौंछीजै ॥ आयुसदेहु
विजै० तोसवकीजै ॥१५॥ भीषम० ॥ छप्पै ॥ जोलगिमो
॥१२७॥ घटप्रांन ॥ कहोकोसरवरिपावे ॥ चिरंजीवकुर
राजकततहिंपरओछोआवे ॥ विजयकैरकौ
सरमोहिदेषतरनमांही ॥ जोजितैब्रजराजतो
हितौश्रीचितैरजनाही ॥ सुनिधर्मपुत्रसिषसी
षइहसत्यमांनिचित्तलीज्जिये ॥ नरनाहद्रुपद
सुतआयकरिविजयसकलरनकिज्जिये ॥१६॥
॥ सवैया ॥ मोहिपितुवरदांनदीनैंपरमउरसुष
पाइकैं ॥ विनावोलेकालनियरोक्योसकेगो
आयकैं ॥ मांगिहैमुषमृत्युलहिहै ॥ नांपराज
यदेषिहै ॥ वांनजांकोसांधिहैगतप्रांनताकेल
षिहै ॥१७॥ मोहिकोरनजीतिहैविधिरुद्रसुरप
तिरनकरै ॥ जाहिताकोंहरौंप्रानानिवांननिफ
लनापरैं ॥ व्रद्धसिसुअरुनारिकोंद्विजकोंधनुष
करनागहौं ॥ भयोदेषिनतातिमारौं ॥ सत्यता
सौंहौकहौं ॥१८॥ आपनीजयअनूपकाहोतोक

होसोकीजिये॥द्रुपदनंदयोसुतसीषंडीताहिआ
गेकीजिये॥नारितेंवहपुरषभौताकीकथासुनि
लीजिये॥तुमजोगसिष्याहोंकहौंनजाथताहि॥
पतीजिये॥१९॥चौपई॥कासिराजकीसुतादुलारी
करिसिवासिंभुतिहिनारी॥तियतेंपुरुषभईवरुपा
इलीनोजन्मद्रुपदगृहआय॥२०॥आगेदेउपदे
सौंतोहि॥वाननपथ्थबधियैमोहि॥भीषमहुज
वइहिविधिकह्यो॥पगवंदेन्हीसंसारह्यो॥२१॥अ
२३ पनेंधर्मसुनआयो॥सत्यवचनभीषमकौपायो॥स
षसुतमिनसारोभयो॥उद्दिमतहांजुद्धकोलयो॥२२
॥दोहा॥सुभटसीषंडीअग्रकरि॥पंडपुत्रवलिवंड
आइलयोसरजालनभ॥संग्रमकीयोअषंड॥२३
मारुमारुद्वैदलरटे॥होतअमितगतिगाजि॥उठ
तआगनिअसिवरवजनतजूगतसुभटसमाज॥२४
बीतिमारगसप्तमी॥समरहोतअतिकाल॥रुधि
रसलीलपरिपकुमिंदीसतठाउकराल॥२५॥जुद्ध
होतदिननौगए॥कौकविकसैवषांनि॥दसएश्री
सकारन॥पछोभटनसौंआंनि॥२६॥॥बीसैंअ

विज्ञे०
॥१२०॥

[illegible] प्रसों॥ भीम मनुहि संग्राम॥ रनविक
[illegible] ख्यो जाहि घरू की नांम॥ २७॥ भीमसे
नसों तव ज्यो ख्यो॥ दुसासन वलि वांन॥ चित्रसे
न सहदेव सो कीनो को पिक्र पांन॥ २८॥ नकु
ल सुसर्मा त्रिगर्त सु द्रुपद राय सों जुद्ध॥ धृष्टद्यु
वनन्पद्रोण सुत समर कर्यो कै क्रुद्ध॥ २९॥ जुर्यो
जे च भूरिश्रवा द्रुपद सुता सुत संग॥ रा उ विराट
कलिंग सों को पिकियो रन रंग॥ ३०॥ कृतवर्मा
अरु पथ्थ सों वाजी असि वर मार॥ पाइक ह
य सारथि रथी भये कित संघार॥ ३१॥ भूप जुधि
ष्ठिर सों कर्यो॥ संग्रम कल्प अपार॥ इते सुभ
ट रण भूमि मे जुटे राकही बार॥ ३२॥ दोहा॥ को
पि भीम तिहि बार॥ दुर्योधन सासन को उर दगि
र्यो पकुमी विकरार॥ अंजन कोसो गिरि पर्यो
३३॥ कृतवर्मा जादौं तहां॥ करिक्ख त्रिसर जाल
काटनो पिंजर पथ्थ सो कीनो को पकराल ३४
जे सर छाडे पथ्थ रन तेषंडे गुन वांन॥ अंधका
रघर उर्द्ध मै॥ केही गयो नि दांन ३५॥ कों नागनें

अवपथ्थकोंभयकारीसंग्रा [illegible] मैंवे
ध्यौकटक॥वरनिसकैकोनांम [illegible]॥
डयौमृगजूथनिउपरिकेहरि॥कोपिउभ्यौरनप
थ्थवली॥वांनचलेअसमांनहूंलौंसुमनोस
लभाउडिमोमचली॥षंडकरीध्वजचौरपता
क॥भईउपमाइहछत्रभली॥मांनोउडितजि
सैलकेशृंगनिहंसनिकेवंसनिकीअवली ३७
॥दोधक॥ठंवहिठंवहिसूरसंघारे॥कोपिकै
तेहयसिंधुरमारे॥वांनविसालहयौकृतवर्मो
मोहिगिरयौधरवर्मसचर्मो॥३८॥जादवमोहि
परयौजवदेष्यो॥सैंनसबैभयकालविसेष्यो
भागतयोभटअर्जुनआगे॥पौंनविहारतज्यौं
घनभागे॥३९॥दोहा॥आयौसकुनिसरोष
कै॥कह्यौपथ्थकितजाइ॥जादवजांनैंमोहि
कितडारौभुजाउघारि॥४०॥आयौसन्मुषस
क्तिगहि॥पथ्थकरीद्वैषंड॥धाईसरासनवां
नकरतवलीनौवलिवंड॥४१॥सोऊकीनौंषं

विजे० ॥१३९

...र्जुनसमर...न ॥ रथाकाटयौसारथी
ह... ...सा छीन ॥४२॥ लज्जितपथल
थलत... ...यौतनकीनहीम्हसम्हारि ॥ लषी
दुरजोधनआदिसब ॥ संसौकरयौअपार ॥४३॥
॥दोधक॥ रोषकरेसतवंधवधारा ॥ अर्जुनसौं
सवक्रूरनआरा ॥ घेरिलियौवरहीरथऐसैं ॥ घे
रतपर्वतइंद्रहिजैसें ॥४४॥ ज्यौमघवाघनसू
रहिलोपैं ॥ त्यौंचहुघां सवकौरवकोपैं वान
निकेरथछायलयौहै ॥ संभ्रमकृष्णहिचित्त
भयौहै ॥४५॥ दोहा ॥ सहदेवधाइनकुलभी
मघरूकासाथ ॥ सोचगहेससिराहज्यौंधर्मपु
त्रनरनाथ ॥४६॥ अर्जुनवांनवृष्टितवकारी कु
रनंदनदलधीरनधरी ॥ उडीपताकावांननिसा
थ ॥ कटिगएधनषरहेनहिहाथ ॥४७॥ ज्यौवड
वागनिपौंनहिपाई ॥ कौरवसेनाचलीपराई
मारमारदोऊदलगाजे ॥ अतिगतिषर्गखगीसौं
वाजे ॥४८॥ पवनपुत्रसुतधर्मप्रचारयौ लेकर ॥२९॥

गदाधनुषभुवडारयो ॥ र[illegible]यहस्ती [illegible]
मारे ॥ वज्रधाई जनुपर्दनपरे [illegible]
ईभटभानकभेसु ॥ जत्रतत्रजनु[illegible]के स्त
अद्भुतसमरनसकोवषांनि ॥ गिरिसिगिरिक
रीभवश्रांनि ॥ ४१ ॥ ज्यौं दुरजोधनअनुजहने
भीमपचीस ॥ कहुं बाहु कहुधरपरे ॥ कहुं परे
धरसीस ॥ ५१ ॥ सवैया ॥ कोपिगदाकरलेतिहि
खेतकितेदलदुर्गमदीहसंघास्यो ॥ ज्यौंरथीक
टिकुंभनिसीधुरश्रोनितपूरप्रवाहविचास्यो या
हभसुंडकुकुलधुजाफष चामरकेसमिवारनि।
हास्यो ॥ पौंनकोपूतवलीरनजीतिकैं सांचहुदु
द्धको सिंधुसुधास्यो ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ राष्यौभीमका
लिंगतबद्धैघटिकाविरमाय ॥ धनुषधरेभटरा
जुलहै ॥ भीषमपर्हुंमोआय ॥ ५३ ॥ द्रुडत्तपाईथा
हलिभि स्योदलतिनिकोपाई ॥ धीरधरीसाहस
बढ्यो ॥ कोकविकहेवनाई ॥ ५४ ॥ इतिश्रीमहा
० ॥ कौरववधभीमसेनविजयवर्णनंनामनवविं
सतिमोध्यायः २९ ॥ भीमसेनउवाच ॥ सवैया ॥

चित्तौ०
१२७

आजुही चक्र गाहौ (?) कै के सम रि ॥ आजु धनै दल दपि बिदारौं ॥ आज महारथवंत हतौं ॥ सब आजु ही कुंजर बाजि संघारौं ॥ अपांडव भूमि करौ वर आजही ॥ आजु ही काज इते सब सारौं ॥ जौं न करौं इन नो पुरुषारथ ॥ तो कुल छत्रीय धर्म निहारौं ॥
१ ॥ दोहा ॥ भीषम कोप्यौ देषि कै ॥ तब अर्जुन गुन ग्रांम ॥ द्रुपद कवर आगै करयौ ताहि सीषंडी नांम ॥ २ ॥ भुजंगप्रयात ॥ हस्यौं गंगको पुत्र सो नैन देष्यौं ॥ तवै आपनो काल जियमांहि लेषौ दियं चर्म आगैं गहै षर्ग आयौ ॥ महारोषसों कोपिकैं पथ्थ धायौ ॥ ३ ॥ महाकाल को काल सो वांन लीनों ॥ फरी षर्ग सो तोरि द्वै षंड कीनों ॥ ४ ॥ तवै गंग को पुत्र लै सक्ति ऐसी ॥ महां मीचु हू के तेज हू तें ऐसे नै मी ॥ ४ ॥ लषी पथ्थ द्वै षंड लै वांन कीनी सवै देषि सेना तवै त्रासमीनी ॥ महा रोस सो गंग को पुत्र धायौ ॥ धनु वांन लै सैंन को सो अघायौ ॥ ५ ॥ दोहा ॥ कोपि हते हूं अयुत रन रथी अतिरथी स

र॥ पाइक हय गज छतन छूटि ॥ चलेश्रोनके ष्
र ॥ ६ ॥ छप्पै ॥ धीर न धरैं न चमूं चतुरंग सु भाग त
कोउ न काहू सम्हारयो ॥ थाकि रहे पुरषारथ
हू अति पारथ ॥ श्राण हियव ज्रु हारयो ॥ अश्वनि
रेक हूं बीर गिरे क हूं मत्त गयंदन कौ गन डारयो ॥
भूप युधिष्टिर को त्रण सो दल कोपि कि आगि मे
भीषम वारयो ॥ ७ ॥ दोहा ॥ कुंती पंडसुत दल सब
ल ॥ विचरित्यो दिसि च्यारि ॥ भीषम सौं मन ॥
बचन कर्म सब ही मां निहारि ॥ ८ ॥ जब जांनी से
ना चली भीषम सो सब हारी ॥ धाए कर धरि च
क्र प्रभु रछक भक्त मुरारि ॥ ९ ॥ सवैया ॥ चक्र ग
ह्यो कर को पि मुरारि ॥ निहारि तहां अपनों ब्रत
टारयो ॥ यो रथ तै घसि धाय धरा गज जूथ नि ऊ
पर सिंधु पचारयो ॥ देषत ही तिलका वलीसी
स निही चित्त और विचार बिचारयो ॥ पिड बई
करुणा निधि ता हि ॥ कृपा करि के जन को प
न पारयो ॥ १० ॥ अर्जुन उवाच ॥ दोहा ॥ सांई ही

३२

रतपेजनकत॥ ...तौइहसंग्राम द्रुपदपुत्रपहु
विजै० चौतहांकरि... नतानाम॥२१॥दोधक॥को
॥२३॥ रवकोदलकोपसंघारयो॥जत्रतत्रहतिभूत
लडारयौ॥पच्छ्यसीषंडीलितवधायो॥भीषम
केतवबसनमुषआयो॥२२॥देषिसिषंडीवा
ननगह्यौ॥तिनकेमनमुषठाडोरह्यौ॥बान
निबरष्योपच्छ्यसरीर॥तबइहसिवोल्यौभीष
मबीर॥२३॥अर्जुनस्यवेधतअंगमेरे॥बाह
नहोईसिषंडीतेरे॥द्रुपदपुत्रजेतेसरहये॥ल
गेनतनमेंनिर्फलगये॥२४॥अर्जुनवांनतिमा
रेषांन॥भूमिगिरयोयोकहिवलवांन॥मारग
शुक्लअष्टमीभई॥तबभीषमसरसज्यालई
॥२५॥दोहा॥भीषमपेचौसेजनसर॥दसयदि
नबरबीर॥शरबसिरपछिमचरनपसोपहु
मिरनधीर॥२६॥बरबसत्वमननस्वर्गतेंस्वरसव
चढविमांन॥आईकोतिगसुरतरुनिज्ञितति
तरूपनिधांन॥२७॥जैजैशब्दअकासमोंधनि

भीषममटराउ ॥ कोरवकों सकुनिकोंमि
ल्योचित्तकोचाउ ॥ १८ ॥ भयोकुलाहलसवक
टक विलषवदनदीसंत ॥ जनजनउरम्रातंक
केसंभ्रमवषोअनंत ॥ १९ ॥ भीषमसरकीसेज
लषीलटकतसीसहिजांनि ॥ पटभूषनकर
राजतबदयेउसीसेआंनि ॥ २० ॥ भीषमउवाच
तुमनहीजानतइहसमों ॥ लीनोपथ्थवुलाइ
बांनछेधिउचौकियो ॥ सीसमुकटतहैजाइ
२१ ॥ चौपई ॥ भीषमकहैतजोरववांनजबउ
तरदिसिआवैभांन ॥ काटीगंगापथ्थहतिबां
न ॥ छाइरह्योजलकितप्रमाण ॥ २२ ॥ तहसर
सज्यांभीषमपर्यो ॥ बहोतजतननतहमंदिर
कर्यो ॥ आयुसविनाष्टतुनहिआवै ॥ कौनसु
भटभीषमसरिपावै ॥ २३ ॥ समरकरनकुरराज
सों पंडपुत्रसौंरेनि ॥ भयोअमितगतिदावनि
सुरपतिकोसोऐनि ॥ २४ ॥ सैनाउवाच ॥ नेक

विजै०
॥ ३४ ॥

हूनमांनी दुरजोधन अठांनि ठांनी ॥ जाई कौंव
बांनी उन भूमि मांगी छोरी सी ॥ ग्रेह निकोन
ह मेटिवे दही की वां नि लई सुष्प के पियूषमां
हि विषमूरि घोरी सी ॥ घाटौ अति जीको न सुभ
व पस्योना को कछू आपनी कही कौ सबै कुल
कां नितो रासी ॥ कै कै सठ हठ भीषमादि सैंनत्र
न सम मूरिष बराई ही कैं बारिद्यो छोरीसी २
५ ॥ दोहा ॥ ललयै सैन को भारत बद्रा एणावार
ज मीस ॥ तिन हि कैं संग सबल दल ॥ चढे सक
ल अवनीस ॥ २६ ॥ इति श्री० ॥ भीषमपिताम
ह संमोहनं नाम त्रंशतिमोध्याय: ॥ ३० ॥ अ
थ द्रोणपर्व समास कथनं ॥ सोरठा ॥ दलपति
द्रोण वनाई वधौ को पिरण रुद्र सो ॥ कटक स
मुद्र हियाई ॥ सो षत देषत रोसकरि ॥ १ ॥ दो० ॥
स जैसे निडत पांडवनि ॥ पक्ष्य च क्रो रन को पि
निरषत हिमगराज ज्यों ॥ जानु करी दल लोपि
च ॥ घुमरे घन की गाज ज्यों ह्वै दल मांमै हि नि ।

॥ ३

सान ॥ चपलपताकादा[illegible]नी सिंधुरघटा।
समांन ॥ ३ ॥ द्रुपदराईग्रहद्रोणसों भयोजु
द्ध अतिकाल ॥ दोऊबीरसमांनही चषि
करतसरजाल ॥ ४ ॥ प्रथमधौसकरिरनरहे
दोऊबीरसमांन ॥ कवचसनाहकसेसव।
नि आतउगतहिभांन ॥ ५ ॥ जुरेबीरदुहंओर
केरछैनछाईअसमांनि ॥ भईनिसासोछा
ईतम ॥ लसैंछपाकरभांन ॥ ६ ॥ छंदत्रिभंगी ॥
सजिचर्मसवर्मीअद्भुतकर्मी ॥ कोपिसुसर्मी
आयगयो ॥ जगमैजसलीजैविलमनकीजै
पथ्थहियहसंदेसदयो ॥ जुरि॰हमसोंना
रीजुद्धसमारो ॥ अतिभारोआनंदकरो वि।
लमनल्यावहु ॥ सनमुषआवहु धनुषच।
ढावहुबांनधरो ॥ ७ ॥ अर्जुनकेंउरबीरर
स अतिवाढ्योसुनिबैन ॥ दोउसमरसबी।
रअति ॥ कौंहरनउपरैंन ॥ ८ ॥ आयोतह
भगदंतनृप बलकोकघूनअंत ॥ अंजन

विजे०
॥३३॥

गिरिवरसरु॥सोऽत्र गज उपर सोहंत॥९॥ताके सिं
धु के बल॥कोक कवि कहे सुनाय॥बाहुवात
के पर सहो वारन गज उठि जाय॥१०॥दोधक॥
भीमवली भगदत्त विलोक्यो॥आवत सो भट
के वर रोक्यो॥ने कहूं जो वरज्यो नहिं मांनैं भां
तिन भांति न केरन ठांनै॥११॥अंकुस मारि कि
रीतर पेल्यो॥भीमवली नठील रनठेल्यो पोन
के सुत सें मुष्टी प्रहार्यो॥सो गज नेक टरे न
हीटार्यो॥१२॥उद्दिम के बहु थां किर ह्यो
है॥जात नहीं मुष बैन कह्यो है पंनि कौ सू
त जितो बरणांने॥कुंजर सो मन नेक न ठांनैं
॥१३॥दोहा॥चतुरदंत उनमत्त बर गज तभी
म ही पाई॥चाहत लयो लपेटि कैं॥तो महि
कछु वसाई॥१४॥चोपई॥भीमसेन वलकी
नौं सबै॥रोम न टूट्यो भाग्यो गर्वै॥कुंजर पेन
ही पावै जांनि॥को भगदत्त नरेस समांन॥१५
पर्यो शब्द अर्जुन कैं कांन॥वाही दल कौ

श्री

रुवांन ॥ कोकहिसकैंनसाहसरह्यौ ॥ तबदी
धायततुअर्जुनलयौ ॥ १६ ॥ अर्जुनभीमलच्योन
नतल ॥ लईसक्तिजेसोसिवसूल ॥ रावनज्योंल
छिमनकों छंडी ॥ बरकरिइंद्रपूततवषंडी ॥ १७ ॥ षं
डकरीहैवाननकाटि ॥ औरलयौदलवाननिपा
टि ॥ तबभगदंतसम्हारोआप ॥ जागोजगमेंब
डोप्रताप ॥ १८ ॥ पंचवांनकरमेंतिनलए ॥ तबअ
र्जुनकेउरमेंहये ॥ लागतउरमेंसोपरजस्यौ ॥ बि
षमवांनतिनधनपरधस्यौ ॥ १९ ॥ दोहा ॥ सुकि ।
कुंजरकेंसिरहयौ ॥ डास्योसीसविदारि ॥ पारभ
योभीषबेधितनकस्यौफकाद्वैफारि ॥ २० ॥ कुंज
रसबरसपायैरोदाविगयोभगदंत ॥ गिरिननपा
वतभूमिमें ॥ साजततनतनअनंत ॥ २१ ॥ जीत्यो वा ॥
हनपथ्थकोंपेलतबारंबार ॥ पगुनदेसकउरदसा
अंकुसहनीअपार ॥ २२ ॥ सवैया ॥ दाविगयोजुग ॥
जांनुमेंसिंधुरयौरिषकोंकविकोंनवषांनें ॥ जुद्धजु
रेनमुरेबरबीर ॥ सुभांतिअनेकननकेंरनठांनें ॥ पेल
तकोंधकियेभगदंतन ॥ कुंजरनेंकहेंअंकुसमांनें

विजै० ॥२३४

निर्धनकी त्रिय ज्यां ससुज्यौं अपने पतिकों क
छू चित्तन ज्यानें ॥२३॥ दोहा ॥ जुगल जंघ मेम
तक मानन बारबार झकोरि ॥ हार्यो दैदै अंकुसें
नही सकत अंगमो रि ॥२४॥ बीत एक मह तें भूमि
गिर्यो गजराज ॥ प्यादौ है के मगदंत तन वधायौ सिर
ताज ॥२५॥ सोरठा ॥ कोपि बगलि धाइ ॥ कोधित अ
त्तिराति नयन ॥ मघवा च्चठ्यो वजाइ ॥ चपला ज्यां
सिब रज्जलदतन ॥२६॥ दोहा ॥ द्वै सर लै दोऊ ह
नी ॥ तबही पारथ बाकु ॥ बिन भुजसन मुष पथ्थ
के ॥ चल्यो बली नरनाह ॥२७॥ सोरठा ॥ पथ्थ
तीसरो वांन ॥ हन्यो सीस मैं क्रोध करी ॥ मूर छि गि
र्यो वलवांन ॥ उठि अर्जुन सनमुष चल्यो ॥२८
॥ चौपई ॥ तब सो पंच पेड चलि गयो ॥ अर्द्धचंद्र
लै अर्जुन हयो ॥ काटे जांनु जंघ धरपर्यो ॥ यो भग
दंत भूप संहर्यो ॥२९॥ हाहाकार कटक में भयो स
रनमनि रविसो अथयो ॥ कोरव नृपके दुष अति
भारी ॥ सुषकी सकल वासना जारी ॥३०॥ दोहा ॥ ला
नो अर्जुन लायउर ॥ भूप जुधिष्टिर आय ॥ आज क

॥३४

रीसंग्रामजय कीनौंप्रगटप्रताप ॥ ३१ ॥ इति श्रीम
हाभारतेपुराणेविजयमुक्तावली केवि छत्रवि
रचितायांभगादंत्तवधवर्णनं नाम एकत्रंसोध्या
य ॥ ३१ ॥ सुंदरी कछंद ॥ जूझिपर्‌यौभगादंत्तलष्यौ
तब ॥ कोरवसोदलरोवतहैसब ॥ सोचवच्यौजि
यमेंसबसोचत ॥ नैननिमैंअसुवाभहुमोचत १
बंस्हैगुरके नृपपाईन ॥ दीनभएवहुभाषतभाइनि
आपनहैसबकाजलाईक ॥ कौविगरैजिनहो
हुसहायक ॥ २ ॥ आजुभयौतुमअग्रपराजय वै
रनजितिगएसबनिर्भय ॥ आपबिचारकछूअ
बठांनहु ॥ होइविजैमतिसोउरआनहु ॥ ३ ॥ दो
हा ॥ राच्यौचक्राव्यूहगुर सुनिअवनीपतिबोल
दुरगमदीरघदुसहता ॥ जाम्पौंकछूपैरैंन ॥ ४ ॥ द्रो
णउवाच ॥ न्योतिपठायोपंडसुत ॥ आवहिरन
कोआजु ॥ केमुजोकैजाउवन सीफिजायसब
काज ५ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ सुनिगुरवांनिसोसिषमं

विजै०
॥१३५॥

उरञ्आनितबबचियहै॥ तबदूतबुलायोसोच्या
लिञ्आयो॥ अभिमन्युठायोजायकेहैं॥ तबञ्आयुसपा
योजुरतसिधायो॥ सीसनवायोंनृपनहां॥ सबनि
जुहायलैबैठायो॥ बंधबचारोलसततहां॥ ६
॥ सोरठा॥ दीनौइहसंदेसचक्रव्यूहरच्यौत
हां॥ रनिहितचलोहिनरेस॥ केतजिवियहजांउ
बन॥ ७ ॥ राजायुधिष्टिरउ०॥ दोहा॥ न्योतिप
ठायेञ्आयहै॥ कहीजायसंदेस॥ दूतसमदिका
नोंम्हाभूतपतिउरञ्अंदेस॥ ७ ॥ चौपई॥ जेतेभट
हैयादलमांही॥ चक्रव्यूहहीजांनतनांही॥ ञ्अ
र्जुनश्रीहरिसंगसीधायो॥ तीरथतेंनहीसोचली
ञ्आयो॥ ९॥ ताबिनुजुद्धकोनइहकरिहै॥ चक्र
व्यूहपैठिकोलरिहे॥ ञ्अर्जुनविनजान्योंदल
हीनां॥ तातेन्योतोरणकोदीनों॥ १०॥ तीनोंबंधु
निराजाहूमे॥ कहीमंत्रजोराजाकोंसूमें॥ जोया
जुद्धनहिबनीञ्आवे॥ राजपाटकोछतिकोंपावे॥

॥१३

११॥ प्रथम मरहिभीम महि चूरै राजा॥ जो रन जीते मी
में काजा॥ सुनि कें उत्तर भूप हिदै नैं॥ ऐसे सुनीं
नमे रन कीनी॥१२॥ छप्पै॥ सुरे असुर गंधर्व सर्व
तिनके बल गोरें॥ किंन्नर नर अरु जछ सकल
बल दल संघारू॥ वज्रपानि जो वज्र लेहि
तौ चित्र न आनैं॥ जुद्ध करत दिनरैन निन ही हो
कहुं अघानैं॥ बकुसंक अंक नग पन्नगानि
कौ मो सौ सरिबरि कोरे॥ सूनि भूपमो हियाजु
द्ध की कछू न गति जांनि परें॥१३॥ दोहा॥ बु
झैं नृपस हदेव तव॥ जो इह जांन हुजुद्ध॥ जीति
लीये हो जायगो राज पाट सब सुद्ध॥१४॥ सह
देववाक्यं॥ जीतो दान व देव हो॥ सुरे असुरहुं जो।
आइ॥ मेगति चक्र व्यूह की कछू न जानी जाय
१५॥ राजोवाच॥ करो नि कुल संग्राम इह राषी क
टक की लाज॥ नातर भूमि गई सबै रन की नौ व
काज॥१६॥ नकुल वाच॥ छप्पै॥ आज अ

विजै०
॥२३५

भितसंग्रामदेवदानवसौं मंडौं॥ जौरेजुद्धजोग्रा
ई॥ कालदंडुहिवादंडौ॥ ७ सबग्रवनीस
हीजीतिगर्बतिनकेवरगंडौं॥ सकलसत्रु
संघारिबाहुबलसबदलभंजौं॥ सुनिभूपपा
ईतुवग्रायसैंहुंईतनोसंयमहुकरौं॥ इहस
मैमोहिनृपपंडुकी उलटिभूमिउपरधरौ १७
॥दोहा॥ देष्योसुन्योनकाहु चक्रावृहन
रस॥ सोनजुद्धवकुमेंकियोइहजीयमेअंदेस
१८ ॥चौपई॥ राजावकुजियमेंपछितायवों
जीत्योग्रबसंग्रमजाय॥ विनापथ्यवकुभयो
ग्रकाज॥ पहुमिनिसाईद्रोराज॥ १९॥ सुरन
रसैंदलसबभीमहिडारैं॥ ताकुतेंकछूकाजन
सारैं॥ सहदेवग्ररुनकुलविचारि तेउगरा
हियेग्रबहारि॥ २०॥ बैठ्योभूपतिनारएसीस
नहीबोलतकोउग्रवनीस॥ च्यारोवंधवम
नमैसोचैं॥ मनपछितायनयनजलमोचैं २१

सकल करक कैमे बीत्यो त्रास ॥ अंतहपुर सब
परयो उपास ॥ इह सब सो थसु भयसुनैं हि
यंसो चक्र करि मांथ्यो धुन्यो ॥ २२ ॥ पति की सुधि
चित्त मैं धरी ॥ नैननि दै हि थर हरी ॥ रुक्मसा
थ चलि अर्जुन गयो ॥ अक्रूस्यो नहीं कहा ।
सो भयो ॥ २३ ॥ सुत अभिमनु गोद पह्यो मां
ता नैननि आंसु टरयो ॥ परयो प्र उर मै तिहि
बार ॥ चिंता कीनी चौं बिकुमार ॥ २४ ॥ अभि
मन्यूवाच ॥ कौंन हेत तुम मलिन हौ कहि
यौ सो समुझाय ॥ या जग मैं तो नैसुषी ॥ और
न कोऊ आय ॥ २५ ॥ सवैया ॥ जीठ जुधिष्ठिर
भीम बली जसे है ॥ है जगवंदन कृष्ण सो भाई
धीर धनुर्धरि अर्जुन सो पति ॥ जुद्ध तुरैं जगम
हुगम षांई ॥ है बिबिबंधव सहदेव देवर ॥ की
रति है सब भूतलि छाई ॥ मो सम पुत्र हि पा
य कैं माय ॥ कहा कहियौ मुख पै मलिनाई
२६ ॥ दोहा ॥ रुदन करन को या समै कहि

धोकारनकौंन॥ काहूकोनहीत्रासउर सं
पतिसंजुतभौंन॥२७॥सुभद्राउवाच॥ तुवपि
तुरनहितरुस्मसग॥ गयोकसेतंनत्रांन अ
ईसुधीनाकीनही॥ कहौरहतकौंप्रांन २८
भूपजुधिष्ठिरद्दृषनिधांन॥ मोजनकस्यौन
षंडतप्रांन॥ तीनौअनुजरुदनबहुकरैं
बैननहीमुषसैंअनुसरैं॥२९॥ नहीपथ्य
कीअधिकछूनीचकी॥ इहैबातसुतमेरजीय
की॥ चलिअभीमनभूपपैंआयो॥ नायसभा
मैठाडौभयो॥३०॥ विलष्योसबपरिवारवि
लोकौ॥ नैननतैंजलरुकैनरोकौं॥ मांता
बचनसत्यकैंमांन्यौं॥ जूझ्यौनिश्चयअर्जु
नजान्यौं॥३१॥दोहा॥ उलटिचल्यौतबग्रेह
कौं॥ निरषीभीमनवधाए॥ विलष्योदेष्यो
पथ्यसुतलीनौंअंगलगाय॥३२॥अभिम
न्युवाच॥ कौंभूपतिमनमलिनहे॥ अरुउ

चितसबमोंन॥ हरषनकाहू नरलष्यो॥ कहि
यकारनकोंन॥ ३३॥ भीमसेनउवाच॥ छल
कीनोराकद्रोणगुर॥ चक्रा व्यूह बनाय॥ ता
हिनम्मोतोजुद्धकों॥ दीनोइहांपठाई॥ ३४॥ क
हपठईकुरराजनप॥ केरनराचोश्राई॥ केन
जिकें संग्रामथल॥ रहो विपलमेजाई॥ ३५॥ गी
तिका॥ नहीहमयोसमरजांनें॥ श्रवनहून
सुन्यौकऊं॥ देवपुरपातालदेष्यो नहीदे
ष्योसोतहुं॥ श्रोरभूपनताहिजांनतपष्य
कोधोषारह्यो॥ सुनतहीअभिमनुउठिकें
पवनसुतसोंयोंकह्यो॥ ३६॥ अभिमनुवाच॥
इहकाजसबेहुंसारिहुं॥ कहाचित्तमेंसंसो
कियो॥ जायभूपतिनिकटतबही॥ ग्रहहात
बीरोलीयो॥ आजुकोरवकुलसंघारु॥ द्रोण
कर्णहिसंघरों॥ हतोबरद्भुसासनैयासमरकी
जयहोंकरों॥ ३७॥ सवैया॥ काहेकोंसोचक
रोजुइतोइहकाजकितोअबहीसबसारों॥ श्री

विजै०
॥१३८॥

आउ हतौछिनमेंरनमें। सबकौरवकौकु
लकौपिसघारी॥ देषतहीदलद्रौनकौदा
रिसुषादवागनिसौपरजारी। बाजिदुरद्द
गरदकरौं। सबमीडिमहारथवंतनिमारौं
॥३८॥दोहा॥ अद्भुतगतिभूपतिगनील
षिससिसाहसधीर॥ सूरनमनिकेहरि
कलितसीलसिंधुसोबीर॥३९॥राजीवा
च॥नहिगुरद्रिगविद्यापढी॥समरनदे
ष्योनैंन॥ करिसहिसबीटका लीयोजं
नीकछूपरैंन॥४०॥ मोहिग्रचंचबोपत्रसु
नि कोतूदानवदेव॥ गंधर्वकिंनरज छ
त्र कहिसब अपनोभेव॥४१॥अभिमनु
वाक्यं॥छप्पै॥सेवासोईधन्यस्वामिका
रिजमेंसूरो॥ धन्यधन्यसोईपुत्रमातपितु
आयुसपूरौ॥ धन्यधन्यवहदासभंगनहि
सासनकरई॥ धन्यधन्यसोईसूरसमरपग

उलटनिधरई॥ धन्पबोलसत्यकबिछत्र
कहिसुजससकलजगलिज्जिय॥ नंद्दला
लकाजमनलाजधरिसुजनमसफलसब
किज्जिय॥ ५२॥ दोहा॥ नहीभूपसंसोकरौ
सोचनसोवकुचित्त॥ करोविजयभटसब
हनो॥ आजुरावरेहित्त॥ ५३॥ इति श्रीम
हाराजकुमार श्री विजयमुक्तावलीकविछत्र
विरचितेनकआगहरचनोनामद्वितीयोध्या
य॥ ३॥ युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ पठैनोन
गुरुढिगतैंकहु॥ लष्योननैननिज्जुध॥ क्यौंकर
ध्यौतैंभारसुत॥ सोमोसौकहिसुद्ध॥ १॥ श्र
मिमनुवाच॥ सुनिनृपपरबजनमकीकथा
कहौसमझाय॥ मथुरापुरउत्तमअवनिसोभा
कहीनजाय॥ २॥ सुंदरी॥ भारमरउपजेतह
दानव॥ चैमननहीवकुधामुनिमानव॥ होमघ
नेतपजगपनसावत॥ होंननहीव्रतसंजमपा

विष्णु०
॥ १३५ ॥

वत ॥ ३ ॥ मारत विप्रनदे षतकोपल दीर
घदीरघ दानवके गन ॥ कैसौं कुवसुधा
प्रियमाकुल ॥ जातुभई तवजा सपुरीष
ल ॥ ४ ॥ तामुष जात सुनी जगवंदन ॥ भूमि
भयेतवही नदनंदन ॥ मारि अनारि दले
दलदानव ॥ ठांव हि ठाव थपे मनिमानव
५ ॥ सवैया ॥ भूतल भार उतारनि कौं जग
मे अवतार मुरारि धस्यो ॥ मारि बकी वकको
मुषफारि ॥ अघासुर कौ वरप्रान हस्यो ॥ तो
रि लये रद धाइ भसुंडतैं कोपि करी जब आनि
अस्यो ॥ कंसको हंस विध्वंस तहां सब दान
ववंसनिबंस कस्यो ॥ ६ ॥ चौपई ॥ तव श्री
कृष्ण पे जउ रघारी ॥ सकल भूमि विनदान
वकरी ॥ छोटे बडे असुर जंभए ॥ तिवर विक्र
मके सब हये ॥ ७ ॥ मारे सब बहु त्रास दिषाई
सो मांता सब वची पराई ॥ गर्भवति पितु यह
जोगई ॥ बची भागी इह विधि नर्मेइ ॥ ८ ॥ ताके

॥ ३५ ॥

गर्भ जन्ममेमेलयो॥ कछूपानतबमोउरझ
यो॥ तौषेलनजाउ सिसुनकेसंग नानावि
धिसबनाच्यतरंग॥९॥ इकसिसुयोंकहिगा
रीदई॥ सुनतमोहिबहुलज्याभई॥ तबउ
नकहीनग्पातनगोत॥ तोहिहमैंतेरोको
होत॥१०॥ चलितबमातापेंहुंआयौ॥ तब
हीसबविरतांतबतायो॥ कोकुलकौन
पिताकहिमाता॥ कहांकुटंबपितानिज
भ्राता॥११॥ माताबाच॥ पुत्रपिताकीजाग
तिसुनिहो॥ बहुयछितेहोमाथोधुनिहो
कुटंबतीहारौश्रीहरिहन्यौं॥ बालकहु
हतरुननहीगीन्यौ॥१२॥ दोहा॥ कोउउव
र्यौनप्रसुरनहीपुरषनकोउवांम॥ करीआ
पबसिपहुमिसब॥ निर्भयमथुराधाम॥१३॥ ला
जुभईइहबातसुनि॥ क्रोधभयोबहुचित्त
सुनिपितुकीवैसीदिसा॥ कियोजतनताहि

त॥१६॥ धूंमधूंटिकेऔंधमुषनीदभूषस
बसाधि॥ तगंमलसबएकंत्रकरि॥शिवसंल
गीसमाधि॥१५॥दंडक॥नीचोराष्योमुडच
रनकीयउर्धमें॥धूमघूटिघूटितपकीनोंम
हीनाकोछ॥सूषिगईतूचासबआमिषबि
लायगयो॥आनकोसलिलचख्योकेतिक
सषानिछ्वे॥एकचित्तसाधिकेंसमाधिमहा
कष्टसाधि॥कीनोंनविरामकबहूनघटिका
द्वे॥छत्रकहिसिंभुनांथभूतनाथभवनाथ
संकरप्रसन्नभयमोपरदयालह्वै॥१८॥दो०
॥ क्यौप्रसन्नतोपैभयौमांगिमांगिउत्तालजो
ईछातेमनरहे॥सोपुरऊंइहकाल॥१९॥चौ
पई॥तबमेतिनसोंविनऊंसेव॥नमोनमोदे
वनकेदेव॥बिरतिभूमिमोमथुरागांव तीनो
भवनप्रगटतानांम॥२०॥बासुदेवभूतलअब
तस्यौ॥दानवकोकुलतिनसंघस्यौ॥लघुबाल

ककहुरहनन पायो॥ सोहरि तब अवनी पक
हायो॥२१॥ भागी गर्भवती मोमाता॥ दिहरिग
ई जहां निज भ्राता॥ ताके गर्भ भयो तिहि ठौं ध
ह्यो मां लग्रहि दानवनाव॥२२॥ अब सांईमोक
रो उपाउ॥ अपने कुल को पाउं दाव॥ लेंगेन
आयुध होयन घाव॥ देकछुअैसो करो सहा
य॥२३॥ दोहा॥ ताकि वल हरिकौं हतौं कुल
को वदलो लेऊं॥ लहौ विरत बर आपनीं ज।
ननी कौं सुष देऊं॥२४॥ दीनो एक मन्त्र सत।
बधि के शिव परम उदार॥ तब रहा के है समर
सब भाष्यो व्योहार॥२५॥ श्री शिवजी॥ मा
लती कछंद॥ तब रन जे है॥ जयजस पैहे
अरिकुल गंजे॥ बरदल भंजे॥२६॥ तब सन
जानों॥ अरिन परानों॥ बहुबल कीनों॥ करि
बल लीनों॥२७॥ दोहा॥ रहि एप्रेठ मन्त्र समें
ता हिन लखि है कोइ॥ तुव तन कीरहा महा

याहीतै सब होय॥ २६॥ आयो ग्रेहम त्र
मले॥ बीते केतिक काल॥ मथुरा पुर कौं
उठि चलौ जीतन श्री गोपाल॥ २७॥ जब च
लि कछू मारग गयो लये मत्र सासीस॥ वि
प्र रूप मो कों मिले॥ तिन भवन के ईस॥ २८
॥ गीतिका॥ जरा जुत सब देह निर्वल॥ लकु
ट कर मैं दे षियो॥ चलौ आवत कष्ट सौं।
चि चिवाट के मोले षियो॥ दया उपजी मो
हि देषत कही इह विधि हेरि कैं॥ कहौ वि
प्र चल कहां बांनी सुनाई टेरि कैं॥ २९ रद
न टावी अंगुली द्विज कही साठि गआय
कैं॥ सुनत आवेह स इहां कहि कैं वचे
भगि जाय कैं॥ शक्र उचौ कौ कौ सुरदीन
कौ नही वो लिये॥ ता विप्र की सब सुनत
बानी मोहि चित चिंता मई॥ ३०॥ दोहा

मेविनियोंताविप्रसोंकृष्णहिंकहाउराउ
कोवलिसुरदीनत॥सोकहिमासोंभाउ
३१॥[illegible]॥विरतिभूमिमथुरापुरी
तिहअसुरनकोबास॥कृष्णमानिकें
बेरिचित्तकीनेंतिनकोनांस॥३२॥हेप्रा
हितिनकोसदा॥तिनविनकेंगयोही
न॥नहींवच्योजजमानजग॥अबसब
सोआधीन॥३३॥चोपई॥कृष्णसिंघा
रेअसुरअनेक॥भागिबचीतरुनीतबएं
क॥गर्भवतीचलीपितुकेंआइ॥ऐसीवि
वन धिविधिनांभाई॥३४॥ताकेंपुत्रभयोमेंसु
न्यों॥चलितहांताहुचितमेंगुन्यों॥वह
सुतकेंहैवकुवलवांन॥अबसिरापिहैं
मेरोमांन॥३५॥हतीकृष्णहिमथुरापुरले
हे॥धांमग्रांमहमकोंलैदेहैं॥इहसुनिकें

मेरो मन मांन्यौं॥ वह मैं निज प्रोहित कैं जा
विजै० न्यौं॥३६॥ तब मैं सो द्विज निकट बुलायौ
॥५२॥ सब विधि अपनौ भेद बतायौ॥ तू मो हि
त है तो अज मांन॥ रहि मो पास राषि है
मांन॥३७॥ दोहा॥ फूल्यौ द्विज ए वचन
सुनि॥ हर्षवंत अकुलाइ॥ मो सों हित।
भाषि वचन कहियौं तू कित जाइ॥३८
त॥ बमै अपनौ भेद बतायौ कसम हि।
है जित निचलि आयौ॥ तब फिरि विप्र
कहै अकुलाइ॥ तो पारिष कैंजी त्यों
जाय॥३९॥ दोहा॥ बलिन हि कौ उरु
ष्म सो तिन लोक मै कोइ॥ तासौं तौ सौ जु
द्ध मै कैसे सरिबरि होइ॥४०॥ तोहि देषि
धीरज भयौ॥ तान्यौ जीवन आजु॥ अब।
जिन मथुरा जाय तू॥ कै है महा अकाज ॥५२

४१ । तबमैं कहौ मजूसकौ भेद सबै समझाई । दीनौ शंभुकपालकै श्रमनरछककाग्राई ४२ सकल निपातौं अरिचमूं कौं न सकै रनजीति ॥ हारत जांनि मजूसमैं पैठि रहो इह रीति ॥ ४३ ॥ सोरह सहस करी लगी ते सब लहु लगाय ॥ मो हि लषै नही संभु विना दुजो कोउ आइ ॥ ४४ ॥ चित्रपदी ॥ विप्र कहै तब ऐसे तर नजीत हि कैसें ॥ जानत हुं छल कीनों ॥ तौ कछु है इह दीनों ॥ ४५ ॥ सो न कही कछु जाय ॥ तू कहि मोसमझाई ॥ मैं सब वातन वताई ॥ बात सबै द्विज पाई ४६ ॥ दोहा ॥ सीषि लई सब लई ॥ छल करि द्विज वपु मंडि पैठ्यो मांझ मजूस हैं ॥ सकल कपट कौं छांडि ४७ ॥ चौपई ॥ विकट करी उन सबै लगाई जे मे हुती वा हि समुझाई ॥ तामैं मोहिं मूंदि सो गयो ॥ बुद्धि न साई परबस भयो ॥ ४८ ॥ याकौ

बलसब थो सिब भाग्यो ॥ कीनो सो कछू का
विदे० जन लीयो ॥ सब सीर करत तजि मै प्रान
॥१५३॥ फिर तहां प्रगट भयो भगवांन ॥ ४९ ॥ दो
हा ॥ एक कुपी मे मूंदियो श्री हरि मे रो प्रां
न कोनी साई कै रहै ॥ जो राची भगवांन
५० ॥ चौकस कैं तब सो कुपी ॥ दई सुभद्रा हा
थ ॥ बिन हरि मैं बोले न तू भयो बिनयो जदु
नाथ ॥ ५१ ॥ चौपई ॥ पति कै ग्रेह सुभद्रा
आई ॥ तब सो कुपी साथ हि ल्याई ॥ न्हांई
रतिवंती कै नारि ॥ जांनि सुगंध लखी सु उ
घारि ॥ ५२ ॥ सूंगत ताके वकु सुष पायो ॥ ताके
उदर पै ठिक इं आयो ॥ दिन दिन बाढत बि
कट सरीर ॥ बिथा सुभद्र हि धरत न धीर ॥ ५२
दसौं द्वार की रूंधी स्वासा ॥ ताहि गई जीवन
की आसा ॥ सहस भुजा अरि दांनव भयो
सहौ न भार मानु पै गयो ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ दि

नदिनदेहीदुतिदबी॥कमकैरह्योसरीर
देषनआयेसुनिविप्र॥भगनी दैजुबी
र॥५५॥श्रीकृष्ण॥कहांतोहिमनका
मनां॥कहावसैतुवचित्त॥सोमोसौंसमु
झायकहि आनोंतेरैहित्त॥५६॥सुभद्रा
उवाच॥पैरौंरुधिरप्रबाहमें॥इहभावैवि
तमोहि॥नितनितइहविधिकरौ॥अथ
वामरिहौंतोहि॥५७॥तोटक॥भ्रमश्रीह
रिचित्तभयोतबही॥भगनीमुषबैंनसुन्यौं
जबही॥बहुसंभ्रमचित्तहिछाईरह्यो॥क
छुलायनहिमुषबैंनकह्यो॥५८॥अबस्तूर
छिप्योकपूरैनिगई॥तबव्याकुलताभग
नीहिमई॥हरिसोइहबैनविचारिकह्यो
कहिराककथ्थावसिचित्तरह्यो॥५९॥श्री
हरिचक्राबूहकी॥कीनीकथाप्रकास॥छ
मामईसुनिकेकछू॥मिटौकछुतनत्रास
६०॥

विजै॰
॥ १५४ ॥

चौपई ॥ इह विधि कथा तहां सुनि लई सु
नत सुनत आधी निसि गई ॥ देखि तिन हूं का निंद्र
मई ॥ कछू छमा ताके उर भई ॥ ६१ ॥ कथा र
ही इह मो चित आई ॥ हूं का दें तव कथा क
हाई तब ही हरि भाषा पहिचांनी ॥ काहीन
तब सौं फेरि कहानी ॥ ६२ ॥ कुंडलिया ॥ की
नौं संभ्रम चित्त मैं ॥ कृष्ण कमल दल नैंन उ
नर का हू असुर कौ नर की भाषा है न ॥ नर की
भाषा है न उदर मैं हूं तिन जान्यौं ॥ सहसबा
हु कौ सत्रु आपनौं तब पहिचान्यौं ॥ पहिचा
न्यौं तिहि बार सभ्यौ तब जतन न बीनौं ॥ कौ
क विस के वषांनि चित जैतौ भ्रम कीनौं ॥ ६३
॥ दोहा ॥ सहसबाहु कौ कृष्ण तब पुत्र राख्यौ
वनाई ॥ करि कुसलै अभिषेक करि ॥ मंत्र ज
प्यौ अकुलाई ॥ ६४ ॥ तासौं सकल भुजा नसी
वेनुज रही सरीर ॥ तब है प्राग्ज्यौ भूमिपर

भईसुभटहिधीर ॥ ६६ ॥ चक्रव्यूहकीकथा
सुनी सुन्योंनग्रहकोंभाउ ॥ भीमपेजकरिकैरही
तोरैतौचितचाउ ॥ ६७ ॥ जीतिकथासब
मैसुनीसोवरजीत्योजाई ॥ रह्योमुनैंविन
भीमसोतोरिदेईसुनिराई ॥ ६८ ॥ भीम
छपै ॥ भीमसेनकीपेजकरतकौसंक
नकरई ॥ मुनिगनतजतसमाधि ॥ संभुकौ
आसनटरई ॥ भूतलमोमपताललंकप
तिकंपतथरथर ॥ गदालेतकरकोपिअं
कआतंकसकलनर ॥ कोनकपहिकवि
छत्रडरडरिडरिकरिवरपरिहरत ॥ छोभा
होतसुरअसुरकेसुरपवनपन्नकूवहिमर
त ॥ ६९ ॥ दोहा ॥ जीतौंचक्राव्यूहनकौं
नसकैअबराषि ॥ नहिनरेंद्रचिंताक
रौबचनकहेइमिभाषि ॥ ७० ॥ दंडका
दिचदलपारौंरोरिसुभटसंघारुदोरिपा

विज्ञे० रिपोरि गर्बसबसूरनिकौगारिहुं॥ आन
॥२८५॥ हूमैंबोरौंद्रोणरथ्यतै विरथकरौं॥ कर्णहू
विकर्णहींकौं अर्जुरनमारिहु॥ सासन
हूसासनकूं॥ चैंनदहबैंनकौंन भूधरसे
उधरकौं भूतलपछारिहौं॥ बांनहीकी
वायसौं उडायदेहुं सकुनिकौं॥ क्रोध
उरजोधनकेसी सहीसौं सारिहौं॥ ७०॥
॥दोहा॥ कैसुचेतबीरादयो धर्मसुव
ननरनाह पांचौछोहनीसबलदल
उत्साह दीनौकैरउसाथ॥ ७१॥ सहदेवअरु
नकुलसंग॥ चलेद्रुपदनरनाथ॥ चले।
विराटचमूलियें॥ औरघसूकासाथ॥ ७२
भूपनिकौसिरनायकैं॥ चलौनिसान
बजाय॥ येहआयजननीचरनबंदेव
ऊसुषपाय॥ ७३॥ इतिश्रीमहाभारते
॥ अभिमन्युउत्साहवर्णनंत्रिंसशो

आय॥३२॥सुभटउवाच॥देषतमोकह
मनगहवरौ॥धर्मधर्मकुदामेंआवत
हौ॥अपनेकुलकौराष्यौपामैं धर्मध
र्मसुतमैपहिचान्यौं॥२॥दोहा॥सुरका
चौकपुरायकैं॥बेदउचरतविप्र॥चल्यौ
क्रिरमसौंसुभट॥सत्रुहिजीतनछिप्र२
मंगलगायसषिनमिलि॥बाजनविदित
बजाय॥नौछावरिमनिमुक्तकरि॥नीर
जचीरलुटाय॥३॥ वंदिनमिलिबोलेबि
रद॥ रथआरूहेकुमार॥ चल्यौसबलद
लसाजिकै॥कोपिकस्योकरवार॥४॥दो
धक॥कुंजरपुंजनिपुंजनिसोहत॥बैरष
जालमहामनमोहत॥देषतयौंकविता
छविध्याजत॥यौजुतदामिनिबारिदराज
त॥५॥चंचलबाजिकिषेषराषंजन॥पौं
नकुरंगनकीगतिषंजन॥यौसलभागन

विजै०
॥२५६॥

पायकराजत॥ सोभनदीर्घदुंदभीवाजत
रजउडिलोप्योरविरह्यौधरानमछाई॥ क
मठकसमस्योसेसकौ॥ लचिकलचिकसि
रजाई ७ ॥दंडक॥ छातीहोतधरसेसकी
धरधरातकूरमकलमलातभ्रतितलातल
टूट्टिटूट्टिदुमसिलाछूटिछूटिनीरगयेछू
टिपुरथारसकेसरितासकलजल॥ चक्रं
औरचक्रतचपाईससवाइगए॥ अस्थि
वानीसकंपिकंपिउठेहलहल॥ स्रग्अ
वतंसपंडवंसअंसअर्जुनकिसेनचलेहा
लिउठेभूतलकेथलथल॥८॥दोहा॥ चल
तकटकपदुंज्योजहां॥ तेहेविराटकोधांम
द्योसोधइकसहचरी॥ जगीउत्तरावांम
९॥सषीउवाच॥ जीतनचक्रव्यूहकों
कोपिचल्योतवकंथ॥ चल्योवीररसकेरट

कैसे हरषवंत दीसंत ॥ १० ॥ अति आतुर
ए वचन सुनि ॥ उठि उत्तरा बंस ॥ ति [illegible]
प्रीतम प्रानपति सब साहस [illegible] ॥ ११ ॥
चौपई ॥ कीनौं कवरि मोह अधिकाई न
ही करी कछू हम भलाई ॥ अब हो सत्य
बचन इम भाषौं ॥ जातु कुवर कौं हो अब
राषौं ॥ १२ ॥ उपज्यौ मोह कछू इह आंमौं
तब विचार उर मेइ स्त्र्यांमौं ॥ परम निठुर
तात बउपजाई ॥ मोह काटि कैं रचि रुषा
ई ॥ १३ ॥ तब आभी मन्यु लषी त्रिय ऐसी
चंद्रवदन रति कमला जैसी ॥ लछिम सक
ल सुभग आगकनी ॥ दीनी विधी सोभा आ
ति घनी ॥ १४ ॥ दोहा ॥ बरनि कहा लौं कवि
कहै ॥ रूप वहि कुमवाल ॥ निरषि कवर कौ
मन मथ्यौ ॥ मन मथ्य तेहि काल ॥ १५ ॥ चौ० ॥

विजै०
॥१४७

तबउपाई श्री[illegible]कस्यौ ॥ सबतनमथ
मनसिनजल[illegible]स्यौ ॥ पांनमांहसोजलध
रिलयौ ॥ कवरिउत्तराकेकरदयौ ॥ १६ भ
छतवगरिगयौ तनमांही ॥ इहसंजोगकछु
जाम्यौंनांही ॥ कैसंतुष्टजुबीरजलयौ च
लिअभिमन्युअगकुडोगयौ ॥ १७ ॥ निसि
कौकीनौजाईमीलांन ॥ भईनिसातब[illegible]
थयौभांन ॥ सुनीसेजउत्तरा[illegible]भ्र
गीस्वप्नअरिष्टनिहारि ॥ १८ ॥ उत्तरोवा
उवाच ॥ देख्यौस्वप्नअरिष्टमै ॥ यातेंजीव
अकुलाई ॥ जांनौकुसलनकवरकी प्रां
नउड्यौसोजाय ॥ १९ ॥ सवैया ॥ गांनवि
विवाहनकौअभिमन्यु ॥ भयेसपनेकपि
रिछबराती ॥ गावतजंबुकवाघसुगीत
नि ॥ मंडफछावतगीधसगाती ॥ रातेई
भूषनरातेईमालसुपागवनीगहरेरग

गराती॥ पंचसची मिलितल ॰ ठावतया
उरतें धरकी वकुछाती॥ ॰ ॥ दोहा॥ क
ह्यौ विप्रसौं दांनकरि॥ बैठिरहिसा वाल।
बीरजलहि संतुष्टके॥ गर्भधरयोतिहिंका
ल॥ २१॥ चलिपंडु चैयांश्रभिमन्युदलच।
कोव्यूहनिकेत॥ सुद्धिभई कुरराजकों॥ प
ठयौनरसुधिहेत॥ २२॥ इति श्री ॰॥ श्रभि
मन्युपयानवर्णनं नाम चतुर्विंशतिमो
ध्यायः॥ २४॥ दोधक॥ वंदितबैनरनाथ
पठायो॥ नामलसैंविदवंतसहायौं॥ को
सजिकैरनको चढि श्रायौ॥ सोहहिसेन
कितौसंगल्यायो॥ १॥ जायवसिठतहांइ
मदेष्यो॥ घोरघनौघनसोदललेष्यो॥ छ्र
तलोगनकोसजिश्रायो॥ भूमिजुधिष्ठिर
रोषनछायो॥ २॥ केसहदेवकिश्रर्जुनसो
है॥ सूरकहोदलमैंश्रबकोहै॥ जातकहा

॥श्री॥

विजै०

॥१४८॥

कितते चलि आयौ ॥ भेदकछू अबमैन
हीपायौ ३ ॥ सूतउवाच ॥ अर्जुनसुत
अभिमन्यु तवचन्यो निसानवजाई ॥ जी
तहिचक्रव्यूहकों ॥ कोअबसकैबचा
य ४ ॥ चलिवसिठपहुच्यो तहां ॥ पारथ
सुतकेंपास ॥ बैठ्योदेष्योकवरतह ॥ सा
हसजुतसविलास ॥ ५ ॥ देष्यसीसठाड़ोभ
यो ॥ आदरकीयोकुमार ॥ कुसलप्रसन्न
हिवूभिकै ॥ बैठकदईअगार ६ ॥ अभि
मन्युउवाच ॥ कैसो चक्राव्यूहनृप ॥ र
च्यौकहो कि हरीति ॥ सोईयटिकारावकेमें
पेठीलेहुसबजीति ॥ ७ ॥ वसिठउवाच
कोटरचेइकईसगुर ॥ संघटक होनजाइ
पेठिकैनकहनीकरै ॥ बंकदुर्गमझार ८
विकटगरीमारगविकट ॥ मायरसमरगं
भीर ॥ ताकेअमितप्रवाहधसि ॥ कौंनलहि

सकैतीर ॥ ९ ॥ दुरजोधन वलिवंदुसुत लावन
नामकहाय ॥ प्रथमकोट आभारसिर ल
योभुजाबल आय ॥ ९ ॥ कोटदूसरैविकट
मेंविदुरविरकोवास ॥ तीजेंसल्पकहोवली
तीजैकोटनिवास ॥ ११ ॥ कोटचतुर्थमद्रोण
सुतरह्योवलीगलगाजी ॥ सकुनिपांचवेंको
टमें ॥ रह्योवकुदलसाजि ॥ १२ ॥ छटेंसुसमो
सातये ॥ साज्योसवलसुवाहु ॥ अष्टमविस्वा
सैंनतहा ॥ सजैंकवचसंन्नाह ॥ १३ ॥ नवम
विषमभूरिश्रवा दसयेकोसवभार ॥ एकाद
शअरु वादसे ॥ ताहिको विस्तार ॥ १४ ॥ को
टतेरहेद्रोणगुर ॥ सकलसैनकोलाज ॥ चनु
दसगंगेवतहै ॥ राजतबडोसमाज ॥ १५ ॥ हैक
लिंगगढपंदहै ॥ जीनवहु जितेजुध ॥ हसा
सनगढषोडशे ॥ सेनासहितसक्रुध ॥ १६
॥ चौपई ॥ सप्तदशेकृतवर्मारह्यो ॥ ताकोम

वि॰ जै॰
॥१४९॥

ह्मगवैमैंलेथौ ॥ अहादसैलसैं महावाहु न
वकुलमिलासव उत्साहु ॥१७॥ दोहा ॥ कोट
वीसएकरएन्त्रप ॥ ताके वलहि मध्यंत ॥ एक
विंशग्रह अयंद्रथ ॥ साज्यो दुसहदुरंत ॥१८
दुरजोधन सव अनुज जुत ॥ साजि सेन रथ
तुरंग ॥ न्पारोल सैं महीप जहां ॥ सुभट विक
टसवसंग ॥१९॥ इह विधि चक्रा व्यूह की सु
नि अभिमन्यु कुमार ॥ करौ विदा चलि जा
य इह दुरजोधन के वार ॥२०॥ अभिमन्यु
उवाच ॥ सजै नृपति महारथी न सकल स
जै अत्र नत्रांन इह संदेसो देहु तुम ॥ करवर गहे
कृपान ॥२१॥ पहुचौ उत महीप पै ॥ कहीस
कल विधि जाइ ॥ नृपति जुधिष्ठिर की चमूं
तमु पर पहुंची आइ ॥२२॥ साज्यो चक्रा व्यूह
पै ॥ पारथ सुत वलि वंड ॥ नांम वे बलघु अंग।
निय पौरिष परम प्रचंड ॥२३॥ ताकौ साहस ॥४९

मेलष्यो कहत नु वनई वैताम ॥ कहतु लेहु
हो जीति कैं चक्रहू ही जान ॥ २४ ॥ [illegible] उता व
ल कटक के साजै रानाराय ॥ सावधांन सब ।
होय भट गर्जि निसान वजाय ॥ २५ ॥ तोटक ॥
१ अति हारन रे सत वै पठयो ॥ अवना सन सो ध
सु दें न गयो ॥ सुनि ता मुष वैन सबै सजिकैं त
न आंन कैसे वहु था गाजि कैं ॥ २६ ॥ चहु ओर
नि घोर निसान वजै ॥ वहु कुंजर बाजि समू
ह सजै ॥ रथवंत महारथि साजि तहां ॥ लषि
येन हि पैंन प्रवेस जहां ॥ २७ ॥ अभिमनु त्तहां
जब साजि चल्यो ॥ वहु विरन कों हियदे षिह
ल्यो ॥ पहिले ग्रह मध्य प्रवेस कीयो ॥ नवला
षन की सो ई दृष्टि पर्यो ॥ २८ ॥ लषि वालक
सोन करै रन कों ॥ इह सोक भयो अति हिम
न कों ॥ न गहै धनु वांन सु सीं धुनैं ॥ पहलो प स
हली हिय मांहि गुनैं ॥ २९ ॥ [illegible] ॥ दोहा ॥
अति अपराधी मो पिता ॥ पंडसुतन नान हिवो

विजै॰
॥२५०॥

रि ॥ उनन धरी त्रिय मांह इन औगुन किये
करोरि ॥ २९ ॥ [illegible]वरुनमंदिर करयौ नाम
सिरियेजराय ॥ भाजिउबरे दावाग्नि ते श्री
हरि कीयौ सहाय ॥ ३० ॥ पासि कपट बनाय
के ॥ छल के लये हराइ ॥ राजपाट सब छिन
कें ॥ दीने विपन पठाय ॥ ३१ ॥ बैचत लज्या नां
करी ॥ द्रुपदसुता को चीर ॥ करी सहाय उघ
स्यौ नही कितहु तनक सरीर ॥ ३२ ॥ ऐसें का
रि विचार कैं ॥ समरन आप अगपाइ ॥ ज्ञान द
यो सुत पथ्य को ॥ नहि राष्यौ विरमाइ ॥ ३३
गयौ पैठि ग्यह दुसरें ॥ पथ्य पुत्र बल वीर नि
रषत धनुगुन जुत करयौ ॥ विदुर उठ्यौ रनधीर
३४ ॥ निरषत ही अभिमन्यु के ॥ विदुर डूलायौ
सीस ॥ रच्या बालक की करौ ॥ कै क्रपाल जग
दीस ॥ ३५ ॥ आपन कौ षोजु इन ही ॥ धनुष
दियौ भुव डारि ॥ पापी वै है ग्रेह कत ॥ पंडपुत्र
तुम चारि ३६ ॥ पोरिषत जिलरुपात जी ॥ त

जीसकलकुलकांनि॥ बालकरनहिपठ
यकै॥ आपरहेसुषमांनि॥ ३८॥ दीरघ
तनदीरघभुजा॥ दीरघपौरिषपाई॥ कात
रकैबैठेसदन॥ बहुबलवंतकहाई॥ ३९॥ वि
दुरसाथबरज्यौसबै॥ कौउज्जुरैनजुद्ध॥ च
ल्यौतीसरीपौरिकौं पथ्थपुत्रकेसुद्ध॥ पे
ठिगयौगढतीसरैं॥ पथ्थपुत्रतबधाई॥ स
हितसल्यभटसकलमिलि॥ लीनेधनुषच
ढाई ४०॥ सनमुषसमरसरोषकै उरहनी
सक्तिकैक्रुद्ध॥ जुरेबीरविविजुद्ध॥ तबहि
पथ्थसुतसल्यउर॥ हनीसक्तिकैक्रुद्ध॥ ४१
विषमचोटनहिसहिसक्यौ॥ भज्यौबेगीदे।
पीठ॥ पारथ्थसुतकीनीतबै॥ चौथेग्रहतन
दीठि॥ ४२॥ चौपई॥ तहांद्रोणकौसुतबलि
वंड॥ जाकौपौरिषबलसैअषंड॥ तहांअभि
मन्युबेगिदैंगयौ॥ तासौंमहाजुद्धतहांभयौ

विजै०
॥१५९॥

४३ ॥ अग्नि वांन उनली ने लीन ॥ दुरिय
ष्यापुत्रने छिन ॥ बांन बीस सैं उग्र सुतह
यो ॥ ताकैं परम क्रोध उर छयो ॥ ४४ ॥ तब
अभिमनु हयो सतवांन ॥ उनसर कीये
सहस संधान ॥ दोउ समर करत बलिवंड
दोउ वर षतवांन अषंड ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ ए
के विग्राहूहून की ॥ संग्रम करत समांन वै
सैवैई और को पठत रदीजै आंन ॥ ४६ ॥ वर
ही पार थसुत गयो ॥ कोट पांच रौं कोपि स
कुनि रह्यो तहां क्रोध करि ॥ अंग दस्यो पग
रोपि ॥ ४७ ॥ सकुनि उवाच ॥ बांधौ जीवत बाल
कैं ॥ भागि न पावै जांनि ॥ मारिलै कुतिन ।
कौ अबै ॥ जो कोऊ संजै क पात ४८ ॥ छैवो
चक्र दिसि तैं कवर ॥ बांन अनेक चलाई ॥ वी
रकर्म कीने महा ॥ रह्यो व्योम सर छाई ॥ ४९
रन कराल अभिमनु को ॥ सह्यौ न षल पैला ॥५०

ई॥ जितहिदवा गनिंतै उडै अरणसो दलमह
राई॥५०॥ भजे लजे नहीं सकु नितुर॥ सव दल
गयो पराई॥ वहो तव वीर अभिमन्यसों॥ उवरे
हाहा खाई॥५१॥ छठे सात ये आठये नवये को
टम फाई॥ दश एकादश द्वादशे पकुत्यो वी
रहीजाई॥५२॥ सव ही को सर सल्ह सो हत
वर गर्व नवाई॥ गयो तिर है कोट धसि द्रोण
उठ्यो अकुलाई॥५३॥ द्रोणउवाच॥ दोधक॥
वालक तूरणमें कित आयो॥ हौं न सुन्यों
मरनैं कत धायो॥ तो सम संग्रम हौं कत मां
डौं॥ वालक जांनि हियें अब छांडौं॥५४
जांनत हुं अब कोंभ गिजे है॥ कौं करिकें इ
तती छन्नसै है॥ काल वली वरनो कह ल्यायो
वालक भूमि इहां चलि आयो॥५५॥ पारथ
भीम जुधिष्टिर आवे॥ सो कछू नेंक प्रवेश न
हिपावे॥ तू कित पैठ सके अह मांही॥ तो अ

विजै०
॥१५२॥

सगाहनकौंइहमांही॥५६॥दोहा॥सुनत
कवरइहपरजस्यो॥जुकिकैबोल्योबैन॥क
रधनगहिगुरविप्रत्त॥छिनइकजुधजुरैंन
५७॥सवैया॥बालिकमोहिगिनोजिनदे
एसुकैयांनहीबांनसरासनसाजत॥जांनहु
जुशशिवंसकीरीतिनही॥लषिकैंकौऊंज
हहिभाजत॥मोसमजोलगी॥आपजुरैनही
तोलगीहौंइहिमंडलगाजत॥तोलगआ
पनचित्तनआनत॥जोलगीबांवनसीस
विराजत॥५८॥दोहा॥कौंनहमारेबंसमैं
भाग्योदेषिजुमार॥तातैदेएविचारिकैं
करटेकोकरिवार॥५९॥कृपाकरोजोआ
पउर प्रथमहिकरौप्रहार॥रहैनधोषो।
चित्तमेधरियेहाथहथ्यार॥६०॥गीतिका॥
बांनद्रोणतजैनहिइनवचनकोरिषकभा
षिया॥जानिबालिकभेषकरुनाकृदमैव

ङराखियौ॥ कोपिकै अभिमन्यु छंडे कालसे
सरलेखिकैं॥ सहस्रहितीन छिन डारे उरधा।
आवतदेखिकैं॥ ६१॥ दोहा॥ धुरपवांन अ
भिमन्यु लै ध्वजापताका काटि॥ उरेभूत।
लसरनसौं सबदललीनौ पाटि॥ ६२॥ सवैया॥
जेवङ्कालीकृतेजितबारसुते ऊँजुरेनहीजु
द्धश्रनैंसे॥ बांनबंधिसबकेतनयो जिमिरो
षतव्यालबिलैमहपैसें॥ सूरसनध्वभराग्र
घग्रध्वकमह गिरायद्ये सबश्रेसे॥ ज्यों
उनमत्तमतंगसरोवरपैठि बिदारतबारिज
जैसें ६३॥ दोहा॥ हयोद्रोणं वैतछिसरक
छौनसंयमजाइ॥ सलभागनज्यौं श्रोमथ
र रहेबांनतहेछाई॥ ६४॥ सवैया॥ को
पिकोविद्र तेवहुजोटसुकाहूनछेबलिका
खिजमायौ॥ पौंनकेगौंनतैंवाटिऔरदल
नीरदसंघटसोविचरायो॥ भूतलश्रोमद

विजे०
॥१५३॥

शाति दिशा ॥ [illegible] रथके सर पिंजर छा
यो ॥ [illegible] तिस सोकत अंकनि कोर
वझां नत अर्जुन आयो ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ मंड
लीक कीनो धनुष पारथ सुत्त्व लिवंड वे
ध्यो गुरके सरनि सों ॥ जीत्यौ समर अषंड
६६ ॥ समर सह्यो न हि द्रोणगुर रह्यो मह
ह्यियहारि ॥ पैठ्यो अगले कोट मे पारथसु
त भट भारि ॥ ६७ ॥ और सकल थल जीति
कैं पहुंच्यौं कर्णनिकेत ॥ तब ही उठि ठा
डो भयो ॥ सो ईसन कैं हेत ॥ ६८ ॥ कर्ण उ०
जानत हैं सिसु मीच बुलायो ॥ ढीठ भयो
चलि मो ढिग आयो ॥ क्रुद्ध कुतो द्विज द्रो
णपरानो ॥ हों तिन का सम तो कहुं जानों
६९ ॥ जीवत क्यौं न भजे भजि मोपे ॥ होइ
कहा अब मो ढिग तोपे ॥ पारथ कौ सुत
यों तब भाषे ॥ कर्ण बुलाव जु तो कहराषे ७० ॥

नृपयुधिष्टरकीजयकोकुरुनंदनबांधिदिहो
देषततेरे ८

सवैया ॥ बीरअबीरमहाभटभीरसुतीरहि
तीरषरेसबहैरैं ॥ आजुसबैजुवगावेहनौंअ
षपायोहेमेंकरिआपनेंनेरैं ॥ जीवतजायन
सन्मुषआयकें ॥ तोसहमूढकहेंाइहटेरें ७१
॥ दोहा ॥ आपधनुर्धरधीरनुमरहेकहांइक
हांइ ॥ तोवलदाईजांनिहैंजुद्धजीतिजोजाई
७२ दुरजोधनबांधोजियततेरेदेषतआजु
नृपतामहिमंडलकरैजुधिष्टिरमाहाराज ७
३ ॥ सुंदरीछंद ॥ करणमहीपतिरोसकस्योत
ब ॥ उरधमेंसरछाइरहेजब ॥ तेअभिमनु
बलीबलतोरत ॥ सनमुषतेंअंगनेकनमोर
त ॥ ७४ ॥ आहिधनुधरबीरमहावर ॥ व्योमही
छावतहेसरहीसर ॥ अद्भुतजुद्धनहीकहिआ
वहि ॥ कोउपमाकहितातहिबतावहि ॥ ७५ ॥
दोहा ॥ लष्योकरणअभिमन्युकों ॥ जबहिज
यंद्रथजुद्ध ॥ वलसोरोकेपंडसुतत्रिरछोबैठि
सक्रुद्ध ॥ ७६ ॥ चौपई ॥ नृपजुधिष्टिरभीमप

विजै० ॥१५४॥

चास्तो ॥ तापरि [illegible] यनसो अरिमास्तौ ॥ पं
डुमही [illegible] तिके सुतरोके ॥ बैठिरहे ससवाय
ससोके ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ भयौसहाइ ईसवरो
के पंडव च्यारि ॥ रह्यौ जयंद्रथरो पिपग अंग
दकी उनहारि ॥ ७८ ॥ चौपै ॥ चलि अभिमनु
ग्रेहमैं गयौ ॥ पंडवरहे अकेलौ भयौ ॥ भयौ क
ऐसौं जुधकराल ॥ छयौ अकासधरासरजा
ल ॥ ७९ ॥ जब अभिमनुबह्यौ बहु क्रूद्ध रवि
नंदनसहिसक्यौं नजुध ॥ विचरि भज्यौ नही
रोप्यौ पाव ॥ उरपारथसुतभौ अतिचाउ ॥ ८०
सुंदरी ॥ बाननसाथ उडाय दयै भट ॥ फौंनच
लैं जिमिनीरदसंघट ॥ कौरवयौं लषिकैं उर
आनत ॥ आयगयौ रनपारथजानत ॥ ८१
दोहा ॥ पाछै देषपथ्यसुतसाथनपंडव ।
चारि ॥ विलषवदनविषमो कियौ ॥ रह्यौ वि
चारिविचारि ॥ अभीमनुउवाच ॥ गीतिका

श्रा जुज्ञोरण भीम होता ॥ जुद्ध मेरो देषतो ॥ कैप
राजित कर्णभागपो ॥ सकल कौति मलेच्छतो
लषैपोरिष कौंन मेरो ॥ कियो इहथल आय
कैं ॥ जोंनिकें उतपात कौरव कुवर छैको
जाय कै ॥ ८३ ॥ दीपर्ड परयौं पतंगे यो परे भट
धाय कैं ॥ जुरे रन भूरिश्रवा दह बैन दुसासन
बली ॥ जुरे कौरव जुत कलिंग हि सो भिजे रन
अस्थली ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ चहुं दिसि तै अभिम
न्युत बछि किलियो बलिवंड ॥ घेस्यो सुरपति
गिरिन ज्यौं करि करि कोप अषंड ॥ वडैनो को
प अभिमन्यु उर ॥ तब मुकरायेबांन ॥ कटे प
ताका चौरध्वज ॥ कटि गए करन कृपान ॥ ८५
॥ भुजंगप्रयात ॥ चलि भागि चहुं दिशा रा
ईरांने ॥ निषंगी चलैं चर्म वर्मैं पराने ॥ रथी सा
रथी अश्व हस्ती भोगे है ॥ नहीं क्षुद्र मैं बीरको
ऊषडे है ॥ ८६ ॥ पताका ध्वजा काटि कै षंड की

मैं ॥ नहैं अस्त्र काहू नही हाथ लीनैं तहां
को तिकैं वार (?) कौं पुत्र आयो ॥ मनौ दंडधारी
म सारो (?) छायौ ॥ ८८ ॥ तबै पुत्र के पथ के पु
त्रसौं जुद्ध ठान्यौं ॥ नही चित्त मैं नैंक हू त्रास
आन्यौं ॥ कटे बांन ही बांन सौं अंग ता के क
रै बिरद्ध दोऊ औ जुद्धया के ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ रवि
नंदन कौ पुत्र तहै बीरन मनि त्रपके त ॥ पा
र्थ्य पुत्र कौं जो रही जान न भीतरि देत ॥ ९० ॥
अर्द्धचंद्र अभिमन्यु लैहन्यौं हियै बरबीर
मो हितकै भूतल गिरयौ ॥ अतिथर हरयौ
सरीर ॥ ९१ ॥ चौपई ॥ दुरजोधन सुत लछम
न धायौ ॥ पारथ सुत सौं रनकौं आयौं दोऊ
भिरत न मानैं हारि ॥ सकै न कोऊ काहू मारि
९२ ॥ दिसि दिसि तैं जुरि कौरव आय ॥ चहूं
दिसि नतैं सुरमु कराय ॥ मुदगर काहू सक्ति
सम्हारि बरकरि पारथ सुत तन डारि ॥ ९३

मराछि गिरयोधरनिश्रकुलाइ। दुरजोधन सुनतबउठिधाय॥ दोहधिग्याम्रुतछिम नहयो॥ विनाजीवपारथसुतभयो॥२४॥ धा मैंजुधनहिहियेविरचास्यो॥ पसोकवरति हिदुषसंघास्यो॥ सुनतजुधिष्ठिरवकुदुष पायो॥ अतिआतंककटकमेंछायो॥२५
॥दोहा॥ कृष्णपक्षएकादशीमारगमास बषांनि॥ प्रांनतजेतबपष्यसुतकठकर ह्यौमयमांनि॥२६॥ इतिश्री०॥ अभिम नुसंमोहनोनामपैंतीसमोध्यायः॥३५॥
दोहा॥ अर्जुनआयोजीतिरन॥ पछिमदि सिअवगाहि॥ निरषिससोकैकटकसब अतिभयउपजीताहि॥१॥ भुजंगप्रयात॥ ससोकेविलोकेसबैरायरानें॥ महादुष्प संजुक्तजाकोवषानें॥ नशावेनुनीनाकहूं अंदिगाजें॥ वृथासोनहीवेदविद्यानसाजें॥२॥

विजे०

॥१५६॥

मसालैं न दीसै नहीं दीपदेषि॥ सबै सूर आतंक
सौं फि... लेषि॥ तबै पथ्थ जीयमै महात्रासपा
यो॥ तहां अर्जुन श्रीकृस्नजूको सुनायो ३॥ अ
र्जुन उवाच॥ दोहा॥ विलष्यौ देष्यौ कटक स
ब॥ अरि विलष्यौ सब साथ॥ जान तहीं उमगौ
इहा धर्मपुत्र नरनाथ॥४॥ कैरनजु गयो भीम
अब॥ सब विधि भयो अकाज॥ पुरषारथ।
सब बरगयौ गयो हाथतैं राज॥५॥ नृपति जु
धिष्टिर पैं गये॥ देष्यौ सब परवार॥ पगा बंदे क
रजोरि कैं॥ अरु बूझ्यौ ब्योहार ६॥ अर्जुन
उ०॥ देषत सबही कुसल सौं॥ कुसल सक
ल अवनीस॥ कौंन हेत विलषे सबै सो मो
सौं कहि ईस॥ ७॥ लाज महा उरनृपति कैं
कह्यौ कछून हि जाई॥ हरये न मबोलो
तबै विलष विदन अकुलाइ॥ ८॥ राजो
वाच॥ कह्यौ कहा कहु तन बनैं॥ भई अ

नेसीबात ॥ जुधिपस्यौ अभिमनुरन दुष
न जरत सब गात ॥९॥ कपट जुद्ध गुरु द्रोण रचि
चक्राव्यूह बनाई ॥ ता हित हम कैं पथ्थ सु
नि न्यौ तौ दियौ पठाई ॥१०॥ सो रन हम जान्यौ
नहीं ॥ रहे चक्र तन नरनाथ ॥ साहस कैं अभि
मनु तब ॥ बीरा लीनौ हाथ ॥११॥ पैठ्यं कट
कोट मैं ॥ भीम आदि दे साथ ॥ द्रोण कर्ण कौ दे
षि कैं ॥ धीरज रह्यौ न हाथ ॥१२॥ नकुल सह
देव भीम कौं ॥ रह्यौ जयद्रथ रोकि ॥ भयो सहा
ई ईस बर रह्यौ विलोकि विलोकि ॥१३॥ कव
र कर्ण सो जुद्ध करि फिरि गी स्यौ मुरझाई ॥ लछि
मन कौ पितु मदा जई परयो सु मारयौ आई ॥१४
हाहा करि सुनि कैं गिरयो तब ही पारथ बी
र बीतैं एक महूर्त्त ॥ सु धि मैं भयो सरीर ॥ श्री
कृष्ण उवाच ॥ सहे वान कौ द्रोण के ॥ कौ करि अ
गायौ जुद्ध ॥ सुष पायौ सुत कौं न कौ ॥ कर्ण भ

योनबकूक॥२५॥रोकिरह्यौमगजयंद्रथभी
मनपायोजांनि॥जिपटश्रकेलौपुत्रतबतिहि
थलछंडेप्रांन॥२७॥चौपई॥भीमसेनजोपा
वैजांनि॥कोजुमनपावैसुनिदांन॥कह्योजय
द्रथकोइहभयो॥तातैमैइ अबइहपनलयो
॥२८॥आजुबैरसुतकौहौंमारौ॥अथवतह्योस
जयंद्रथमारौं॥जोपोरिषहौंइतौनसाजौ॥तो
मांतापितुपंडहिलाजौ॥२९॥सवैया॥मात
पिताहिलस्याऊंमहाअरुतीरथव्रतसबैध
र्महारौं॥दोषविनांतरुनाहितिजेतिनकिग
तिपाइनिरैपगधारौं॥विप्रनकोअपमांनकि
यौ॥पतिसोत्रियविचिविछोहहिपारौं॥राते
कपातकमोहिलगैपुनिजोनहिआजुजयं
द्रथमारौं हेमहरैद्विजदोषकरैं॥अतिगर्भ
मैरंगरमांननसावै॥मित्रकोद्रोहलहैपरवि
त्तसुचित्तकुकर्मनिकेमगलावै॥झंडीयेमा

षिजौआवहिभाषिनि॥ काजसदाअपस्वा
रथभावै॥ जौनवधौंवरआजजयंद्रथ॥ ए
ातिकपातिकमोसिरआवै॥ २१ ॥ दोहा ॥ क
रिपैजहुहठिपथ्यइहवकुडुपकरिरनधीर॥ ज
वजांन्योविसमौकरत॥ चरितरच्यौजदुबीर
२२॥ मायाव पुअभिमनुतव॥ अर्जुनकौंद
रसाय॥ सपनौंसाचौजांनिचित॥ संभ्रमरह्यौ
भुलाय॥ २३॥ शिवपुरदेष्यौपुत्रतव॥ सपनें
वलतसारि॥ चिंतयोसाइतमैंनही॥ रह्योप
च्छ्यमनमारि॥ २४॥ रुदनकरयौसुतइंद्रकैंआ
सुचलेअपार॥ परेपुत्रकीपीठपर॥ चित्रैंकथौ
तिहिवार॥ २५॥ अभिमन्युउवाच॥ सोरठा॥
कौंनपिताकोमाय॥ नसुरषरोवैकहा॥ सबज
गआवैजाय॥ कर्मपासिवंधनवध्यौ॥ २६॥ कौ
मांताकौसुतकौनकहैकोकाकौपिता॥ वरधतें
जगधूनकौतिकसौदिनदोयकौ॥ २७॥ दोहा

विजै०
॥२५८॥

भग्यो सो कत्तब्य पथ्य को ॥ सुनत पुत्र के बै
न ॥ तबै लिष्य चरित्र के ॥ उघरि गये फिरि
नैंन ॥ २८ ॥ नराज ॥ छंद ॥ कह्यो चरित्र रु
क्म सों सु पथ्य आप देषियो ॥ रह्यो भलाय
चित्त मे कछू विषाद ना कियो ॥ उठ्यो सरव
मे गाजि के बढ्यो सरोष चाय सों ॥ कह्यो नि
षंग को पिकै कराल काल भाई सो ॥ २९ ॥ तो
टक ॥ कुरराज सुनी इह बात तहीं प्रगट्यो
गुर सों सब भेद जहीं ॥ कछु आपन आजु
विचार करौ ॥ इह मो विनती हिय मो हि धरौ
३० ॥ दिन राक जयं द्रथ राषि अबे ॥ मम इज्ज
हि तो मन काज सबे ॥ जत आजु धनंजय को
टरिहै ॥ नर है अगनी वत सो मरिहै ॥ ३१ ॥ कु
रराज कह्यो इह मां निज अबे ॥ सुत पंडु अ
नाथ विचारि सबे ॥ तब हीन्रप सो गुरु द्रो
ण कहे ॥ बरया कहु राष हु को नल है ॥ ३२

राम

दोहा ॥ द्रोण चार रजत बरचौ संकट व्यूह बनाइ ॥ भेदभाव जाको कछू ॥ कहूं न जानें जाइ ॥ ३३ ॥ आगे सूची अग्र सम ॥ रच्यौ विकट अति व्यूह ॥ आसपास हाथी रथी ॥ राषे सूर समूह ॥ ३४ ॥ जम हू कों न प्रवेश जहां ॥ दुर्गम दुसह सवारि ॥ नर किंन्नर नहि लहि सकें रहे सुरे सौ हारि ॥ ३५ ॥ भाग्यो चाहत जयद्रथ पौन न हि पावत जांनि ॥ राष्यो संकट व्यूह में तजौ अंध वत भांन ॥ ३६ ॥ चौपई ॥ राष्यो व्यूह मांह सो लाइ ॥ जम हु पै सोल स्यो न जाई ॥ आसापास गज्जं रथ की पांति ॥ दुर्गम दुसह रच्यो वक्र भांति ॥ ३७ ॥ रक्षक द्रोण चमूपति बीर ॥ अतुल पराक्रम साहस धीर ॥ गाज्यो पथ्थ धनुष ले बांन ॥ सारथ की नौं न व भगवांन ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ बाजे मारु जुध्ध के ॥ अति गति तत्त वल निसांन ॥ भेरि संष वहु धुनि भई ॥ करव रगहे क

पांन ॥३९॥ प्रथम तुक गुरु द्रोण सौं बाजी अ
सिवारमार ॥ न हि प्रवेश अर्जुन लहे करत
अमित संघार ॥४०॥ मारयौ परैन पथ्थ पैं द्रो
ण पुत्र बलिवंड ॥ सरसमूह नभ छाइत है सं
यम कीयो अषंड ॥४१॥ गीतिका ॥ पथ्थ के
रथ के तुरंगनि छिन्न तिल तिल कें छए ॥ दे
सकै नहि अय कौ पग परम विकल कै गये
चाहि मुष श्रीकृष्ण बोले बीर इह सुनि ली
जिये ॥ अंबु पीवै बाजि जैसें ॥ सो कछू विधि
किजिये ॥४२॥ बांन छाई अकास अर्जुन
ये ह सौ तन बक रलीयौ ॥ मारि सर सौं गंग का
ढी नीर अश्वनि कौं दयौ ॥४३ फेरि कै श्रीक
ष्ण जू रथ पै चढे अकुलाई कें ॥४३॥ दोहा
बरकरिकें छिन द्रोण कौं सर हति चित्त भ्र
माई ॥ गयौ पथ्थ दे दाहिनौ ॥ दलमें पकुंच्यौं
जाई ॥४४॥ भयौ समर नृप करण सौं तिन हं

४ पंडु को सुत जौन सो न वही गैरौ रन जा थकै

रए अघवाई ॥ पेलिगयो चलि ग्राम नीजं
घकौ संघ वजाई ॥ ५५ ॥ जो जमती नगयो व
ली बर हाकटकमकार ॥ तहांजुरे रए सकुनि
सों ॥ संग्रम भयो अपार ॥ ५६ ॥ भयो कुलाह
ल को कहे ॥ सुन्यो कछू नहीं जाइ ॥ सुन्यौ सं
घनही पथ्थ कौ धर्म पुत्र विलषाय ॥ ५७ ॥
॥ चोपई ॥ पंचजन्य सद्द सुनि राई ॥ मनही
मन विलष्यो अकुलाई ॥ सात्यक जादो प
ठयो जहां ॥ संग्रम करत पथ्थ हो जहां ॥ ५८
रथ्थ चढ्यो नृप वांनजिन लयो ॥ प्रथम द्रोण
गुर आडो भयो ॥ कह्यो वादि जादोर न आ
यो ॥ मैही तुव गुर पथ्थ पढायो ॥ ५९ ॥ घरि
का च्यारिक संग्रम भयो ॥ सूतलयो
मसरनि सों छयो ॥ दिसि वि जै कं दिशा नहि
सुझै नैंन ॥ सात्यक कहे विप्र सों वैन ॥ ६० ॥
॥ सात्यिक उवाच ॥ दोहा ॥ जाह विप्र अ

बभागिकैं ॥ समर करत वे काज ॥ जौन भजा
जैत हि हैं ॥ तौ गुर पछ्य हि लाज ॥ ५१ ॥ विष
म वांन उर लगत ही द्रोण गिर्यो अकुलाइ ॥
जहां हुतो भूरिश्रवा ॥ ताहि गयउ ज्यौ जाइ ॥
५२ ॥ कौप्यौ लषि भूरिश्रवा ॥ करलीनो दस
बांन ॥ सात्यक कैं तिन उर हये ॥ सुरपति ब
ज्र समांन ॥ ५३ ॥ बज्र तजु द्व तिन सो भयो को
कवि कहै सुनाइ ॥ तब सात्यिक मोहित
भयो ॥ धरनि गिर्यो अकुलाइ ॥ ५४ ॥ गी
तिका ॥ धाईकैं भूरिश्रवा कर के सजा दौं
के गहे ॥ क्रोध सौं झकझोरि कैं बक्रु वचन
इह विधि सौं कहे ॥ आजु ही सठ ताहि मा
रौं तोहि ॥ ० ॥ कौंन बचावहि ॥ आइकैं
बर तोहि राजन बौं ताहि कौंन बुलाव
ही ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ ताके बध हित पार्ग ले
भुजा उठाई बीर ॥ निरषि पछ्य बज्र को

धकैं बांनहन्योरनधीर ॥ ५८ ॥ दोधक ॥ दष्षि
नवाकुसुघरमउड़ानी ॥ छूटियरासखरेदलजां
नी ॥ छूटिगयोतबजादवऐसें ॥ केहरितेम
गछूटतजैसें ॥ ५७ ॥ जांदवकोपिक्रपानसम्हा
ल्यौ ॥ कौरवनैंवरहीअरिमार्यौ ॥ काटितबे
सिरभूतलडार्यो ॥ ज्यौंद्विजजगपनमेंपसुपा
र्यौ ॥ ५८ ॥ नागस्वरूपनीछंद ॥ नधीरसैंन
मेंरही ॥ नजाइजोकछूकही ॥ ससोकवंत
कैगये नरेससुष्पसोंछये ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ पकु
र्यौअर्जुनपासतब ॥ सात्यकजादौजायह
न्यौंवलीभूरिश्रवाकुरनंदनपछितांइ ॥ ६० ॥
॥ सोरठा ॥ कह्योजुधिष्टिरराइ ॥ भीमसेनसैं
बोलिकै ॥ सुद्धिल्यावतहांजाइ ॥ जहांपरथ्य
संग्रमरच्यो ॥ ६१ ॥ तोटक ॥ करबांनसरासन
भीमलयो ॥ तवपारथकीसुधिलैनगयौ ॥ त
हमारगमेद्विजद्रोणलह्यो ॥ तिनिदेषतहि

विजै ॥१६१

इमबैनकह्यौ ॥६१॥ फिरिजाहुघरनहि
वाटलैहै ॥ममवांननहीछीनएकसहै॥
मुनिकैकुवरनिजइक्कीयो ॥धरमूतलबा
ननिछायपलयो ॥६३॥ तबहीरनभीमहिकौ
धमयौ ॥गुरकौरथबीरउडायदयौ ॥पटकौ
धरनीतलमेललवही ॥ नरह्योभगिविप्रग
यौतवही ॥६४॥ दोहा ॥ रथकेवाजीभीमत
बछिनहीमैंसंघारि ॥वाग्रोक्रोधधमोडस।
कुवरतवहीडारिमारि ॥६५॥ कोपेदुष्टरदुष्ट
बलसुवलसबाहुप्रचंड ॥सोमसुलंग।
असेषरन ॥जिमजितवलिवंड ॥६६॥ भीम
सेनरनकोपिकै ॥इकईकसरसवमारि।
औररथीरणधीररण ॥डारिकितसंघारि
६७ चलोप्ररणग्रोणको ॥कोरनकहै
बषानि ॥भागिचलेवजसुरगन ॥गुरेनछि
नमरिग्रांनि ॥६८॥ दंडकछंद ॥ ग्रोनि।

तसलीलमां सकीनेंकेंकरेसेसीसस्पोम
स्पोमके संतसिवार अरेसेलषिये॥ व्याल
हेविसालसुंडदंडनेकेतालअहांग्राहसे
करिनेकेकलेवरविसषियें॥ कछपतिरा
तचमेचक्रवाकचकोरख चामरपताका
गनमीनअवरेषिये॥ दूंनटतक्रोधकेंस
मरसिंधुसाचोरच्यो॥ फूलनमरालवगमा
लगिद्धदेषिये॥६८॥ दोहा॥ भूतलडारि
महारथी॥ आगेपक्रुच्योजाइ॥ निरषिस
रासनवांनलें॥ करणउठ्योअकुलाइ॥७०
करणउवाच॥ जीतकेतेसमरमें॥ भीम
कहांअबजाइ॥ जीवनदुर्लभजांनिवसप
ऱ्योहमारेआइ॥७१॥ भीमकरणवेंउरह
ये॥ सरसवांनकरिक्रुद्ध॥ धनुषकाटिरचिवि
रतव द्रुदेहमोसरसुद्ध॥७२॥ चोपई॥
फेरिक्रोधरविनंदनकीनो॥ कवचभीम

विजै० ॥१६२॥

कोतव कादियो ॥ आयो भीम उवारैं श्रंग

कीनो आय तहां रिमरंग ॥ ७३ ॥ रथ आरू

ढ पवन सुत भयो ॥ रवि सुत के उर मुष्टिका

ह्यो ॥ भूतल गिरि श्रो अकुलाई मेल्यो

धनुष भीम सिर आय ॥ ७४ ॥ बार वार रि

स सौं झकमोस्यो ॥ श्रैंच्यौं कछ्यो वारक

रोरि ॥ भीमसेन को पोरिष गयो ॥ करन स

कत अति विकल भयो ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ क

रि सुधि कौंता वचन की दियो भीम मुक ।

ई विलषी वदन चलि पथ्थ पैं ॥ तब ह्

पदी ज्यो जाई ॥ ७६ ॥ देष्यो पोरिष पथ्थ को

तब कुरनंदन राई ॥ सोरह सहस मतंग गत

हैं दीने श्रयपठाई ॥ ७७ ॥ भुजंगप्रयात

चले मत्त मातंग जे अग्र आरा ॥ मनो भूप्य

ली मे महा मेघ छाये ॥ तहां पंडु के पुत्र चिं

ता न माये ॥ स सोक के हिये मे महा त्रास लाए ॥ ७८

हियसोचसोचैगयोनिभमेरो ॥ रह्यौआस
रोहैव्यासिंधुतेरो ॥ स[illegible]प होदीनहीक
सहाई ॥ परैभीरभारीसबैसोनसाई ॥ ७९ ॥ दो
हा ॥ कह्यौभीमसौंपथ्थ्यतव ॥ अबबलिवंत
सम्हारि ॥ कादरलौंअतिसिथलतन कहा
रह्यौहियहारि ॥ ८० ॥ योसुनिगाज्योसिंघज्यों
सुकिगएसवअंग ॥ आकंपेमातंग ॥ विचरि
चलेअगजूथलो ॥ सुकिगएसवअंग ॥ ८१
उग्रोभीमवलिवंडतव ॥ कह्यौनपौरिषजाइ
एकबारदससहसगज ॥ उरधदियेचलाय
८२ ॥ सवैया ॥ एकमहारथवंतरथीएक रा
कहतेवरबीरनिषंगी ॥ तेऊजुरेनहीआवध
लैजेहतेबरविक्रमसत्रकेसंगी ॥ मत्तमतं
गतजेनभकौंविरच्यौरनभीमसदारनरंगी
पौंनकेचक्रमेंजाइपरे ॥ सवकैरहेअंकत्र
संककेसंगी ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ जेतिकगजउर
धतजे ॥ फिरिभुवगिरेनआई ॥ सहसपांच

विजै०
॥१६५॥

गजहसरे उरधरदय चलाई ॥९४॥ लंकयो
रिपरत्तगिरि कक्ष कंदर निमांझ ॥ सहसकम
लगदाहिनें आंनीनीयरीसांझ ॥९५॥ दुजो
धनके अनुजसबनी सहतेवलवीर ॥ पेरत
रथ जल जंतसे ॥ श्रोनित सलितगंभीर ॥९६॥
हय हस्तीरथ मं जिकें दीनो दल विचराई
निकट जयंद्रथ पथ्थ तव ॥ पहोंच्यो वरही
लाय ॥९७॥ सूछिम निरष्यो श्वोसतिन बा
रबार अकुलाय ॥ उत्त हि जयद्रथ निसिच
हे ॥ निरखि निरखि रखिजाई ॥९८॥ दोधक ॥
हे अनकों मन सो हत ऐसो ॥ हे तरुनी चकई
मनजेसो ॥ रेनिच हे वे श्वास हिचाहे योंति
नके मनमें मनसाहे ॥९८॥ ताकत भानजय
द्रथ देष्यो ॥ पथ्थ तवे निजकाजविसेष्यो ॥ गं
डलिवांन धनुद्ध लीनो ॥ तछिन हि अरिके
सिरादीनौं ॥९०॥ दोहा ॥ उछ्रो वांनकैसंग
सिर कोकविकहे वनाई ॥ पर्यो तासु पितु अं

॥६६

जुली॥ निरषिगिरयो अकुलाइ॥ ९२॥ चौपई
जहीसीस अंजुलि गयो॥ निरषतसोतकव
सिभयो॥ कौरवदलमैं अतिभयभारी॥ परेऔ
धमुषनर अरुनारी॥ ९३॥ हाहाकुरनंदन
अनुसरैं॥ कोऊकहूंधीरनहीधरैं॥ भूरीपे
जयद्रथ की भई॥ हरिअर्जुनसंषधुनि ठई
९४॥ इति श्रीमहाभारते०॥ जयद्रथवधव
र्णनं अर्जुनविजयनामछतीसमोध्याय॥
३६॥ दोहा॥ सूर्योजांनिजयद्रथे॥ दुरजोध
नकै कृष्ण॥ तुरतहीरथउपस्थ्यौ॥ चल्यो
जुधकौंसुद्ध॥ १॥ सुंदरी॥ सरछिप्योनमरैरनि
भईतब॥ गाजिमहारथवंतउठेसब देष
सुकहिक्रोधवढ्यौअति॥ ब्योमगयोवकुसर
नकौंहति॥ २॥ रैनिभईनतहांकछूसूझत
आपनोनांमलेलैभटजुझत॥ जुद्धकभयोक
विकोनवषानहि॥ द्वैदलमैकोईहारनमानहि

विजै०
॥१६५॥

३॥दोहा॥ तजनतघरूका ऊर्द्धतें॥ गिरवरसि
परअपार॥ सरतरफरसासत्किसों करतअ
मित संघार॥४॥चौपई॥ भयौअधेरौनाकछू
सूरै॥ थलथलकौरवकौ दलजूमै॥ नारदमु
निमसालदरसावै॥ दलसंघरतमहामनुभा
वै॥५॥ अर्द्धरैनिलेीवीतिमार॥ द्वैछौहनीदल
कियौसंघार॥ दलकोनासजां निकुरराई क
ह्यौकरणसोतबअकुलाई॥६॥राजाडुरयो
धनवाकां॥दोहा॥ कैंच्यरिष्टवैओ मतैंब
रषतगिरितरुजाल॥ प्रलयकरतसवदलह
न्यो कीनोकरमकराल॥७॥ आंनिसत्किछु
पच्छहितितासोयाहिसंघारि॥ ह्वउतरनकी
धारमेंइहदलबीरउवारि॥८॥सत्किप्रहार
कियोकरणजां निकळंककोनांस॥ गिरयौ
ऊर्द्धतेंबीरधरभयोसकलदलत्रास॥९॥ व

॥६

नृपात सोधरपस्यौ ॥ गिरिसेसुभटगिराय ९
न्यौं सूं दिड़कछोहनी ॥ दलसबकबंधपराई १०
नूझिघरूकाधरपस्यो ॥ पंडपुनहुलभाय ॥ रूव
नकस्योतहहसिउठे ॥ श्रीहरिबहुसुखपाई ११
समाधांनकरियोकही ॥ पथ्थलियोहैश्राज
गईसहथीकरनकी ॥ अबसीग्योसवकाल
१२ ॥ भयोथोसतवश्रोदसी ॥ जबबीत्योइकलां
म ॥ उठेश्रोद्रोणतहांगाजिके ॥ कियोश्रमितसं
ग्राम ॥ १३ ॥ चौपई ॥ पंडवसैनचल्योश्रकुलाई
काहूपासनरोक्योजाई ॥ नृपतिविराटतिसस
रहन्यो ॥ इनकरिक्रोधसरासनलयो ॥ १४ ॥ तिन
बांनगुरकेउतिनमारे ॥ काटिपताकाश्ररुध्व
जडारे रथवाजीमतउरमैंतिनहयो ॥ लागतछिन
महुलिकेगयो ॥ १५ ॥ दोहा ॥ वहोरिसम्हासौ
द्रोणगुर मारयकरसोलताट ॥ वासलयोहरि

विजै०
॥१६५॥

लोकतव॥ अजैभूपविराट॥२६॥ जबहीधुकि
धरनीपर्यौ करवरगहैक्रपांन॥ रोक्यौद्रुपदन
रेसगुर रहैनआगेजांन॥२७॥ सहदेवधायोन
कुलपथ्य जुधिष्ठिरआप॥ जगमंडलनवखंड
मै जाकौअमितप्रताप॥२८॥ तोटक॥ चक्रं
औरनितेगुरघेरलियौ॥ तबदेषतहीखुसरो
समयौ॥ सबकेउरमैबज्रवांनहनें॥ सुरफाईअ
रकविकौंनगिनें॥२९॥ अर्जुनउ०॥ जगवंद
नदैसिषमोहिअबै॥ रनजीतकह्योवरआज
सबै॥ तुमहीविपदासबठावहरी॥ मनकीब
अभ्रनपेजकरी॥३०॥ सवैया॥ त्रिभुवनईस
जगदिससौंकरनिजोरिनाईनाईसीसपथ्य
बंदनामहाकरी॥ काटिकाटिकोवकय
नष्टकियेदुषसबै॥ संकटसबैकबनिप्या
पदासबैहरि॥ भारीभारीभीरभांनीजहांभ

यजोंनि॥ तहांतहां शिवश्रीयेज कहंनहरि

राकआसराकेविस्वास॥ राकबलसदाराकेसे

भरोसोछत्रराबरोघरीघरी॥ २१॥ श्रीकृष्ण

नराज॥ तजेआपांनवांनद्रोणपुत्रजोमारयो

सुनें॥ कोटिधौंकरालसोकदुष्यहोहिसाठ

नें॥ सरोसभीमसेनिआजुहाथजोगदाधरे

तुरंतद्रोणपुत्रनांमकोमतंगसंघरै॥ २२॥ दो

हा॥ नामअस्वथामाकुरद॥ हनेंभीमकरिको

ह॥ द्रोणहोईविमलसुनत॥ बढेहियेबरुछो

ह॥ २३॥ वैनजुधिष्टिरन्रपकेहे॥ तबहिवि

प्रपसाई॥ तजेसकलआयुधसुनत अति

विह्वलहैजाई॥ २४॥ द्रुपदपुत्रधष्टदिवनत

बहीकाटेसीस॥ इहडपावकरिजीतिहो बो

ले त्रिभुवनईस॥ २५॥ दुरदअस्वथामाहन्योभी

मसेननिहिवार॥ हन्योद्रोण॰तवपुत्रमे अव

कतगहे हथ्यार ॥ २६ ॥ द्रोणन हीरनकौ तजे
विजै० ॥ २६६ बैन सुनैं नय लाइ ॥ तौ मानो मन वचन जो क
है जुधिष्टिर राइ ॥ २७ ॥ तबै यचार्यौ धर्मसुत क
हि गुरतजे कपांन ॥ बंधु नि हित बोले तबै भूप
ति बुद्धि निधांन ॥ २८ ॥ समर अश्वथामा हन्यो
भीमसेन सुनि विप्र ॥ नरनाही कुंजर हत्यो क
ही नृपति इह छिप्र ॥ २९ ॥ तोटक ॥ इह वैंन सु
न्यौं गुरु द्रोण जही ॥ ब्याकुलकै गिरयौ भ्र
मितही ॥ समझावत कोरव सोन सुनैं ब्याकु
लकै द्विजसीस धुनैं ॥ ३० ॥ सोरठा ॥ जब गु
रत जे हथ्यार धृष्टद्युम्न विलोकिकैं ॥ सिरका
ट्यौ तिहिवार ॥ धर्मपुत्रकी जय करी ॥ ३१ ॥ दोध
क ॥ दुरजोधनके दिल दुचिताई ॥ मो पहि छत्र
का ही नहीं जाई ॥ बद्धिय थकी सुधिकी गति थ
कि ॥ आसथ्यकी मनमैं रूपताकी ॥ ३२ ॥ दोहा
॥ ६

धर्मपुत्र जय रन भई॥ गहिरे बजे निसान क
ह्यौ चमूंपति करण तब दे दुर्जोधन मांन ३७
इति श्री महा०॥ द्रोणगुरुपर्वणो नाम ३७॥
इति द्रोणपर्व॥ अथ करणपर्व
दोहा॥ दलपति कीनों करन्न दुर्जोधन अग्र
मैं सयन॥ जगजन सब दुष हरन खट दृस्सन
को कल्पतरु॥१॥ चढ्यो करन रनधीर रन कु
रली ने धनु बांन॥ सुर नर गन मैं तासु की पट
तर नांही आंन॥२॥ सल्य कियो रथ सारथी
पारथ जीतन काज॥ कृतवर्मा लिन छिन बले
लै संग सकुनि समाज॥३॥ दुस्सासन रथ कमग
करन संग सुष पाइ॥ अथ जय सेना चली बाग
रजि निसांन बजाइ॥४॥ अर्जुन अर्जुन कहत
भट आए रन गल गाजि॥ बांधि लेहु बरसा
यही जान न पावै भाजि॥५॥ कसे कवच सं ना

॥श्री॥
वि०
॥२६७॥

हतनकी बांनसरासनहाथ॥वीरदुसा
सनआदिदै॥सबधाराइकसाथ॥६॥भीम
देषिदूसासनैं॥परमक्रोधसोंधाई॥धरिकैं
पटकौंथरनिपैं॥दैग्रीवांपरपाई॥७॥भीम
सेनउवाच॥सवैया॥है कोउदलमैसम
रथ हमसतकोवरआयछुडावे॥रेकु
रुनंदनरे रविनंदन॥सोकरिजो
[illegible]॥तुममैंबनिआवे॥रानेंघनैंरन
[illegible]॥वतदेषतसुषकरोसबजोमन
भावैत॥कालकुतैउवरैंभजीजीवत।
जीवतसोभजिमोपैंनजावै॥८॥दोहा॥
हैदलमेंसमरथजोयाकौंलेहुछुडाय॥पा
छेकरिहौवलगना॥देषतरानैंराइ॥९॥
संसुधुनिहरितवकारी॥ततछिनहि
यकलाई॥वचनभीमकौपथनहीसुनैं

जुधिष्ठिरराई ॥१०॥ कौरवदलकछुनाकस्यो
लीनीभुजाउषारि ॥ केहरिज्यौंमृगकौउदरसै
उरडास्योफारि ॥११॥ सवैया ॥ ज्यौंरघुनाथह
न्योंरनरावन ॥ जंभुकिधौंसुरराजप्रहास्यो ॥ रा
घवबीरबध्योलवनासुतर ॥ तीछनंवानसमस
लसंघास्यौ ॥ केत्रिपुरारिहन्योंबरराछस ॥ ए
कहिबांनउंमस्थलफाड्यो ॥ ऐसेहिभीमदु
सासनमारिसबैमनकोतिनरोसनिकास्यो
१२ ॥ कोपिकैंभीमबलीबरसोंसुदुसासनदै
दलबीचसंघास्यो ॥ केहरिज्यौंम्रगदौरिदल्यौ
सुरराजकिधौंभवपर्वतपास्यौ ॥ ज्यौंहनुमंत
बलीबरसौंमहिरावनकौंभुजमूलउषास्यो
ज्यौंनरस्यंघसकुचमरोहिरनाकुसकोनषा
सौंउरफाह्यौ ॥१३॥ दोहा ॥ मनभायोकरिफा
रिउररुधिरअंजुलीप्यारि ॥ अचैभीमप्रफुलि

विजै०
॥१६८

लभयो॥ रनकौरोसनिकारि॥१४॥ औररुधि
रभरिअंजुलीलैकरिपहुंच्यौधांम॥जाईन्हाई
द्रोपदीसबपूरेमनकाम॥१५॥ सोरठा॥ जस।
हैजीवनमूरि॥इहिपुरअरुउहिपुरसुषी॥तेस
बकेहैधूरि॥दुजदोषीअरुअपजसी॥१६
व्यालवसैजिहियेह॥परदारारतिजेपुरुष नि
श्चैजानैंराह॥मत्सुमांससंसौनही॥१७॥छेप
रतरुनीचीर॥सबजगमेंअपजसलयौ॥मस्यौ
दुसासनबीर॥देषतसकलमहारथी॥१८॥चौ
पई॥द्रुपदसुताहिरुधिरअन्हवाई॥रनमंड
लसौपहोच्यौआई॥नकुलसकुनिसौंरनभौ
घनौं॥जुरेअसुरअरुसुरपतिमनौं॥१९॥बान
निमारिसकुनिविचरायो॥उरफार्‌योवरभू
मिगिरायो॥जरुजतसकुनिकुलाहलभयो॥हा
हासबदसकलदलठयो॥२०॥दोहा॥भयो

भ द्रुपदनरकरनसों ॥ अतिगतिकरिसंग्रा
म ॥ जूझेभटद्वैसैनके ॥ बरनिसकेकोनाम
॥ २१ ॥ करनद्रुपदनरनाहकें ॥ उरमारेदसबां
न ॥ कोंनकहेतिनिधरनिधुकि ॥ ततछिनघा
इप्रांन ॥ २२ ॥ सवेया ॥ धीरसजैबीरसवेव्या ॥
कुलसरीरकेहैं ॥ संग्रमगंभीरबीरकरनसो
महारथी ॥ सूरकहलानें ॥ दहलानेंदलदी
रघजेहाथीहहलानेसंकजायकोंनपैंक
थी ॥ जत्रतत्रसत्रदीहदुरघटविकटभट ॥ का
टिकाटिकीनेकालदंडलोककेपथी ॥ कहूं
डेरेअस्वकहूपायककपताकारथध्वजकहूं
डेरथकहूंमोहगिरेसारथी ॥ २३ ॥ दोहा ॥ क
रनपराक्रमकेवडोंनहीसुरीकोजाइ ॥ क
टकत्रासउरजांनिकें ॥ रुष्योपथ्थरनआय
॥ इतिश्रीमहा० ॥ द्रूमासनसकुनिनाडु
पदवधनोनाम ३८ ॥ ॥ तोटक ॥ रविमेदनप

विजे॰
॥१६९॥ षथजुरेरनमैं ॥ बकु क्रोधउक्तं जनके मनमैं
अति संभ्रमको कविकौंनकहै ॥ सरजालन
कोतहांपौनबहै ॥ १ ॥ धरउेरथबांनन छाइ
लयो ॥ छपिसूरत हांतमछाइगयो ॥ अतिअ
द्भुतविक्रमकौंनकहै ॥ सुरषेलपितांकह
भूलिरहै ॥ २ ॥ दोहा ॥ बांनचले दुहुं बीर
के जोजनएक प्रमांन ॥ वैसेवेई जुद्धको प
टतरनाही आंन ॥ ३ ॥ अस्त्रसस्त्रसोंपरस
पर राचतदोउबीर ॥ जुरिजुरिकोकमुरतिन
हि ॥ दोऊरनरनधीर ॥ ४ ॥ आयो बासरती स
रो ॥ कौहूं रनउसैरैन ॥ सरअमरनियोकर्म
कहूं सुन्योनदेष्योनेन ॥ ५ ॥ कवछाड्योक
वसरलयो ॥ सोनपरैकछुजांनि ॥ मंडलीक
कीनोधनुष ॥ धकैनकौहूंपांनि ॥ ६ ॥ रथो
करनकेतूनमैं ॥ बानछुगयोमाल ॥ रथो

धनुषवलिखंडसो॥छाडिदयौउत्ताल॥७॥
दोधक॥ आवतसोकहिश्रीहरिदेष्यो॥पा
रथकालहियेमहिलेष्यो॥दावकियोतब
हीरथनींचैं॥ सषिसवचौलहिसूछिमबी
चैं॥८॥ काटिकिरिठहिलैगयोसोई॥सैंनस
मूहत्रसेसबकोई॥ फेरिसोमालसरोषत
धायो॥कर्नेनिकेततबैचलिआयो॥९॥स
वावाच॥दोहा॥ निजअरिमेरौपष्यमुनि
कर्णसुबुधिनिधांन॥ हनौंसत्रुजोमोहि।
तोकरिकैंछंडैबांन॥१०॥ करणउ॰॥ होस
मरपष्यपष्यहिहतो॥ चाहैनहीसहाय
कह्यौनमान्योंसरपको॥वहकरियकौपोउ
पंई॥११॥ चौपई॥ कटतमुकटपारथसी
रीसभयो॥धुरपवांनरथजोजितकस्यो॥वल
करिरविनंदनसिरहयो॥टोपाकाटिपारसो

विजै०
॥१७८॥

भयो॥१२॥ दोहा रोषवंत बलबीर करत जु
द्धन ही श्रमत सरीर॥ तजत न रन सिर छूटे के
स॥ दोउ घोर असुर केसे स॥१३॥ गीतिका
सल्यसों नृप करन भाष्यो॥ क्यों न रथ बरबा
हई॥ सुनत सारथि रोस कीनों॥ हृमिलन बचे
रनि भई॥ गिले रथके चक्र तिनरथ थक हँ
चलि ना सक्यो॥ बारबार असे षड ध्रम कि
यो सो बरकें थक्यो॥१४॥ छंद पय रुव जन्मा
दीनों विप्र बहु दुष पाय कें॥ गिले रथके चक्र
धरती रह्यो संभ्रम छाई कें॥ कवच कुंडल
इंद्र लीनें॥ बांन कुंती ले गई॥ भई बैर निमेद
नी चित करणको चिंता भई॥१५॥ करणवाक्य
षत्रीधर्म विचारि उर॥ छिन्न येक समर नि
वारि॥ सुनो पथ्थ जो लौ रथ्थे भव तै ले हु नि
कारि॥१६॥ सवैया॥ श्रीकृष्णवाक्यं सुना॥

कौ सुतवहायदयौ ॥ जलभोजनमांहह
लाहलडास्यौ ॥ हरीसुरभीजवभूपविराट
की ॥ आयतहांवहुसाकरोयास्यौ ॥ करीन
कछुमरजादकीवातजवैसुतधर्मकौःदेस
निकास्यौ द्रोपदीकौचलचीरगह्यौ ॥ तवपा
पकिधौतुमधर्मविचास्यौ ॥ १९ ॥ दोहा ॥ करै
निहैरीक्योजियौ ॥ तातेकीजैंजूह ॥ जौपाव
कमैग्रनपस्यौ ॥ भयौकरणयोजुद्ध ॥ २० ॥ को
पिसरासनकरलयौ ॥ चलेकरनकेवांन ॥ ह
नतपथ्थमोहौमहाभूतलपस्यौ निदांन ।
२१ ॥ बरकरिकाटौंकंधदेभुवनैंरथसुविला
स ॥ बहोरिवृषिसरकीकरी ॥ छायेसवआ ।
कास ॥ २२ ॥ दोधक ॥ चेततही उठिपारथ
धायौ ॥ करनलख्यौनियरोजवआयौ सार ।
थिसौंविनियौंजवऐसैं ॥ हांकिरथैरनजौ

तहं जैसें ॥ २१ ॥ फेरि धरा रथ चक्र गल्यो हे सो
धरे ठेलित हो नठल्यो है ॥ बारही बार महाफक
रा स्यो भूमि हली अहि को सिर मो सो ॥ २२ ॥ पारथ
क्रोधकस्यो वक्र धाहि ॥ बां नछयो रिपु कौं उरमां
ही ॥ फूराय स्यो रविनंदन ऐसो ॥ वज्रहन्यो सुर
वैगिरि जैसो ॥ २३ ॥ चामर छंद : ॥ हायहायजंत्र
तंत्र कैरही जहांतहां ॥ देवलोक भूमिलोक क
रै सोर थीकहां ॥ सेन ताविना भयो अनेस षभांति
दीनसौं ॥ अंधपुत्र भौमहाविसेष दुष्पलीन सो
॥ २४ ॥ दोहा ॥ भागि चले सब सूरगनि ॥ करन पस्यो
रन देषि ॥ दुरजोधन तब आपणी महसु गी एणी सु
विसेषि ॥ २५ ॥ अहंकार जुत तव कस्यो ॥ दलपा
ति सल्य नृपगार ॥ पाई रजाई सुबेगिही ॥ कोपिक
स्यो करिबार ॥ २६ ॥ लो पिगयो दिनकर तहां क
रनपस्यो रनदेषि ॥ रुदन करत गंधर्व सर्व ॥ सुर सो

केसुविसेषि ॥ २७ ॥ नैंन हीन अंबुज्ज वदन ज्यों
त्रियविनस्यं घार ॥ त्यों ही कोरवदीनदल ॥ को
कहियं मन हारि ॥ २८ ॥ सवैया ॥ चंदविनारज
नीरजनीपति रैंनि विना दुति मंद लगै नैं सो
निर विना सर नैंन विना नर धांम धनी विन दे
षियेजे सो नीर विना मुकता हलसें ॥ अरु दी
प विना रजनी तम ज्यैसो ॥ ज्यों ही सिंगार विना
जुवती नृप करन विना दल लागत तैसो २९
॥ दोहा ॥ पत्योदेषि रनकरनकों ॥ विप्ररूप ह
रि आय ॥ दीरघ दुरवल दीन ह्वै कह्यौ निकट
यो जाय ॥ ३० ॥ दोधक ॥ दारिद हो वहु भांति
सतायो ॥ जाचन तोहि इहां चलि आयो कर
ण सुनौं जगमे वड भागी ॥ ता कहि चित्त भयो
अनुरागी ॥ ३१ ॥ करणवाच ॥ विप्रन हित कं
चन गयो ॥ सुनियें विप्र सुजांन निज त्रिय रत

विसे०
॥ १७२ ॥

जोवनगयो ॥ स्वामिकाजगरामांन ॥ ३३ ॥ आदि
अंतजाकोनही ॥ सबजगव्यापक आई ॥ भईस
कलमनकामनां तिनकोदरसनपाई ॥ ३४ ॥ श्लो
क ॥ कृपायुक्तो तदाकृष्णयत्र कर्णोरणेहि
ता जीवकारणसहस्त्रेद्यु नरुपेननमस्कामा
श्चैवत्रआगता: ॥ विप्रोहं करणराजेंद्र दारि
द्रंवकुआपितं ॥ ३७ ॥ करणउवाच ॥ पाषान
गहनेविप्रा ॥ दंतभंजयंतेमम ॥ सवाभारसुब
र्णेश्च जथात्वंरनउच्यति ॥ ३८ ॥ श्रीकृष्णवा
क्यं ॥ साधुसाधुमहाबाहो ॥ सर्वसास्त्रविसा
रद ॥ दातस्त्वंचकर्णेश्च बरयंतेप्रयत्नत ॥ ३९
करणउवाच ॥ विप्रार्थेचधना दीणं स्वदा
रागतयोबनं ॥ स्वामिकार्येहतोप्राण ॥ अं
तकालजनार्द्दन ॥ ४० ॥ दोहा ॥ करनपत्यो
दिनतीसरे ॥ जबबीतेदेजांम ॥ समरभूमि

उद्दिम भयो सिल्य कि यो संग्राम ५९ ॥ इ
ति श्री महाभारते करण विजय मुक्तावली कविछत्र विरचितायां करण बीरस
मोहनो नाम गुनतालीस मोध्याय: ३९
करणपरब समाप्तं ॥ अथ सल्यपरब दोहा ॥
सल्य सूर रथ आरुहे ॥ करलीनो धनुवांन
जीत्यौ चाहत पंडसुत साजत समर विधांन १
द्रोण करण भीषम हते ॥ रनजित बार अनंत
जीत्यौ चाहत सल्य रण ॥ आसा वज्रु वलवंत
२ तोटक ॥ अर्जुन कौ रथ वांन नछायो
सैन धनी वर कै विचरायो ॥ भूरि उदि उछि अं
बर लाय्यौ ॥ सल्य जहांज म कोपन कोय्यो ३
दल मैं नही सूझत कोउ ॥ सन मुष जुद्ध जुरे
भट दोउ ॥ सूर घनै कार पौरिष जूझत ॥ का कु
नही कोउ बातन बूझत ॥ ४ ॥ दोहा ॥ गुरासि

धुकोपुत्रतब॥ दुरासिंधुतिहिनांम॥ सहित
आपनेसेनसैं॥ जूझीपरयौसंग्राम॥५॥ दुरासिं
धुजूझ्योलख्यौ॥ नकुलपरजस्यौबीर॥ हन्यौसु
सर्माक्रोधकरि॥ जूझिपरयौरनधीर॥६॥ चौ
पई॥ जुधिष्ठिरनृपकोप्यौआप॥ जाकौजग
मैवडोप्रताप॥ असुरहिरंबआपकह्यौ॥ वि
नाजीवभूतलपरिगायौ॥७॥ एकघरीदिनल
गिरनकरयौ॥ भूपजुधिष्ठिरसौसंघरयौ॥ दोरयौ
पौंनसुतबलिवंड॥ कीनौंतीनसंग्रामअखंड
॥८॥ छपै॥ सुरहनैंरनधीरहनैंरथवंतबीर
कहूहन गजो [illegible] गिर करिकै [illegible] चरन कर
बर॥ कहूंरथीकहूंअश्वगिर॥ कहुंछत्रचव
रधर॥ कहूंगिरधुजदंडकहूंथरहरपायकन
र॥ बीसकवरकौरवतहां॥ भीमसेनजुटिसंघा
रि॥ काटिदियौवनकदलीज्यौंसुथलथलभा
टदीसतपरे॥९॥ दोहा॥ सबकौरवनीस्यान

वै ॥ हनेभीमवलिवंड ॥ दुरजोधनएकेरह्यो
जोसंग्रामअषंड ॥ १० ॥ सहदेवअोरसलसों
संग्रमभयोअपार ॥ कोरवनेविविपरसपर क
रतअमितसंघार ॥ ११ ॥ चौपई ॥ सहदेवकर
असिवरलयो ॥ सल्पसारथितवतिनहयो
तोरेरथआरुहतुरंग ॥ कीनोघावसल्पके
अंग ॥ १२ ॥ मारयोसीसदुटिधरपरयो दुयोध
नरथथरथरहयो ॥ भगेसेसहआयुधडारि
चलेकितेभटहियराहारि ॥ १३ ॥ दोहा ॥ कुरन
दनतिहिथलरह्यो ॥ निपटअकेलोआप ॥ हु
तीचमूंचतुरंगसंग ॥ जाकोअमितप्रताप ॥ १४
॥ छप्पै ॥ छपनजोजनछत्रछांहजाकीथरंम
डहि ॥ दुगमदुसहदुरंतअदंडनिवलकरिदंडहि
वंधुकुटंबअसेषसकलकिंकरचहुवोरहि
सवजाअमितप्रतापतापत्रसत्रनिछितिम

विजै॰ ॥१२४॥

हि॥ वकुछत्रचौगजबाजिरथदलबारदीर्घ
पिछियो॥ साईभूमिभूपकुररजरलनिपट
अकेलोदेखियो॥२५॥सोरठा॥ होनिहाईसो
होयनहीमिटाईनामिटे॥ ताते जगसबकोई
संसोचित्तनआंनियो॥२६॥ जोराचैकरतार
साईसोईह्वैरहै॥ इहहैबातसबसारमुरखिजो
संसोकरे २७॥इतिश्रीमहाभारतेपुराणेवि
जयमुकतावलीकविछत्रविरचितासमो
सल्यवधोनामचालीसमोध्याय॥४०॥चौपई॥
राजपाटअकेलोभयो॥ मंत्रजपनजलभीतरि
गयो॥जपनआरिघटिकाजोपावै॥तोआपनो
सबसैनजीवावै॥१॥ इहसुधिपाएपंडवधाए
जलमैभूपकुतीततहांआये॥ कहैकहांकुरिकु
रपतिगयो॥सोनहीहमहिसामकुंभयो॥२॥भी
मसेनउवाच॥ तोलगीकेतिकभूपतिआए

नामनहीकछूजानतगनारा॥ याथलजुळी
परेसबतेई॥ छत्रियजेवलवंतहुतेई॥३॥
तोउरहेइतनोडरपैठो॥ तोदुरिकैजलभीत
रिबैठो॥ छत्रियधर्मविचारिहियेमें॥ सोच
कहाअबआपकियेमें॥४॥ जोभजिबीर
पतालहिजाय॥ तोनवचैअबमोपहिभाई
भूमियतालसंघारहुतोई॥ सप्तमहीपतिपंड
कीमोहि॥५॥ दोहा॥ हनैबीरनमानवे
तूउबरयोहैभागि॥ जोलगीतोहिहनोनही
नवेनतामसआगि॥६॥ चौपई॥ पंडसुत
नमेंतोहिजुभावे॥ सोईतोसोरनकोंआवेजा
ईआयुधतूकरिधरिहै॥ ताहीसोंतोसोंसोल
रिहै॥७॥ अबजोछत्रीयधर्मनिगहिहै॥ सब
जगमेउपहासहसहिहै॥ सुनतबैनमृपतिया
रिजस्यो॥ ज्योंघ्रतमांझकूतासनपस्यो॥ रोषवं

तकेहरि सोक टौ॥ सेसदेखिभौमहीउख
रौ॥ ...पालसमसुष्टिकामाख्यौ॥ कौतिकदे
षतवंधववारौ॥९॥ नेमस्वरूपनी॥ सरो
षकेदुयोजुरे॥ नभांतिभांतितमुरे॥ असिषजु
द्धसाजहीं॥ नरोसछ्राडिभाजहीं॥१०॥ दोहा
गिस्यौबारदसभीमधुकि॥ मोहिमोहिवलिं
ड॥ सप्तवारभूपतिगिस्यौ॥ करिसंग्राम अषं
ड॥११॥ कोऊंबीरकरैंनहीं भूपतिगिरैप्रहा
र॥ भिरतअमितगतिकोकहै॥ तारनकौवि
स्तार॥१२॥ राजादुर्योधनवाच॥ सुंदरी॥
टीठभयौकितनतूरनठानत॥ मोहिनतूअप
नेउरआंनत॥ बालकमारि कितौवलबोल
त॥ कैइहविक्रमफूलतडोलत॥ जीवतकौ
उबैरैअबमोपहि॥ जुद्धकरावनिआवहि
तोपहि॥ बंधवतेरेतोहिसराहत॥ भांतिनभां

तिनतोमुषचाहत ‖ १४ ‖ उरिगदाभगिना
यनकौंग्रब ‖ जीवतछाडहुतो हिइहांत
ब ‖ हमहिहारिकोउनाहीमांनत ‖ भांति।
अनेकनजुद्धवठांनत ‖ ४१५ ‖ दोहा ‖ हि
यहार्यो तवपवनसुत ‖ विलषेवंधवच्यारि
फेरिसम्हार्यो देहतिन ‖ जबझुकिकह्यौ
मुरारि ‖ १६ ‖ भीमसेन० ‖ दोहा ‖ सकलदे
वनरदेवके ‖ जोपाछेदुरिजाय ‖ तऊनछा
डौंनोहिहौं ‖ कोरिककरैउपाइ ‖ १७ ‖ सैंनद
ईश्रीकृष्णतब ‖ भीमहिचितवतजांनि ‖ त
बरिसाईकेउठिचले डोकिजंघसौंपानि ‖ १
८ ‖ चामरछंद ‖ सैंनजांनिभीमसैंनजंघ।
मेगदाहनी ‖ मोहीमोहीभूमिमैंगिर्योसु
भूमिकोधनी ‖ बगादेमहीपधर्मपुत्रपासआ
इयो ‖ देषिदेषिसोथलीअसेषडुष्पछाइयो ‖ १९ ‖

विजे०

॥१७६॥

॥राजोवाच॥ छप्पै॥ जामुजभीषमद्रोण
करणभगदंतसुसरमा॥ दूसासनदे आदिवं
धसव अद्भुतकर्मा॥ देसदेसकेभूपयोधासि
नीसीसंकामानत॥ दुरजोधनपापरसिआ
पनौजीवजीवावत॥ निसिद्यौसछत्रछाया।
चलेतेजअमितदिसिपेषियो॥ रनभूमिभूमि
भूपतिगिर्‍यौ॥ सोकोऊसाथनदिषियो॥२०
॥दोहा॥ सेतछत्रकविछत्रकहितमोजु
धिष्टिरसीस॥ बहुतविस्रेकहकोमुषचा
हौअवनीस॥२१॥ राजायुधिष्टिरउवाच॥
चौपई॥ इनौसबलदलसो कितगयो॥ भूप
तिविनवेवकुटुंब छयो॥ रथीअतिरथी
सूरअपार॥ कितगयोसाहनसबपरिवा
र॥२२॥ जिनजिनकरिमेरोदललष्यो॥ छि
तिपरिसत्रुनकोऊदिष्यो॥ आडरधारथर

जगाथरहस्यौ ॥ सोइभूपअकेलोपरयौ ३३
जाकौं छिति सब जोरैं हाथ ॥ सो भुव परयौ
न कोउ साथ ॥ इह विधि धर्मपुत्रदुष पाए
भीम आदि सब बंधव आए ॥ ३४ ॥ भीमसे
नउवाच ॥ दोहा ॥ कलदुष कीजै भूप अब
छत्रीय धर्म विचारि ॥ पाई पाई तुव आय
सैं ॥ डारयौ कटक संघारि ॥ ३५ ॥ हम चुके स
वानही ॥ आयुस मान्यौ सीस ॥ गुन औगुन
यौ बनि गयो ॥ तुव आग्या अवनीस ३६ चि
त करयौ फिरि चलन कौ ॥ जुधिष्टिर भुवराइ
पहुंचे तहां वलिभद्र तब ॥ भूपति कें ढिग आ
य ॥ ३७ ॥ गीतिका ॥ देषिकै दुरजोधन परयौ
भुव अंग घाव विलोकियो ॥ जानि तुछ अधर्म
कौ बहु चित्तमांह संसो कियो ॥ हे गदा के जु
द्ध कौ इह धर्म चित्त विचारतौ ॥ अधतन कदि

विजै०
॥२७१॥

के तरैसोई स्वत्रहु नहीं मारयो ॥२८॥ व्योम
भूमि पताल भी महि ॥ होनहीं अवलंडिहौं
आजुही वर आपनै हठि ॥ सर्व गर्व निषंडि
हौं ॥ वडवानल सौं उछोकरि क्रोध वडु द
षपाइकै ॥ अति रोषवंत विलोकि श्रीहरि
योकह्यौ ढिग आयकै ॥२९॥ श्रीकृष्णउ
वाच ॥ द्रोपदी जब सभा आंनी ॥ कर्म कर्क
सन्नृप कियो ॥ जंघ तोरौं मारिकैं इह नेम भी
मत हालयौ ॥ ताहि तहसा सन संघार्यो आ
पनौ पन पारियो ॥ हतिस त्रुव रही जीवकौ
ईन सर्व रोस निकारियो ॥३०॥ दोहा ॥ समझा
यो ये वचन कहि ॥ मुनि बलिभद्र सुजान ॥ कु
रनंदन अपराधकी ॥ सुधि करि करि पछी
तात ॥३१॥ करी विदा बलिभद्रकी ॥ तब को
रोस निकारि ॥ वंधो पांचौं संग ले निज थल ॥७१

चलेमुरारि॥ एकछोहनीदलवच्यौ ध
मेसुवनकेनाथ॥ रथचढि च्यारुंवंधजु
त॥ चलेतबैनरनाथ॥३३॥ रैनिभएरमखे
ध्रुमन निसि सलो सुषवीर॥ द्रुपदसुता
कैपंचसुतसुतेअमेतसरीर॥३४॥ इति
श्रीमहाभारतेपुराणेविजयमुक्तावि
लीकविछत्रविरचितायांगदाजुद्धरा
जादुरजोधनसमोहनराजाजुधिष्टिरबि
जयवर्णननामईकतालीसमोध्याय॥४१॥
दोहा॥ सवसूतोजान्योंकटक॥ नंदघोष
रथपाई॥ हरिगएलेहरूमतव॥ पंडपुत्र
सुषपाई॥१॥ उतरेरथतेंअनुजजुत जब
हीभुवभरतार॥ धसतहुअरथतेंतबे उ
ठीअगानीकीझार॥२॥ नंदघोषजरिभस्म
भौं॥ कहोनकोतिकजाइ॥ हहलषिके

विजै० ॥२७८॥

पांचौअनुज॥ अतिहीयरहेमुलाई॥३॥
॥श्रीकृस्नउवाच॥ दोहा॥ भीषमगुरुअ
रुकर्णके॥ सरनदियोरथजारि॥ याकोअ
बपरभावसुनि॥ प्रगटैभेदमुरारि॥४॥ चौ०॥
जबलगीरथउपरहौंरह्यौ॥ तौलगीसोबां
ननिनहिंदह्यौ॥ जबहौंधसिभुवउपरआ
यौ॥ नंदघोषतिनिसरनिजरायौ॥५॥ हरि
चरित्रतिनअैसौदेष्यौ॥ वरन्यौजाईनअ
द्भुतलेष्यौ॥ दुरयोधनतहांरनमैंपस्यौ॥ द्रो
णपुत्रतिहिथलपगाधस्यौ॥६॥ अश्वस्या

॥२७८

मोबाच ॥ दोधक ॥ आइसुदेकुरनंद
नमोकों ॥ दुष्टहनोवकुंदेसुषतीकोंपै
जकरीइहभांतिमनेसा ॥ ● प पयात
धिष्टिरकोंनगनेसों ॥ ७ ॥ सेन ॥ रवोसा
ईआजुसंघारु ॥ वंधवपांचतुरहिमा
रों ॥ जीवतमोहिपरेसुषसोवे ॥ आजुस
वैजमकोमुषजोवे ॥ ८ ॥ चामर ॥ पंचवं
धुमारिपंचसीसआजुल्यायहो ॥ तबेम
हीपतोहिमुषआयकेदीषायहों ॥ बगि
दैकह्योनरेसजीवमेकृपालकै ॥ गाज्ञी
कैचल्योवलीसुरोषचित्तमांझकै ॥ ९ ॥ कुं
डलीया ॥ बैरपित्ताकोआजुही लेहुदल
संघारि ॥ औरहनेंबरपंडसुत ॥ थस्टदिव
नकोंमारि ॥ थस्टदिवनकोमारिसकल
मनभायोकरिहों ॥ द्रुतरुनिसिसुवात

विजै० ॥१७९॥

चित्रमें एकन धरिहौं ॥ धरिहौं संकन अं
कहू ते उरसं सो जाको ॥ सोई करिहौं काज
मिलाऊं वैरि पिताको ॥१०॥ चलि सो पटहूं।
मोदल ॥ निकसे एण पुत्र जुत क्रुद्ध ॥ पुरुष ए
क आंड़ो भयो ॥ तासौं कीनी जुद्ध ॥११॥ कस्यो
अश्वत्थामा महा द्वै घटिका संग्राम ॥ बहुसं
तुष्ट ॥ कह्यो सुनर तव कीनों विश्राम ॥१२॥
चौपई ॥ तब तिन पुरुष दया दीन करी ॥ मां
गि मांगि इह विधि अनुसरी ॥ जोई वर तेरे
मनभावै ॥ मागत ही सो मोपै पावै ॥१३॥ अ
श्वत्थामा उवाच ॥ चौपई ॥ बीर अ विर
सबै अरि मारों ॥ पंडसुत निजुत भट संघा
रों ॥ इह मया करि कैं बर दीजै ॥ परम अनु
ग्रह मोकौं कीजै ॥१४॥ तब मस्तक करि दी
नौं जादांन ॥ गयो कटक मही गहे क्रपान ॥१७

सुतौ कवरसीषंडी देषी ॥ भारथ भयो सो
रन भय लेष्यो ॥ २५ ॥ दोहा ॥ प्रथम प्रहा
र्यौ सो कवर धृष्टदिवन कों जाइ ॥ बाम
चरन ल लाहन्यौं ॥ सो वत तबीर जगाइ ॥ २६ ॥
अश्वथैरे निलों सब कटक ॥ ठांव ठांव संघारि
एक छो हनी जो हुती ॥ चल्यो सकल भुव
डारि ॥ २६ ॥ पंचाली के सुतन के ॥ सीस का
टि ले हाथि ॥ तब पहों को तिहि ठांउ जहै
दुरजोधन नरनाथ ॥ २८ ॥ अश्वथ्यामो वा
च ॥ धर्मपुत्र को आदि दे ॥ सिर ले आयो
काटि ॥ दुरजोधन उर सुष भयो ॥ ताके उर
ते डाटि ॥ २० ॥ तोटक ॥ सुष दुष्प समान
भयो जब ही नरनायक ॥ प्रांन तजे तब ही
चली भूप जुधिष्ठिर ग्रेहगये ॥ लषि कें दल
ते भय भीत भए ॥ २५ ॥ राजोवाच ॥ सुत द्रोण

विजै०
॥१८० द्रुहकर्मकियो॥ सिसुमारिकहा अपरा
धलयो॥ वक्रदुष्पधनंजयचित्रलथस्यो॥ अ
पनेउरमैवहुक्रोधभरयो॥ भजिकैसोआ
रिजायकहां॥ अवहीहनिहौपुनिवेगित
हां॥२२॥ जुकिकैतवहीरथ्थऔरसज्यौ त
हिरोसनहीपलएकलज्यौ॥२३॥ पुनिकैग
रुपुत्रभज्यौंतवही॥ वहुपारथ्थरोसकस्यौ
तवही॥ तिहिजाईलयौनहिमाजिसक्यौ
अतिव्याकुलकैपथरायथक्यौ॥२४॥ अर्जु
नजोजनचारिपरा॥ गुरसुतलीनौजाई॥ आ
न्यौनहीउवारतिनि॥ फिरयोसूरसमूहहा
ई॥२५॥ उपज्यौ अद्भुतजुद्धतह॥ कोकवि
सकैवषांनि॥ सरईसरनमछ्याईकै थकै
सूरनहीपांनि॥२६॥ काटततदोउपरसपर
वांनसमूहअनेक॥ एककयोममेएकध ॥८०

र॥ करनिकरतहेएक॥२७॥ चौपई॥ हार
नमांनतदोउबीर॥ दोउसमरबलीरनधी
र॥ एकसीगुरपैविद्यापाई॥ ब्योमथली।
बानिसौछाई॥२८॥ दोउरनकोंतबअ
तिबेढ॥ एकहिगुरपैविद्यापढे॥ ब्रह्मअ
स्त्रकरपारथलीनौं॥ बहुरोएमुततोजि
तकीनौं॥२९॥ उपजीअग्निदुहूनतैंभारी
त्रिभुवनकंपेनरअरुनारी॥ हाहासबद
सकलथलभयौ॥ महातापसुरअसुरनठ
यो॥३०॥ सोरठा॥ आकंप्योसुरराजदेवन
वहुआतंकउर॥ प्रलयहोतहैआजुइहवि
धिजगजनउच्चरत॥३१॥ दोहा॥ ब्रह्मबां
नकौंपथ्यकोरनमेनिर्फलजाय॥ सीसफो
रिकेंमनलईतबदीनौमुकराय॥३२॥ ग
र्भउतराकोहन्यौ॥ गुरसुतकेसंधान॥ भयो

विजे०
॥१८१॥

म्रतकसुततिहिसमें॥सबकुलदुष्यनिधां
न॥३३॥कह्यअनुयहसुतहैमौंजीयो॥भ
योपरीतातनांम॥चलेपष्ष्यग्रहकोतबे
रहितभयोसंग्राम॥३४॥चोपई॥चलित।
हस्तनापुरसबआये॥नृपधृतराष्ट्रतबैस
मझाये॥भांतिभांतिविनयोकरजोरि॥निमि
टैहोनीकियंकरोरि॥भयेसुध्धपांनीतिन
दयो॥काजकर्मक्रतसबहीकियो॥रुदन
करैकौरवकीनारी॥दुष्यदवागनितपरि
जारि॥३५॥तबभीषमसबत्रियासमझाई
होईरचेजोत्रिभवनराई॥पंडपुत्रसबपांस
बुलाए॥दिनप्रतिराजनीतिसमझाय॥३७
भीषम०॥सवैया॥कोधनध्यानकरेंाक
वहंनमतोकहेंसूढमसोंकरियेजू॥मि
त्रनकोअपमानरचेनदयाउरसत्रुनिकी ॥८१

धरियेजू ॥ छत्रसदापरस्वारथकीजिये
लोकअलोकनितेडरियेजू ॥ होहुहठि
नाछलीनरनाथन ॥ चित्तकहूंद्विजकोह
रियेजू ॥ ३७ ॥ छप्पे ॥ दयाराखियेचित्त भू
लिकैनुहीननकरिये ॥ चुगलचोरकीसीं
हचित्तमेराकनधरिए ॥ सदारछियेना
हिसरनसरनागतआवहि ॥ भूलिहुचि
त्तप्रवीननहीकातरतलावहि ॥ त्रिया
काजद्विजगायकेनिजकाजनिसबपरि
हरत ॥ कबिछत्रचलतइहिरीतिजेसु
न्यतामहिमंडलकरत ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ वि
रदबडाईपाइकै ॥ गर्बनकीजियचित्त
नविसारहहुहरिकोंहियें ॥ विसरावोजि
नमित्त ॥ ४० ॥ राजनीतितमसवकछोभां

विजै०
॥१८२॥

त्तिभांत्तिसमझाइ॥ छत्रकृपाकरिमक्ति
वसि॥ श्रीहरिपदकुंचआइ॥ ४१॥ भीषमउ ०॥
दोहा॥ सकलभईमनकामना॥ कलमस
सबैनसाइ॥ अंतअवस्थामेंसुषद॥ श्री
हरिदरसनपाइ॥ ४२॥ सवैया॥ लाजसदा
विरदावलीकी॥ कविछत्रसदाजनकोसु
षकारी॥ यांवनेचक्रगहेकरकीवह॥ बां
निकहूंबिसरैनविसारि॥ केहरिउत्तस्यो
गिरितें॥ अवलोकतहीजिमिकुंजरमारी
वेदकीकांनिनिसाईतज्यों॥ जतराषिक्र
पानिधिपैजहमारी॥ ४३॥ दोहा॥ करीवं
दनाकृष्णकीभीषमबुद्धिनिधांन॥ प्रांन
तजेभीषमतबै॥ उत्तरआएभांन॥ ४४॥ इ
ति श्रीमहाभारतेपुराणविजयमुक्तावली ॥८

कविचग विर चितायांरा जाउयै
धनसंमोहनंभाजायुधिष्ठिरविजयनर्मे
॥५२॥ दोहा ॥ तवैराज अभिषेक करि
नृपजुधिष्ठिर आप ॥ बैठौ अनुकुलि पाटपर
बाढ्यौ अमितप्रताप ॥१॥ करतनिकंटक
राजधर ॥ नासेसत्रुसमूल ॥ छत्रसकलमनि
के हिये ॥ तनमनमैबाढीफूल ॥२॥ दंडक
कर्मजेकेकर्मजेते ॥ मिटेहै अधर्मसबै भूत
लसफलधर्मसरसाययतुहै ॥ ठौरठौरदांन
सनमांनघनेविप्रनिके ॥ आनंदनिधानमो
नगाययतुहै ॥ जत्रतत्रछत्रकवि ॥ कोऊ
नहीसत्रुरह्यौ ॥ अस्त्रछाडिछांडिसोन ऽ
टुटपाईयतुहै ॥ ३ ॥ भूपतिजुधिष्ठिरकेरा
जमेसुचैनौंजगमेटिकैंअससत्रुसत्रुधराछा

विजे० ॥१८३॥

इयनुहै॥३॥ दोहा॥ आरिबरनतेसब महं
परनियरतनहीकोइ॥ परद्रोहीनहीकु
तघन॥ अजसनकाहूहोय॥४॥ भुजंग
प्रयात॥ दरिद्रैदरिद्रीअधर्मैअधर्मी
महासाकुमाकीकुकर्मैकुकर्मी
लसेइन्द्रकीसीपुरीराजधानी॥ सबैसम्प
नीकेमहादुष्पदानी॥५॥ सुहाएअटादेषि
येधांमधांमां॥ पुरस्त्री विराजैमनोकामबा
मां॥ कहांलोकहौतापुरीकीनिकाइ
चहूंवोरदीषमहाघोरषाइ॥६॥ सबैबाग
फूलेफलेचित्रमोहै॥ मनोतलताकल्पकी
छत्रसोहै॥ तहांधांमहेनीरसंयुक्तअसे
मनोदेवदेवसकेसप्रजैसे॥७॥ छहोकाल
केवृक्षफूलेफलेहै॥ तहांकोकिलाआदि
पंछिमलेहै॥ कहांलोबषांनोमहासोभनी

॥८३

की ॥ तहांसोकसंकानसेंसर्वजीकी
८ ॥ दो० ॥ धर्मसुवनभूपतिवि[illegible]गे
वंधवच्यारि ॥ सेवतमनवचकर्मसौं स
कतनआपुसडारि ॥ ९ ॥ गीतिका ॥ गो
तघाउ उविचारिकैं ॥ रिषिराजतहांबो
लेघनैं ॥ मासरि विदुरबासरिषि ॥ रिषि
राजजेतिककोगनैं ॥ जगपतहे हयमेध
कीनौं ॥ सर्वविधिन वनाईकैं ॥ पथ्थले
चतुरंगसेना ॥ भूमिजीतिजायकैं ॥ १०
दोहा ॥ आयोदिसिदिसिजीतिकै ॥ आ
ओवा।जीधांम पूरनकीनेजगपतव
सबसुपमनकाम ॥ ११ ॥ चौ० ॥ जगपसि
तघोहुरसुरिनीर ॥ धर्मधुरंधरगुनगंभी
र ॥ समदेरिषीजेआयेभूप ॥ भूपतिपर

बिजै
॥१६५॥

रबसमअनूप॥१२॥ जितीकुंतीकौरव
कीनारी॥ ग्रसीसकलदुष्पनसौंभारी ते
सबब्यासमहारिषीराई॥ लीनीअपनैंपा
सबुलाई॥१३॥ दो० मायाबीतिनकौं
पुरुषदीनैंरिषीदरसाय॥ पतिलहिसब
आनंदजुत॥ पगनपरीसबजाई॥१४॥ ध
सीसुरसरीकेसलीलभईसुअंतरध्यांन
कैहैसोईजोकछू रचिराषीभगवांन १५
दोहा॥ रहेतहांध्रतराष्ट्रुरु गंधारिसंग
नारि॥ बकुंतबिसूरेरैंनिदिन॥ सुतकौसो
कबिचारि॥१६॥ राकछत्रमहीभोगई
नृपजुधिष्टिरराई॥ रांमचंद्रज्यौंअवधि
मे दिसिदिसिबढ्योप्रताप॥१७॥ निसि
दिनसेवामातकी करैनसासनभंग अ

आग्याकारीसर्वदा॥ वाढ़ोअंध्रवंस
॥॥१८॥ वृद्धिभईससिवंसकी॥ अरुसाह
नभंडार॥ वाढ्यौछत्रविशेषिकें॥ अरुकुल
वढुपरिवार॥१९॥ चौ॥ करिभारथउवरेद
श्जनें॥ अवकवितिनकेनामभनें॥ पां
चौपंडुवपुत्रवलवांन॥ छठयेसोभित
श्रीभगवान॥२०॥ करनपुत्रसोभितव्र
षकेत॥ मेघवरनवहुविधिसुषदेत॥ क
तवर्मा जादोवलिवंड॥ द्रोणपुत्रसंग्राम
अषंड॥॥२१॥ दोहा॥ उवरेभारथमेंइते
औररह्यौनहीकोई॥ जोईचतुराननरची
सोईसोईहोई॥२२॥ सोरठा॥ करनपुत्र
व्रषकेतसुतसरवरिभूपतिगनें॥ करि॥
कुंतीवहुदेत॥ जानततोकहप्रांनसम

२३॥ छपै॥ नित्य नित्य रिषी राज सूरि
भोजन तहां पावहि॥ षटदरसन नित वा
स सकल मंगल उपजावहि॥ सपतदीप
नवखंड सकल बंदी गुन गावहि॥ हरषी
हरषी मणि मुक्त हुरद बाजी गन पावहि
कविछत्र सकल भुवपति जपत दीन नर
कोउ न दिषिये॥ सुक सूपज्यु धिष्ठिर राजा
मैं सुथल थल आनंद लिषिये॥ २४॥ दो
हा॥ द्वादस वरषैं बन रहे॥ त्रयोदशे अ
ग्यात॥ मारि कीचक निज सल्यो हर्ष
वंत है भ्रात॥ २५॥ सब कौरव परिनाखु
त मारे जमज गजीति॥ रहत हस्तनापुर
नृपति॥ त्रासो अनुज समीति॥ २६॥ छ

छै ॥ फूलेद्रोनगंगेवसकलकौरवनरसा
उे ॥ बाल्हिकयद्रथभयउलहरिरविनं नरा
उे ॥ मच्छकच्छजलजंतु ॥ सल्यतहांभयेउ
सुसर्मा ॥ भूरिश्रवाभगदंतभयौतहैग्राह
सुसर्मा ॥ करिनांवधनंजयधीरकौं ॥ त्रिभु
वनपतिषेवटभयेऊ ॥ जसतिलकधर्मसु
तसीसकरिसुरनसरिताइमितरिगगये
उे ॥ २७ ॥ दोहा ॥ जीत्यौभारथकल्हमत
तिन्हहीसहाईपाइ ॥ एकछत्रमहीभोगई
छत्रजुधिष्टिरराई ॥ २८ ॥ भारथसुनिभा
षाकियो ॥ छत्रसुबुधिहिपाई ॥ कहतसु
ततपातकनसत ॥ अघदीर्घदुषजात २९
च्यारिबरनमैंसोसुनैं ॥ तरुनीपुरुषजोको
ई ॥ प्रगटैहरिकीभक्तिउर ॥ मोचनअघके

विजे०
॥१८६

होई ॥३० ॥सवैया॥ जोफलतीरथजात
कियेअरुजोफलषोडशदांनदीयेतें जो
फलसंगमैंनेमरचे ॥ अरुजोफलहैस
तजग्यकीयेतें ॥ ग्यानकथामिसुनैंफ
लजोकवि ॥ छत्रवटेबहुवृद्धिहियेतें
जोफलरुद्रप्रसन्नभयें ॥ फलसोईजुधि।
ष्ठिरनांवलियेंतें ॥३१॥ सवतसाधकसि
द्धनकों ॥ अरुईसप्रसन्नभयेवरपायें
तीरथराजप्रयागगयें ॥ अरुसागरसंग
मैंगंगअन्हायें ॥ जोनरवद्रिकाश्रमं म
धेरें अरुपर्वतराजचढेसिरनाये ॥ सो
इहभारथग्रंथकीछाया ॥ सुनेनरहो
तपवित्रसुनांयें ॥३२॥ दोहा ॥ जोइह
भाषाकविसुकवि ॥ लीजोचूकसुधा

॥८६

रि श्रीहरिके परतापते किये ग्रंथ उर
धारि ३३ नांम विजयमुक्तावली वि
जय जुद्धमें होत अरिगनवांकैं अयमु
जकदेन होत उदोत ३४ सदा लहमार
थ्य की संख्या कहियत ब्यास हरिके
प[illegible]ापते कौरव भये निरास जी
नकैं सदा स[illegible]है निसि दिन श्रीगो
विंद जि[illegible]करि सकत है तत
छिन [illegible]निकंद ३५ छत्र कहत क
र जोरिकैं हौं सुकबिनकौं दास भार
थकी भाषा करी बचन सुनै जो ब्यास
३६ ॥इति श्रीमहाभारतपुराणे विज
यमुक्तावली कविछत्रविरचितायां ना
म तियालीसमोध्याय:॥४२ श्रीरस्तु
संवत् १८८२ मासोत्तमेमासे कार्तिकमा

॥विनै०॥ ॥१८७॥

सेष्तुमेश्या...यहेस्तिथौ॥१३॥बुधवासरे
लीखितमीश्रचुरामणीन॥पठनार्थीक
वरजीश्री[redacted]पठनार्थे शुभं
याह्निसंपुस्तकं दृष्ट्वा॥तादृशं लिखितं मा
या यदिशुद्धमशुद्धंवा॥ममदोषोन दीय
ते॥१॥जलेर क्षेस्थलेरक्षे॥रक्षेसिथल
बंधनात्॥मुरखहस्तेनदातव्यं॥एवंव
दतिपुस्तकं॥२॥कर्कटग्रीवानेनमु
ख॥सबद्धणसहे सुज्ञांन॥लिष्योजात
श्रतिकष्टसो सठज्ञानतच्यासान॥३॥
मोजपुरमध्येपुस्तकलिखितं॥श्रीम।
लीधरमातमाकरयरलछमनजीकी॥
श्री॥श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री॥
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री ॥१८७

[illegible]

رامائن

بقلم [illegible]

